# ढेई गुफु



# देई-जुल्फू

[ कुल्लू के सिराज क्षेत्र में प्रचलित 'दशी' लोक काव्य के आधार पर विरचित ]

मेहर चन्द 'सुमन'

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी
परीमहल, शिमला-९

प्रकाशक :
हरि चन्द पराशर
सचिव,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी, शिमला-६



प्रथम संस्करण
मई, 1978
वैशाख, १६००
प्रतियां : १०००

**Dei–Zulfu**
**A Folk Poetry**
Writer : **Mehar Chand 'Suman'**

मूल्य : छः रुपये

मुद्रक :
नवीन प्रिंटिंग प्रेस
बिलासपुर [हि०प्र०]

# भूमिका

तेरी तैंही जुल्फू, भागसू काढ़ू पीला।
घरें बेचू घरची, छापरें बेचू शीला।

'देई जुल्फू' अकादमी की ग्रन्थमाला में ग्यारहवां पुष्प है। यह अपने ढंग का है वस्तु में भी और सुगन्धि में भी। पहाड़ में प्यार घटनाओं के गीत तो एक सामान्य बात है, लेकिन अलग-अलग अवसरों और घटनाओं में अभिव्यक्त अनुभूतियों को एक कथानक में पिरो देना एक विशेष बात है।

कुल्लू के ओटर सिराज का मेहर चन्द सुमन आन्नी बस दुर्घटना के फलस्वरूप अब स्वर्गीय हैं। अकादमी ने अपनी योजना "लेखकों को पुस्तक प्रकाशनार्थ वितीय सहायता" के अधीन स्वर्गीय मेहर चन्द सुमन को उनकी इस पुस्तक की पाण्डु-लिपी पर कुछ वितीय सहायता स्वीकृत की थी, स्वर्ग-वास हो जाने के कारण वे इस का लाभ नहीं उठा सके। अकादमी ने निर्णय किया कि इस अनुमोदित हस्तलेख को पुस्तकाकार में स्वयं प्रकाशित कर दिया जाए। अतः यह पुस्तक पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

ओटर सिराज में 'दशी' गीत प्रसिद्ध है। कुछ-कुछ उसी प्रकार जैसे सोलन और बिलासपुर में 'गंगी'। भावना स्तर पर दशी और गंगी में बहुत अन्तर है। दशी में संवेदनात्मकता अधिक है इन्द्रियलोलुपता कम।

लेखक के अनुसार दशी ब्राह्मण कन्या है। उसका पिता सारे परगने में माननीय है। उसके भाई हृष्ट-पुष्ट और सदाचारी हैं। जुल्फू राणा खानदान से सम्बन्धित युवक है, बनठन कर बांका बनकर घूमना-फिरना उसका स्वभाव है। दशी की रूप-राशि जुल्फू को चकित कर देती है। वह सोचता है कि ऐसे रूप की रचना करना ईश्वर के लिए वैसा ही कठिन कार्य रहा होगा जैसा आकाश के तारों को गिनना मनुष्य के लिए एक असम्भव कार्य है। खेत के छोटे तालाब में खिला गुलाब का फूल देखकर किसी के मन में तरंग उठ सकती है कि हम फूल को तोड़ कर अपने घर ले आएं क्योंकि इस का मोह छोड़ना असम्भव है। जुल्फू के मन में दशी को देख कर ऐसा ही विचार आया। जुल्फू अपनी दशी के लिए जोगी-विरागी साधु बन कर प्रत्येक असम्भव कार्य करने के लिए भी तैयार है। ब्राह्मण कन्या दशी जुल्फू राणा को देवी की तरह पावन और शुद्ध दीख पड़ी। इस सम्बन्ध में संकलित लामणें हृदय ग्राही हैं। कुछ का भावार्थ सन्दर्भित करना अशिष्टता नहीं होगी। ठण्डे पानी के झरने के स्रोत के पास वेसु नाम का पेड़ होता है और प्रेम के पास विश्वास। यकीन का नाम ही खुदा है और यकीन का नाम ही लैला था। विश्वास और वचन दो ही तट हैं प्रेम की सरिता के। झूठे वचन देने वाला व्यक्ति बिना बटन की कमीज की तरह लुच पुचा है।

बसन्त ऋतु आई है। दशी और जुल्फू अपने-अपने गांवों में हैं। पीले वस्त्र चढ़ता यौवन, रुचिर कान्ति दोनों को अपने अपने यहां चर्चा का विषय बनाते हैं। मां के आगे बेटी स्वतन्त्र रह कर भी सुरक्षित रहती है।

"मां आगे दशीए भला बि मांछली फिरा"

माता पिता का स्नेह कन्या के लिए वैसे ही है जैसे दीपक के लिए तेल। दीप-शिखा तेल के प्रभाव से उज्जवल होती है, और कन्या माता-पिता के स्नेह से पावन, स्वतंत्र रहती हुई भी सुरक्षित। ठण्डे पानी को घूंट-घूंट करके पिया जाता है, इसी तरह प्यार का साक्षात्कार भी धीरे-धीरे किया जाता है। दशी ने जुल्फू को सलाह दी कि मेरे माता-पिता से बात-चीत कर लो, क्योंकि:—

**"कन्या हुंदी शोरी, आपो कोए ने ढूंढदी वरा।"**

कन्या को किशोर अवस्था में ही अपना दूल्हा स्वयं नहीं ढूंढना चाहिए। इतना ही नहीं, दशी तो जुल्फू को यह भी सलाह देती है कि मेरे साथ न तो रास्ते में कभी बोलना और न ही साथ चलने का प्रयत्न करना।

दोनों का विधिवत विवाह हुआ और विवाह के पश्चात् दशी का नाम देई रखा गया। 'देई' शब्द का सांस्कृतिक महत्व है। विवाहिता स्त्री के लिए यह आदर सूचक शब्द है। परकीया जब स्वकीया हो जाती है, पराई जब अपनी हो जाती है तो प्यार का रूप-रंग बदल जाता है। चोरी का गुड़ क्यों मीठा लगता है, घर में अपनी नार खांड के बूरे की तरह भी मीठी और सुकोमल हो, तो भी मानवीय मानस खुरदुरे और गाली-गलोच बकने वालों की ओर झुकता चला जाता है। मानसिक साहसिकता दिखाने की इच्छा से भद्रों में भी ऐसी अभद्रता दीखती है।

दोनों के प्यार के मध्य में कई बार शंका का साँप रेंगता है। ऐसे में नारी को सर्वाधिक अपना भाई याद आता है, भाई के गुणों का बखान करके वह सान्त्वना महसूसती है। रई के पेड़ की तरह लम्बी अपनी चिन्ता को माता-पिता की पहले की नसीहतों के प्रकाश से लघु बनाती है। शंकाओं से ग्रस्त उदासीन देई को देख कर जुल्फू कहता है कि तेरा और मेरा सम्बन्ध पहाड़ की धार पर बहने वाली पानी की कूल्ह की तरह है उसके सूखने से यदि तेरे जीवन का खेत सूखेगा तो मेरे दिल के बाग की सभी आशाओं के फूल सूख जाएंगे। काल की गति के साथ भावनाओं में जो अन्तर आता रहता है, उसकी ओर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए। प्रेम का शुद्ध भाव शरीर परक भावनाओं से विचलित नहीं होता। देई भी महसूस करती है कि जैसे वर्षा के कारण कच्चे पहाड़ और कच्ची चट्टानें गिर जाती हैं, वैसे ही काल जब प्यार की परीक्षा लेने के लिए कठोर स्थितियां उत्पन्न करता है तो कच्ची और कृत्रिम भावनाएं गिर जाती हैं। पिता के देश की सहेलियां और संगी दूर छूट जाते हैं, अपने जीवन का सारा बोझ खुद ही उठाना पड़ता है। अतः वह 'हंबखा' 'अहम् बलवान अस्मि' कहकर अपनी चेतना को समेट कर महसूस करती है।

**झरी शोटणी झाखड़,**
**शाह डाणू पात्थरा जेह।**

चिन्ता को झाड़-झंखाड़ वाले जंगल में फेंक दो और कठिनाइयों का मुकाबला करने के लिए पत्थर दिल बनकर खड़े हो जाओ, कठिनाइयों से गुजर जाने के लिए आत्म-विश्वास स्वयं पैदा हो जाएगा।

प्यार के सम्बन्धों में अक्सर ऐसा होता है कि कारण कहीं होता है तो कार्य कहीं, नाराजगी किसी के साथ और क्रोध किसी और पर।

आग शिमला में लगे तो धूआं सोलह मील दूर फागू में। इसलिए प्यार के गम और दर्द को समेट कर छाती में ही दबोचकर रख लेना चाहिए, इससे कोई मरता हुआ नहीं सुना है।

**आग जली शिमले, फागूए निकल धूआं,**
**गम्म मेरी छातीए, गम्मीए कोए न मुआ।**

कहावत है कि आंगन में चम्पा फूल का पौधा मत लगाओ, इस फूल की अच्छी तीखी सुगन्ध होती है, भौरे फूल का स्पर्श किए बिना ही मर जाते हैं। धर्म और धैर्य का प्रतीक पीपल का पेड़ लगाना चाहिए। वासना घातक है और धैर्य धारक है; —

**चाम्बश्र ने रोहणू, चाम्बे काया चबीना।**
**पीपले रोहे बूटी तू, करे मेरी गला रा यकीना।**

किसान बड़ी मेहनत से फलों वाले पेड़ उगाता है, उनकी रखवाली करके उन्हें बड़ा करता है, जब उन पर फल लगते हैं तो खाने के लिए कोई आ जाता है। स्रष्टा ब्रह्मा भी अपनी सृष्टि का भोग स्वयं नहीं करता। जगती की यही रीत है, यही ढंग है संसार का। इस सनातन सत्य को लोक मानस ने अपनी पदावली मे कैसे साकार किया है।

**'दाख पाकी शांघटी, केले पाकुई रसै।**
**'जेबे हुई खाणा लै, तेबें पड़ी लोगूए वशै॥**

सेवाभाव में नित सन्यासी बने ग्रामीण-वासी श्रम और तप से धरती के उर का मंथन करते हैं। मेहनत ही इनके दिल को चैन देती है और बुद्धि को मंगलमय करती है। इस बूढ़े भारत की युग-युग की परम्परा इन्हीं ग्रामवासियों की प्रिय थाती है। ग्रामीण साहित्य संकलन वास्तव में क्षेत्रीय अध्ययनों के सोपान की प्रथम सीढ़ी हैं।

मेहर चन्द सुमन ने दशी लोक-गीत को देई-जुल्फू के कथाकाव्य रूप में पिरो कर एक नई दिशा की ओर संकेत किया है। विभिन्न जनपदों मे बिखरे पड़े लोक-गीतों के चरणों को हम असम्बद्ध पद्यांश समझते हैं परन्तु वास्तव में उनमें अभिव्यक्त मनो-दशाओं की प्रेरक घटनाओं में साम्य है। उस साम्य की खोज और उसकी विरचना ग्रामगीत संकलक को कलात्मक स्तर पर लाकर साहित्यकार बना देती है। सुमन की यह विशेषता श्लाघ्य है।

अकादमी के कार्य-क्रमों के पीछे अकादमी के अध्यक्ष श्री दौलत राम चौहान शिक्षा मंत्री हिमाचल प्रदेश की प्रबुद्ध प्रेरणा है, सदस्यों का मार्ग-दर्शन है और स्टाफ का श्रम है। यह सहज सहयोग वास्तव में बहिरंतर के भाव बिम्ब को आकार देता है। यदि 'देई-जुल्फू' पाठकों के दिलों में ग्राम्य-गीतों के प्रति क्रियाशील रुचि जागृत करने में तनिक भी सहायक हुआ, तो स्वर्गीय मेहर चन्द सुमन की साधना सफल होगी।

हरि चन्द पराशर,
सचिव,
हि०क०सं०भा० अकादमी
परीमहल, शिमला - ३

28 मार्च, 1978

# दुई बोल

बेहि ले संगिआ तिओ मे,
सुणागा सुमन पढाले।
बमागे हुल मशाल जगागे,
बिलडू हल होण चढाके।

हिमाचल सरकारा र बहु-बहु धन्यावाद सा कि ऐबा सरकारं म्हाचला री 35 लाख जनता ले मऊआ रास्ता खोलिआ हिमाचला री संस्कृति हिमाचली भाषा बो संजोणए योजना बणाई। भूं ता भाई ठाकुर मोलू राम जी रा धन्यावाद करणू चाहू। जुगिए मूंबे पहाड़ी भाषा बो लिखणं लं प्रेरणा दिनी। ऐते तं हीं मे ज दुजी कताब लिखी हेरी। ज सारी 'कताब पिनी धन्ना रा खजाना' में बड़ी कोशिशा सोंगे लिखी। मे पहाड़ी भाषा बी लिखण ऐ कोशिश की। बाल्ू बाला में एबा कताबा बो किजी गोल्ल री कोमी ने झाही ऐभी। ऐबा पोढ़ी संगे तुसा मूं बे जरुर बोलणा कि भाई सुमन साहिबा सा रोणे बो आदत आसा। पर भाई मैं समाजा मझें जुण-जुण गोला धपणी हाखी सोंगे भाली सेंई गोला में आपणी कताबा बी आणी। मेरी ऐंबी बड़ी भारी कोशिश आसा कि मेरी कविता रे पढ़ांश पढ़िया माहणू जरुर सोचणा ले मजबूर हुओ चाही मेरी ऐबा बो एक बहु लामी लड़ाई लागी नो आसा। जे बे भी में केभी आपणी कविता बहु लोगा रं हजूमा मांझे शणाऊई सा मुंबे सभीए बोलम कि मेरी कविता री भावना बिलकुल ठीक आसा। आजादी री में 1947 बो लरम हेरी केरी पर भाई स्वतन्त्रता बाद संगें हामा खूब लड़गू गआ त तिना संगे हामं भी ने लड़ं एथी। संसारा मांझं ऐण्डी बड़े-बड़े विचारका सी कि भाई जं हामं आपणी बुराई संगे ने एथी ता हामा बराबरी गुलाम कोए भी नहीं एथी। ऐजं हु ता मेरी अर्ज सा कि :—

जाग ला मेरं संगिआ,
शोभला तेरा देशा।
छंल बण ला संगिआ,
खेती रा तेरा पेशा॥
जिमी भी खटा ढबूए बाटा,
बोहरे रंगा हाथा।
साईसे तरीकं बो हल् चलाऊआ,
उजला केरा माथा॥

मेहर सन्त सुमन
भाषाध्यापक,
राजकीय उच्च विद्यालय,
बलाग (कुल्लू) [हि॰प्र॰]

# देई जुल्फू

## प्रथम खण्ड

बाश माता कुफूआ, खोला चिमए शाणी।
देश शुणा परजा, बेहड़े शुणा राजए राणी।

भाव :—बसन्त के आने पर लोग बहुत खुश होते हैं। बसन्त के समय एक नया पक्षी कुफू आता है। अतः इस गीत में दशी कन्या (जो एक गांव की बलिका है) ने कहा है कि जैसे ही यह पक्षी अपने शब्द से वातावरण को गुंजायमान करता है तो सभी लोग चाहे राजा हो चाहे प्रजा हो बड़े आनन्द से सुनते हैं। इसके शब्द करने पर बसन्त के आगमन का ज्ञान सभी को हो जाता है। इस प्रकार सभी लोग अपने राजा सहित बसन्त गीत गाना प्रारम्भ कर देते हैं।

मा महिने चेतरा, ऋत बशाके आई।
माट बांचा पतरी, छेऊड़ी रांगा भीता।

भाव :—जैसे ही चैत का महीना समाप्त हो जाता है तो वैशाख महीने के आरम्भ होने पर बसन्त ऋतु का आगमन होता है। इसी प्रकार नया सम्बत् जो नए वर्ष का आदि होता है, मनाया जाता है। अतः घरों में पण्डित लोग आते हैं और जन्त्री सुनाते हैं। घर की नारियां घर की दिवारों को लिपाई आदि करके साफ कर देती हैं।

**फूली बराहटी, कैंमटी पड़ी डोलैं।**
**जिऊ बछेलूए, थारे काकड़े बोलै।**

भाव :—बसन्त के आगमन के कारण बागों में बहार आती है। वन में टेसू के फूल और बागों में नारंगी की कलियां खिल उठती हैं। कितनी प्यारी और मनमोहक इनकी कलियां और फूल लगते हैं। वातावरण अति आकर्षक बन जाता है। दो मित्रों की मित्रता भी ऐसी ही सुहावनी होती है, परन्तु यदि कड़वे शब्द का मिश्रण आ जाए तो दिल को दिल से नफरत हो जाती है। इस प्रकार दशी कन्या अपनी सहेली को कहती है कि कड़वे वचनों से मित्रता टूट जाती है।

**फिरणू होर बैंहने, जौए लागी जलाई।**
**कुई कुजए वासना, किदा का दशीए आई।**

भाव :—वैशाख का महीना आ गया। फिरणू और वैंहना सतलुज नदी के किनारे दो उपजाऊ गांव हैं। वहां पर गेहूं और जौ की कटाई आरम्भ हो गई। दशी कन्या कहती है कि कुई और कुजा जो वन के सुगन्धित फूल हैं खिल चुके हैं। अतः हमारा गांव जो हिमाचल में है इन फूलों की सुगन्ध से शोभायमान तथा आकर्षक प्रतीत हो रहा है।

**जौ पाके जहलं, गेहूं पाकै बघोलं।**
**ऐणें वांके नगरू, एथ वसीए थोलं।**

भाव :—दशी कन्या कहती है कि वसन्त आ गया है। गेहूं और जौ की खेती लहलहा रही है। जौ और गेहूं के खेत में गेहूं पक गए हैं। कितनी सुन्दर मेरी नगरी लग रही है। इस प्रकार दशी कन्या कहती है कि मेरा गांव सुन्दरता का भण्डार बन गया है, परन्तु यहां पर रहने वाले निवासी बहुत थोड़े हैं।

**दशी धिआलिए, चौऊ भाईए जोड़ी।**
**इजी बोले मेरी लै, बान्ही डाए गाचीए मोड़ी।**

भाव :—दशी कन्या अपने माता पिता के संरक्षण तथा सम्पर्क में बहुत प्रसन्न है। अतः वह अपने घर में इस गीत को गाती हुई कहती है कि मैं एक छोटी सी गुड़िया की भांति सुन्दर लड़की हूं। मेरे चार भाई जो बहुत बहादुर हैं मुझे अति प्रिय हैं। वह माता को कह रही है कि मेरा प्यारा तोफा मोड़ी (गेहूं के भूने हुए दाने) मुझे गाची (कमर पटका) में बांध कर रखना।

**माघे खणी बासती, फागणे लागी लुआई।**
**ना महिने चेतरा, ऋत वसन्ते आई।**

**भाव :**—माघ के महीने के आने पर लोग खुदाई के कार्य में व्यस्त रहते हैं। इसके पश्चात फाल्गुण में नया घास उग आता है। अतः लोग पशु चारा इकट्ठा करना छोड़ देते हैं। चैत के महीने में लोग अधिकतर तंग होते हैं। इस प्रकार इस पद्यांश में दशी कन्या भगवान से प्रार्थना करती है कि, "ऐ चैत के महीने, जल्दी समाप्त हो जा ताकि शीघ्रातिशीघ्र वसन्त का आगमन हो"।

**बाश माता कुफूआ, फीमा फीमा री बागे।**
**तेरी मेरी पंचायता, राजे धर्मा आगे।**

**भाव :**—बसन्त ऋतु आ गई है। बसन्त की बहार के कारण दशी कन्या के गांव का वातावरण अति लुभायमान है। पक्षी कुफू भी डाली-२ पर जाकर, खेतों में, बागों में शब्द करने लग गया है। दशी कन्या कहती है कि हे कुफू तू कितना भोला-भाला और पाप-हीन पक्षी है। अतः वह कहती है, "हे पक्षी मैं भी तेरी तरह भोली भाली और पाप-हीन कन्या हूं। तेरे और मेरे इस भोलेपन का रिकार्ड (लेखा) राजा धर्म की पंचायत में अवश्य ही होगा"।

**कुई दे फूलणे, नऊणा भीतरे बाई।**
**भाई देआ चुंघिया, भाभी देआ टोपूए लाई।**

**भाव :**—दशी कन्या अपने भाई के प्रति अगाध प्रेम प्रकट करती है। बसन्त के आने पर पानी के तालाब के किनारे कुई का फूल खिलेगा। मेरा प्यारा भाई मुझे वन-फूल (कुई) चुन कर लाएगा। मैं अपनी भाभी को कहूंगी कि तू इसे मेरी टोपी में लगा दे। इस प्रकार भाभी द्वारा फूल लगाने पर मैं सौंदर्य को प्राप्त करूंगी। इस प्रकार यह कुई का फूल मेरे प्रति भाई और भाभी के प्रेम का अमर प्रतीक होगा।

**दोतकी दशीए तू, आसा तूड़ बलांदी।**
**बेड़की दशीए तू, बाले शाहटू खांदी।**

**भाव :**—बसन्त हिम धाम में पूरे यौवन पर है। इस पद्यांश में कवि का भाव है कि हे बसन्त तू कितना प्यारा है। प्रातः जब धूप आती है तो बागों की बहार अति आकर्षक और मन मोहक होती है। जब सायंकाल होता है तो मानों वह किसी का हृदय चुरा कर ले गया हो। इसी प्रकार बसन्त की बहार के कारण दशी कन्या की शारीरिक वृद्धि हो रही है। वह दिन दुगनी रात चौगुनी हृष्ट पुष्ट हो रही है और ब्याह के योग्य हो गई है।

दश ब्राह्मणा, सात सकूड़ा री जाई।
आठ शाठ पेऊको, भीम सरीखे भाई।

भाव :—दशी कन्या इस लोक गीत में अपने कुल की प्रशंसा करती है। वह अपने कुलाचार का सिंहावलोकन करके फूली नहीं समाती। वह कहती है, "मैं अच्छे ब्राह्मण कुल की लड़की हूं। मेरे भाई भीम की भांति बहादुर और हृष्ट पुष्ट हैं। मेरे पिता सारे परगने में माननीय है"।

पारीए सेरी दी, कुण घणंरी दूणा।
पीऊणे घूण्डूए, नाऊं ने आपणो शूणा।

भाव :—बसन्त ऋतु के कारण खेतों की छटा अति आकर्षक है। इसी वातावरण के अन्तर्गत दशी कन्या घास काटने का कार्य कर रही है। उसी गांव का एक वृद्ध पुरुष उसकी शोभा को देख कर चकित हो जाता है। अतः वह कहता है, "यह खेत में घास काटने वाली कौन भ्रमण करती हुई दिखाई दे रही है। इसने पीला दुपट्टा पहना है। सौन्दर्य अति आकर्षक है परन्तु यह अपना नाम नहीं बताती। इससे दशी कन्या की सुन्दरता का अनुमान लगाया जा सकता है"।

दोती ने सूतणू, दोती द्ररिद्रा लागा।
खले सूता दपहरे, घणी निन्द्रा लागा।

भाव :—दशी कन्या कहती है, "बसन्त का सुहावना मौसम है। प्रातः देर तक नहीं सोना चाहिए। इस से सारा दिन सुस्ती छाई रहती है। इस मौसम में शारीरिक वृद्धि होती है। यदि देर तक सोए रहेंगे तो आलस्य होगा। अतः प्रातः शीघ्र ही उठना चाहिए। दोपहर को कार्य के पश्चात सोना चाहिए। उस समय नींद अच्छी आती है।" ऐसा दशी कन्या का बहुमूल्य विचार है।

खलै दपहरे, आ दपहरी खांदे।
दूध नहीं घीनचा, शुकी जरोलिए छांदे।

भाव :—वैशाख का महीना है। बसन्त की बहार के साथ ही मनुष्य का काम भी पूरे यौवन पर है क्योंकि गांव में फसल की कटाई आरम्भ हो गई है। अतः दशी कन्या तथा गांव के अन्य व्यक्ति कार्य में अति व्यस्त हैं। कार्य करते हुए दोपहर का समय हो गया है सभी व्यक्ति भोजन पाने जा रहे हैं। अतः दशी कन्या अपनी सहेलियों को भोजन के लि आमन्त्रित कर रही है। निमन्त्रण देते हुए कहती है, 'दूध घी की आशा न करना क्योंकि वह नहीं है। यह निमन्त्रण तो केवल जौ की रोटियों का ही है।"

**फिले ने कुफूआ, ऐशकी बरशा बाश।**
**फिदी मारग्र हेलिए, कीदी देशा का नाश।**

भाव :—इस वर्ष दशी कन्या बड़ी आश्चर्य में डूबी है क्योंकि वह बसन्त की प्रतीक्षा कर रही है। न ही बसन्त आ रही है और न ही बसन्त में बोलने वाला कुफू पक्षी अपना शब्द कर रहा है। अतः वह असमंजस्य में पड़ी है। इसलिए वह इस पद्यांश में कहती है, "हे कुफू पक्षी तू इस वर्ष अपने शब्द से वातावरण को यौवन प्रदान क्यों नहीं कर रहा। इसका क्या कारण है ? क्या किसी शिकारी ने तुझे मारा है या इस देश को ही छोड़ कर कहीं चला गया है ?"

**ने मारग्र हेलिए, ने देशा का भागग्र।**
**ऋत ग्राई बछाऊली, चुनणा चुंगदग्र लागग्र।**

भाव :—जैसे ही दशी कन्या आश्चर्य सागर में डूबी हुई थी तो यकायक कुफू पक्षी यह बताने आ गया कि हे दशी कन्या तू आश्चर्य में क्यों डूबी है। मैं आ गया हूं और अपने साथ बसन्त की बहार को भी ले आया हूं। मैं देश को छोड़ कर नहीं गया था न ही मुझे किसी शिकारी ने मारा था परन्तु इस वर्ष बसन्त ऋतु कुछ देर से आई। अतः मैं भी न आ सका क्योंकि मैं भी अपने चोग को चुग रहा था।

**राची ने हांडणू, राची हांडदे चोरा।**
**दुई हांडे दपहरे, जैणे बाला रे मोरा।**

भाव :—दशी कन्या रात को कार्य करना या रात को भ्रमण करना घृणा की दृष्टि से देखती है। बल्कि दिन को जी तोड़ कर कार्य करना उसे अच्छा लगता है। इस सिद्धान्त पर उसका अगाध विश्वास है। अतः दशी कन्या इस पद्यांश में कहती है, "रात को नहीं चलना चाहिए क्योंकि रात को प्रायः चोर चला करते हैं। दिन दोपहर को चलना चाहिए जैसे कि दिन के समय में बड़े-२ खेतों में मोर मस्तानी चाल से चला करते हैं"।

**बागा दी मेरिए, कुई फूलुई जुई।**
**चुंगी आणे दशीए, इना मकटा दुई।**

भाव :—दशी कन्या कहती है कि बसन्त ने बागों और वनों को अपनी शोभा से शोभायमान कर दिया है। वन में कई प्रकार के फूल कुई और जुही जैसे फूल खिल चुके हैं। इसलिए दशी कन्या कहती है, "हे मेरी सखी मुझे यह फूल अति रुचिकर हैं। अतः मैं वन को जाऊंगी और दो कलियां फूल की चून कर लाऊंगी। हे सखी तू भी चल हम दोनों फूल चुन कर लायेंगी।

दुई-दुई मकटा, जंबी कीवली लाणे ।
एक लाणू टोपूए, दूजअ गाची र बाणे ।

भाव :—जैसे ही दशी कन्या बाग में पहुंची तो उसने दो कलियां जो अपने पूरे यौवन पर थी चुन लीं। इसके साथ ही वह सोचने लगी कि मैं इन फूल की कलियों से अपने आपको कैसे शृंगारित करूं। अतः उसने शीघ्र ही निर्णय कर लिया कि मैं एक फूल को टोपी में लगाऊंगी, दूसरा फूल कमर में साफे के साथ लगाऊंगी। इस प्रकार मैं आकर्षक सौंदर्य को उपलब्ध कर सकूंगी।

धंलै उडिया, छं नाई गाड़ा री गली ।
दूई हांडा बहणी, जंणी कुजे री कली ।

भाव :—दशी कन्या अपनी बहिन के साथ चल रही थी। दिन ढलने जा रहा था। वह अपनी बहिन के साथ चलने में अति आनन्द तथा गौरव अनुभव कर रही थी। अतः इस पद्यांश में वह अपने हृदय के उद्‌गारों को इस प्रकार निकाल रही है कि दिन ढल रहा है हम दोनों बहनें चल रही हैं। हमारे संग रहने के दिन भी समाप्ति की ओर जा रहे हैं। इस समय हम दोनों बहनें दो फूल की कलियों के समान शोभायमान हैं।

कुफू त कालरश्र, जबी ती ललरी दशी ।
धंली दगारणी, शीलै तंगलू बैशी ।

भाव :—बसन्त के समय कुफू पक्षी लोगों को बहुत प्यारा लगता है। लोग उसकी मधुर आवाज़ को सुनने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं। इसी प्रकार दशी कन्या भी सौन्दर्य तथा भोलेपन में कुफू पक्षी से कम नहीं है। अतः दशी कन्या कहती है कि जिस तरह कुफू पक्षी वसन्त के समय पेड़ों पर दिन गुज़ारता है उसी प्रकार हम भी ठण्डे बरामदे में बैठ कर बसन्त के दिनों को व्यतीत करेंगे।

जो पाकै जऊड़ी, गिहूं पाकूए सेरी ।
खोजी दे नारेश्रा, कुण भराऊजा तेरी ।

भाव :—दशी कन्या बसन्त के मौसम को देखती हुई उसका व्याख्यान इस पद्यांश में करती है। जौ और गेहूं की खेती अति शोभायमान प्रतीत हो रही हैं। खेतों में फसलें लहलहा रही हैं। अतः वह एक जाने पहचाने युवक से कहती है, "हे नर तू अपनी नव-विवाहित भाभी की बहुत प्रशंसा करता है। अतः मुझे भी उस भोली-भाली और सुन्दर सूरत से परिचित करवा दे।

**जो पाके जऊड़ी, गिहूं रातले कीशें ।**
**पाणी दे नारेआ, हामें बाता रे चीशें ।**

**भाव :**—बसन्त के महीने दशी कन्या कहीं सफर पर गई हुई थी। वह पहली दो पंक्तियों में पहले की भांति बसन्त दृश्य का वर्णन करती है। तत्पश्चात् चलते-चलते वह कहीं बैठ गई और किंचित प्यास अनुभव करने लगी। अतः वह वहां एक पुरुष से कहने लगी, "हे नर हमें प्यास लगी है। हम मुसाफिर हैं। आपका घर यहीं पर है। अतः आप हमें पानी पिला दो। आपका धर्म होगा।"

**खोई आगे कैमटी, कैमटी आगे बजीरा ।**
**मां आगे दशीए, जला दी मांछली फीरा ।**

**भाव :**—इस पद्यांश से लगता है कि दशी कन्या मां के सम्पर्क में स्वर्ग सौख्य अनुभव कर रही है। आंगन के पास नारंगी का पेड़ और उसके साथ खट्टे का पेड़ कितना दर्शनीय तथा सुन्दर है। उसी प्रकार दशी कन्या अपनी मां के सम्पर्क में सौंदर्य अनुभव कर रही है। जैसे एक मछली जल में प्रसन्नता से भ्रमण करती है उसी प्रकार दशी कन्या अपने मां-बाप के सम्पर्क में लाड़ली बन कर चलती-फिरती है।

**ईजीए मारी ती, बाबूए दीनी गाली ।**
**ढेक लोड़ू ढ़ीबरा, बणे लोड़ू उछटी डाली ।**

**भाव :**—एक दिन दशी कन्या को कठिनता का समय आ पड़ा। दशी कन्या ने अवश्य ही कोई असह्य पापपूर्ण कार्य किया होगा। उसी का परिणाम था कि माता-पिता ने उसे डांट डपट दी। अतः वह घर से भागने की योजना बनाने लगी। वह या तो किसी ढंकार से कूद कर या वन में किसी ऊंचे वृक्ष से छलांग लगा कर आत्म हत्या करेगी। इस प्रकार ऐसा उसने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया।

**ने लोड़ी ढ़ंकलू, ने लोड़ी उछटी डाली ।**
**फिरी हुआ सोठवी, बीती ईजा बाबूए गाली ।**

**भाव :**—दशी कन्या के इस प्रकार के निश्चय का ज्ञान उसके भाई को हुआ। अतः इस पद्यांश में उसे उसका प्यारा भाई समझाता है, "हे बहन तू ढंकार से कूद कर या वृक्ष सी कूद कर आत्म हत्या करने को तैयार न हो। यह माता पिता हैं। इनकी प्रत्येक डांट फटकार शिक्षादायक होती है। यह बाद में जीवन के प्रत्येक कदम में याद आती है।"

**खलं दपहरं तू, किवा का नारेश्रा श्राश्र।**
**पाग तेरी उजली, फूल किजूश्रो लाश्र।**

भाव :—एक दिन शिखर दोपहर के समय दशी कन्या के घर में एक अजनबी आया। सम्भवतः वह मनुष्य एक वर्ष पहले भी उसके घर में आया हो। अतः दशी कन्या उस मनुष्य से पूछती है, "हे नर ऐसे दोपहर में तू कहां से आया।" फिर दशी कन्या की दृष्टि उसके बाह्य व्यक्तित्व पर गई, वह कहती है, "तेरी पगड़ी कितनी सुन्दर और साफ है। इस पगड़ी पर तूने जो फूल लगाया है, इस फूल का क्या नाम है, यह कितना सुन्दर और मनाकर्षक है।

**पाग धोई सावणं, फूल कुईश्रो लाश्र।**
**पुरोहित हुंदअ तेरश्र, पत्री खोजद श्राश्र।**

भाव :—वह अजनबी मनुष्य उसका कुल पुरोहित था। वह दशी कन्या को कहने लगा, "हे दशी कन्या मैं अनभिज्ञ नहीं हूं, वल्कि इस कुल का पुरोहित हूं। वसन्त ऋतु आ गई है। पगड़ी साबुन के साथ धो कर साफ की है। वसन्त में अनेक प्रकार के फूल खिले हैं। वन में अति सुगन्धित, कुई का फूल खिला है। अतः प्रातः उठ कर कुई के फूल को चुन कर अपनी पगड़ी में लगाया है। नया वर्ष शुरू हो गया है। अतः जन्त्री का सारांश सुनाने आया हूं।

**दशी लाई गांठणी, माघा पोशके राची।**
**तवं बखाणणी, जेवं पलाज आदी दाची।**

भाव :—दशी कन्या इस पद्यांश में कहती है कि मैं बसन्त के आगमन हेतु पहले ही माघ पोह में वसन्त गीत रचित करती हूं। जब मैं जौ गेहूं को काटना आरम्भ करती हूं उस समय वसन्त की बहार के कारण अति प्रसन्न होती हूं और इस अगाध प्रसन्नता को बसन्त गीत गा कर हृदय से बाहर निकालती हूं।

**चाल दशीए तू, इना शोभली जाचै।**
**बुंगअ बलाऊणू, सुनै रूपै रै पाचै।**

भाव :—दशी कन्या की सहेलियां दशी को कहती हैं, "हे दशी बसन्त पूरे यौवन पर है। गांव में मेले मनाए जा रहे हैं। चलो हम भी इन मेलों में जाएं।" अतः सभी कन्याएं मेले के लिए तैयार होती हैं। सिर में जूड़ा बनाती हैं। जूड़े पर सोने और चांदी के पत्तों वाला जेवर लगाती हैं। इस प्रकार मेले की ओर प्रस्थान करती हैं।

**दशीए मेरिए, देऊआ लैं देणू सविश्र।**
**छैल मेरी दशी लै, रांडू ने मेला़ रीह।**

**भाव :**—दशी कन्या अपनी मां की प्यारी बिटिया है। दशी कन्या की मां अपनी बिटिया की हितचिन्तक है। अतः दशी कन्या की मां मेले में जाकर देवता को कहती है, "हे देव मैं तेरे मन्दिर में दीपक जलाऊंगी यदि मेरी दुलारी बेटी दशी को अच्छा वर मिले। मेरी कन्या का वर सूरत में अति सुन्दर होना चाहिए।" इस प्रकार दशी के भविष्य के प्रति उसकी मां की शुभ कामना है।

**भोली गै दशीए, हासी खेलिया रहे।**
**झरी ने मानणी, झरी आगी दी दहे।**

**भाव :**—दशी कन्या की मां कहती है, "हे दशी तू कितनी भोली भाली है। तू सदैव ही हंसती खेलती हुई आबाद रहे। तू कभी भी किसी चीज की चिन्ता न करना, क्योंकि चिन्ता से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इसलिए चिन्ता को कभी भूल कर भी देह में न लाना। क्योंकि चिन्ता चिता का रूप बनाती है।"

**नाटी दी दशीए, तू ता शोभली लागा।**
**कण्ठ तेरअ कोयलो, शौभलै तेरैं रागा।**

**भाव :**—एक दिन दशी कन्या को उसकी मां ने नाटी में नाचते हुए देखा। नाटी में झूमती हुई दशी को देखकर मां कहती है, "नाटी में दशी नाचती हुई कितनी सुन्दर लग रही है। नाटी में नाच कर वह गाना भी गा रही है। मेरी बेटी का कण्ठ सत्य ही कोयल जैसा मीठा है। जिस गाने को तू गा रही है वह भी भावों से भरा हुआ सुन्दर है।"

**नाचदी दशी तू, खुशी मनाऊआ भारी।**
**चुंही गाहै दशीए, बेशै घोड़–शुवारी।**

**भाव :**—जब-२ दशी कन्या अति प्रसन्न होती है तब-२ उसकी मां फूली नहीं समाती अतः वह दशी कन्या को कहती है कि "हे दशी कन्या तू नाचती हुई कितनी शोभायमान तथा प्रसन्न होती है। हिंडोले का खेल तेरा मन भावत खेल है। जब मैं तुझे हिंडोले पर देखती हूं तो ऐसी लगती है मानों कोई रानी घोड़े की सवारी कर रही हो।"

हासदी दशीए, किलै तू हुई बिमारा।
दाहा ऐआ पापणिए, काली बणाई नारा।

भाव :—दशी कन्या की मां दशी को हंसती हुई देख कर प्रसन्न होती है, परन्तु अचानक उसे कोई बिमारी घेर लेती है। अतः उसकी मां भाग्य को कोसती है और कहती है कि बिमारी कितनी पापिन और डायन है। मेरी बेटी कितनी सुन्दर थी परन्तु बिमारी ने इसकी सूरत काली और दुबली पतली बना दी।

देऊआ बोलू देहूरी, तलै देऊ एक शाली।
ठीक करे दशी तू, एसरी सिहत माली।

भाव :—एक दिन दशी कन्या बिमार पड़ गई। इस प्रकार उसका चान्द सा चमकता मुख तथा स्वास्थ्य फीका पड़ गया। दशी कन्या की माता जब भी उसे देखती तो अत्यन्त दुःखी होती थी। अतः वह गांव के एक देवता को कहती है, "हे देहुरी के देवता मैंने सुना कि तू बहुत प्रत्यक्ष है। कृपया तू मेरी पुत्री के स्वास्थ्य को चांद सा चमकता हुआ बना मैं तुझे एक कपड़ा (शाली) दूंगी। क्योंकि इसका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ चुका है।"

माठली दशीए, तू हंदी शोभली बेटी।
मेरी एग्रा गोदा दी रहणू दिहालै केती।

भाव :—दशी कन्या की माता सोचती है कि यदि दशी कन्या लड़की न होती, लड़का होता तो सदा के लिए मेरे सम्पर्क में रहता, परन्तु यह एक पुत्री है। अतः एक न एक दिन मुझ से अलग होगी। अतः वह कहती है, "हे दशी बेटी तू कितनी सुन्दर है और मेरा प्यार तुझ पर कितना प्रगाढ़ है। परन्तु एक दिन आएगा जब हम वियोग के कारण नीर हीन मीन की भांति दुःखी होंगी।"

मेरिए गै इजीए, मुलै आपणो घर प्यारग्र।
मूं रहणू तए संगै, जींदड़ू काटणू सारग्र।

भाव :—दशी कन्या माता के संकेतात्मक शब्दों को समझ गई। जिस भाषा में दशी कन्या को उलाहना देती है। वह भाषा दशी कन्या को बिलकुल ही पसन्द नहीं है। इस प्रकार दशी कन्या अपनी माता को इस पद्यांश में कहती है कि "भविष्य में इस प्रकार की घृणित बातें न करना। क्योंकि मुझे अपना घर अत्याधिक प्यारा है। मैं इसे आयु पर्यन्त नहीं छोडूंगी। मैं सारा जीवन आपकी छत्र छाया में बैठ कर व्यतीत करूंगी।"

**दशी ती मेरी तू, गैणिए जेही जोथा।**
**तमै हंदी शोरी, आधी वाता दी शोटा।**

**भाव :**—माता अपनी बेटी के सौंदर्य की तुलना प्यारे चान्द की सुन्दरता से करती है। वह इस पद्यांश में कहती है, "हे प्यारी दुलारी बिटिया तेरी शोभा सत्य ही गगन में प्रकाशमान चन्द्रमा के समान है, परन्तु अफसोस कि तू लड़की है। यह प्राकृतिक नियम है कि लड़कियां माता पिता के साथ सदा के लिए नहीं रहती। वे आधे ही रास्ते में माता-पिता को त्याग देती हैं।"

**तू बराहटी, मूं भूणग्र भाई।**
**आपू आ डाली पाचीए, मूंडाग्र जोहलं पाई।**

**भाव :**—दशी कन्या की प्रशंसा उसका भाई भी विशाल हृदय से करता है। वह कहता है, "हे बहन दशी कन्या तू बराह की बूटी की तरह लम्बी है और मैं वन के फैले घास के समान हृष्ट पुष्ट हूं। तू सौंदर्य में डाली और पत्ते जैसी स्पष्ट है और मैं भी तालाब के पानी की भांति हृदय से निर्मल हूं।"

**नारे ने रहणू, नाकै निकला लिंडी।**
**पोरु डेऊणू जिऊआलैं, जेही सुमणे खिली।**

**भाव :**—दशी कन्या चतुरता की भावना को सदैव ही प्रोत्साहित करती है। यदि हम मूर्ख बन कर रहते हैं तो हमारा जीवन नीरस हो जाएगा। अतः हमें सदैव चतुर बनना चाहिए। चतुरता से हमारा जोवन सुमन की भांति शोभायमान और खिलता हुआ लगेगा।

**नैरू ती नारेआ, चाम्बआ ने चौंरी रोहा।**
**माणुए बेशा खुम्बली, रीश ने एतरी हआ।**

**भाव :**—दशी कन्या की मुलाकात किसी व्यक्ति से अचानक ही हुई थी। दशी कन्या ने उस व्यक्ति को किसी घृणित कार्य से रोका था, परन्तु वह व्यक्ति उस कार्य पर हठ कर रहा था अतः दशी कन्या उस युवक को कहती है, "हे नर चम्पा की डाली आंगन में नहीं लगानी चहिए। अगर वह लगा ही दी तो उसकी देख-भाल करनी पड़ती है। हम मनुष्य समाज में रहते हैं। अतः हमें समाज के रीति रिवाजों को नहीं भूलना है।"

धंलू बोला उड़िश्रा, छँ नाई पारलै रोपैं।
दाह हमारी वरवा, बानी ड़ाए गाचीए छोपैं।

भाव :—इस पद्यांश में दशी कन्या अपने आलौकिक मातृ प्रेम को प्रकृति के साथ जोड़ती है। वह कहती है, "दिन ढल रहा है। रात का आगमन अवश्यमेव ही होगा। इसी प्रकार हे मां हमारा वियोग भी भाग्य में लिखा है। अतः मेरे प्रति प्रेम की दर्द को तूने हृदय में स्थाई रखना।"

दशीए मेरीए जैं, सुनें रुपैं रे चाणा।
जैंवैं नाणी शाहूरैं, खाण ने मैंलणू खाणा।

भाव :—इस पद्यांश में माता दशी कन्या के उस दर्दनाक वियोग को स्मरण करती है जबकि उसकी शादी होगी। अतः वह अपनी पुत्री को कहती है, "हे कन्या तेरे शृंगार के लिए तेरे पिता सोने और चांदी के जेवर बना रहे हैं। क्योंकि अब एक दिन आएगा जबकि तू अपने ससुराल के नए घर में होगी। जब तू अपने ससुराल के घर जाएगी तो मुझे खाना भी अच्छा नहीं लगेगा।"

मेरी भराऊजा, जबी ती चतुरा नारा।
दुई काना दी बालटू, गलैं मोतिश्रो हारा।

भाव :—दशी कन्या को अपनी भाभी अपने भाई से भी अधिक प्रिय है। वह उसके सौंदर्य का वर्णन करती हुई नहीं थकती। वह कहती है, "मेरी भाभी सौंदर्यमयी और चतुर नारी है। दोनों कानों के (कनबालू) गोलाकार सोने के जेवर इसकी सुन्दरता को बढ़ाते हैं। गले में मोती का चमकीला हार इसकी शोभा को चार चांद लगाता है।"

कुफू त रांवल, बाशा डालो रे दौरे।
ऋत आई बसन्ते, माणू नऊए फीरे।

भाव :—इसी पद्यांश में दशी कन्या बसन्त के आने से प्राणी परिवर्तन की अवस्था का वर्णन करती है। वह कहती है, "बसन्त आ गया कुफू पक्षी कितना अच्छा पक्षी है जो इसके आगमन की सूचना पूर्व ही दे देता है। वृक्षों की डलियों पर बैठ कर वह कुफू-२ के शब्द द्वारा बसन्त आगमन की सूचना दे देता है। बसन्त के आगमन पर मनुष्य में नया जीवन आता है।"

कुफू बाशा बूटा दी, घुघती बाशी सेरी।
ऋत आई बसन्ते, शोभली नगरी मेरी।

भाव :—इस पद्यांश में दशी कन्या बसन्त की बहार को गांव की एक अमर निधि बताती है। वृक्षों को देखो तो वही कुफू पक्षी सौंदर्य ला रहा है। खेतों में घुग्गी (चिड़िया) बहार ला रही है। वातावरण हर प्रकार की शोभा से महक उठा है। सत्य ही बसन्त के समय मेरी नगरी इन्द्र तुल्य सुन्दर बन जाती है।

ऋत ऐआ बसन्ता दी, हरली भरली सेरी।
खाण चाणा ईजी, मजाए जीन्वली मेरी।

भाव :—इस पद्यांश में दशी कन्या माता के हाथों का बना हुआ भोजन और बसन्त ऋतु की बहार दोनों को आनन्ददायक अनुभव करती है। वह कहती है, "बसन्त की मजेदार ऋतु है। खेतों में हरियाली है। घर में माता के हाथों का बना भोजन मिलता है। यह सभी दृष्य मेरी आंखों को आनन्द देते है। मेरा जीवन सचमुच ही अत्यन्त सुखी है।"

ढोलकी बजाऊईआ, माणू खुशी मनाऊआ।
ऋत बसन्ता री, नगरुए शोभा बढ़ाऊआ।

भाव :—इस पद्यांश में दशी कन्या मनुष्य जीवन की प्रसन्नता के साथ प्रकृति सौंदर्य का मिलन करवाती है। वह कहती है, मानव ढोलकी बजा कर कैसी विचित्र प्रसन्नता प्रकट करता है। कभी ढोलकी बजाता है, कभी गीत गाता है, कभी नाचता है और चित को प्रसन्न करता है। इसी प्रसन्नता के साथ ही बसन्त ऋतु बहार लाकर वातावरण को चार चांद लगाती है।"

पारिए सेरी दी, दशी घणैरी ढूणा।
गला दी मस्त, हाक्क ने मेरी शूणा।

भाव :—वैशाख के महीने गांव का प्रत्येक व्यक्ति खेतों और खलिहानों में फसल को एकत्र करने के कार्य में व्यस्त होता है। इसी प्रकार दशी कन्या भी खेत में घास कटाई के कार्य में व्यस्त थी। गांव का एक व्यक्ति किसी कारण वश दशी कन्या को आवाज देकर बुलाने लगा, परन्तु दशी कन्या की कार्य व्यस्तता इतनी थी कि वह उस व्यक्ति की आवाज न सुन सकी और वह व्यक्ति निराशा के कारण चुप ही रहा।

**गैणी रै तारेओ, तमै तैं चमचमांदै।**
**मेरै आई शबात्रा, आ शबात्री खांदै।**

भाव :—दशी कन्या के परगने में शिवरात्री बड़ी धूमधाम से अनेक प्रकार के अ... पकवान पका कर मनाई जाती है। अत: इस पद्यांश में वह आकाश के तारों को शिवरा... खाने के लिए आमन्त्रित कर रही है। वह कहती है, "ए गगन मण्डल की तारावली तुम ... बचपन से मेरे साथी हो। आज मैं शिवरात्रि मना रही हूं। आप भी शिवरात्रि खाने आएं।"

**रक्षा–बन्धना री, राखड़ी लंणी लाई।**
**शुण मेरै सूरजा, तू आसा धरमो भाई।**

भाव :—आज रक्षा बन्धन का त्यौहार है। प्रत्येक बहन के मन में अपने धर्म भा... के प्रति अटूट और अमर प्रेम के भाव उत्पन्न हो रहे हैं। इसी प्रकार दशी कन्या को भी इ... विचारों ने घेर लिया है। अत: वह इस पद्यांश में कहती है, "हे सूर्य तू मेरे धर्म का भाई है... तू मेरी पुकार को सुन और धरा पर उतर आ। मैं तुझे राखी बान्धना चाहती हूं।"

**चन्दरा बैंहणी दी, तारेऐ मारअ घेरा।**
**मेरै लागी जाचा, तुमै भी इना हेरा।**

भाव :—दशी कन्या के गांवों में वन्सत के समय में कई प्रकार के मेले लगते हैं। अत: वह इस पद्यांश में कहती है, "हे चन्द्र का वाहन तुझे तारों ने घेर रखा है। मेरे गांव के मेले आरम्भ हो गए हैं। अत: जैसे तुझे तारों ने घेर रखा है उसी प्रकार गांव के देवता को लोगों ने घेर रखा है।" भाव यह है कि मेले में लोगों की संख्या अत्यधिक है। ऐ चांद और सितारो तुम भी धरा पर उतर कर इन मेलों को देखने आओ।

**तए बोलू दशी लें, जिऊ म्हारै सुखालै।**
**इजी–बापू राजी, शोभलै म्हारै बिहालै।**

भाव :—दशी कन्या का भाई अपने तथा अपनी बहन के जीवन को अति आनन्दमय अनुभव करता है। अत: वह दशी कन्या को कहता है, "हे बहन दशी! हमारा जीवन कितना सुखमय है। हमारा गांव भी कितना सुन्दर है। वसन्त की बहार इसे प्रति वर्ष नया जीवन प्रदान करती है। हमारे माता पिता भी सदविचारों वाले हैं। अत: हमारे दिन जो व्यतीत हो रहे हैं यह सौख्य पूर्ण तथा मंगलकारी हैं।"

**भाई बोलू मेरेआ नऊए माणू रे मेलं ।**
**ऋत आई बसन्ते, ठाण्डं मरा ने शेलं ।**

भाव :--दशी कन्या अपने भाई से भी अधिक अपने जीवन को आकर्षक वर्णित करती वह कहती है, "हे भाई यह संसार की चहल पहल तथा आगमन का चक्र एक मेले के समान है। मनुष्य दुनियां के बाजार में सदा प्रसन्न है। बसन्त ऋतु हमारे हिमधाम में कितनी अच्छी है। यहां वसंत ऋतु में न अधिक गर्मी और न ही अधिक सर्दी होती है। यहां जीवन सौख्य से परिपूर्ण है।

**माणू री जातरा, माणू लै देऊए बणाई।**
**जिऊ रहा राजो, शोभली म्हारी कमाई।**

भाव :—संसारिक प्राणी कितना चतुर है। उसने अपने मनोरंजन के लिए क्या कुछ पैदा नहीं किया। एक देव मन्दिर बना कर उसकी स्मृति में अपने मनोरंजन के लिए मेलों का आयोजन किया। इस प्रकार मनुष्य जीवन प्रसन्नता सौरभ से सदैव परिपूर्ण रहता है। मनुष्य का हाथ सत्य ही सोने और मोती की भांति बहुमूल्य है।

**दशी लैं ग्राऊंटू, परमात्मै दिनअ बरा।**
**आंगणे बगीचड़ू, बगीचड़ू दी पाणिओ सरा।**

भाव :—दशी अपने गांव की चार दिवारी के अन्दर रह कर उसकी शोभा का रसास्वादन सदैव ही किया करती है। अतः वह परमात्मा की ओर से इसे अपने लिए एक वरदान ही मानती है। उसके घर के आंगन में एक बगिया है और बगिया में पानी का तालाब है। सत्य ही गांव का जीवन सौन्दर्यमय और शान्तिमय होता है।

**धारा गाहै ग्राऊंटू, फेरदी खेचा री सेरी।**
**ग्राऊंटू हेरिआ, रिश कोई ने करा तेरी।**

भाव :—दशी कन्या का गांव एक पहाड़ पर स्थित है। गांवों के चारों ओर खेत हैं। वे खेत भी बड़े-बड़े हैं। मानव इन खेतों में कार्य करता हुआ कितना अच्छा लगता है। यह सब परिश्रमी कृषक की करामात है। अतः दशी कन्या कहती है कि मेरे गांव की शोभा का मुकाबला कोई नहीं कर सकता है।

ग्राऊंटू पोरशै, एक त पाणी र नाल् ।
ग्राऊंआ दी सजा ज, जैणअ नाका र बाल् ।

भाव :—दशी कन्या का भाई अपने गांव की उपमा इस प्रकार करता है कि गां के एक ओर एक पानी का नल अपने पानी की अवरिल धारा को वहाता हुआ वह रहा है। यह नल गांव को इस प्रकार शोभायमान कर रहा है कि मानो हिमधाम की कि सुन्दरी के नाक का गोलाकार जेवर हो जो नग जड़ित है।

ग्राऊंटू लंघिग्रा, शोभ ता मेला नोंखी।
सेरी संही दशी, तू ती चांगी चोखी।

भाव :—गांव के साथ वाला जो दालान है दशी कन्या उसकी सराहना कि विना भी नहीं रह सकती। क्योंकि वह अति मनमोहक है। यह कहती है, "गांव को लांघ कर मनुष्य चक्षु को जो प्रकृति दृश्य मिलता है वह वहुत निराला है। मैं भी उस दालान की तरह एक सुन्दर वाला हूं।" जरा ध्यान दें कि एक छोटी वालिका के कैसे आकर्षक विचार है।

सेरी दी ओढ़ुई, किलै हुई दशीए खड़ी।
बेंण दे बदला, जिऊ दे ढबूए भरी।

भाव :—दशी कन्या अपने गांव के एक छोर पर किसी खेत में खड़ी है। अतः एक गांव का परिचित युवक उसे पूछता है, "हे दशी तू इस प्रकार यहां क्यों खड़ी है। मेरी वात का उत्तर दे यदि कोई प्रसन्नता की वात है तो मेरे दिल को भी उस प्रसन्नता रूपी धन से अमीर वना दे।"

चाल गैं दशीए, इना रेहुशी जाचै।
बुगअ बखाऊणू, सुनै रुपै रे पाचे।

भाव :—वसन्त मास के सभी मेले तथा पर्व किस के दिल को आकर्षित नहीं करते। अर्थात् सभी व्यक्ति प्रफुलित और हंसमुख दृष्टिगोचर होते हैं। अतः दशी कन्या भी अपनी सहेली को कहती है, "ऐ सहेली चल उस पार दूर गांव के प्रसिद्ध मेले को चलें।" दोनों सहेलियां मेले को जाने के लिए तैयार हो जाती हैं। उन दोनों कन्याओं ने अपने सिर के वालों के जूड़े को सोने चांदी के पत्तों से सजाया। यह सुन्दरता का अन्तिम छोर था।

**चाल गै दशीए, शीलै बांगुलै जाणा।**
**भात खाणू रैलिम्रो, फूल कड़ैलिम्रो लाणा।**

भाव :—सत्य ही बसन्त में वह गांव के सामने वाला जंगल का दालान जिसमें वन विभाग ने एक गगन चुम्बी रैस्ट हाऊस बनाया है अति शोभायमान और हृदय आकर्षक लगता है। अत: दशी कन्या और उसकी सहेलियां वहां पिकनिक मानने की योजना बनाती हैं। वहां पर जाकर वे रैली धान का भात बनाकर खाएंगी और कड़ौली के फूल से अपने आप को शृंगारित करेंगी।"

**किदी चालग्र माणूआ, एऊ एबलै धूपे।**
**म्हारी बेशे चाऊली, जोगी साधूए रुपे।**

भाव :— दिन अपने पूरे यौवन पर है। सूर्य देव धरा को प्रकाश का जो कुछ दान प्रदान करना चाहते हैं, पूर्ण रूप से दे रहे हैं। इतनी कड़ी धूप में दशी कन्या के घर के सामने से एक अजनबी व्यक्ति जा रहा है। उस मनुष्य का भी अवश्य ही अपना लक्ष्य होगा। दशो कन्या उसे देख कर कहती है, "हे मनुष्य तू इस कड़ी धूप में कहां जा रहा है। तू आ और मेरे घर के बरामदे में थोड़ी देर शुद्ध भावना से विश्राम कर ले।"

**कथिम्रा पोथिया, तेरग्र बणाणू छाबू।**
**थारी इना गला र, हामा ने भ्रांदग्र काबू।**

भाव :—दशी कन्या अपने पूरे यौवन पर है। यौवन की घड़ियों में कई शारीरिक परिवर्तन सम्भव हैं। इसी परिवर्तित समय से दशी कन्या गुजर रही है। इस प्रकार दशी कन्या का किसी युवक से प्यार हो जाता है। वह युवक इस कन्या को कई प्रकार के वायदे दे रहा है परन्तु दशी कन्या एक ऐसी लड़की है जो जीवन पथ पर सम्भल कर कदम रखना चाहती है। अत: वह उस युवक की बातों पर विश्वास नहीं करती।

**सेबी लुहारूम्रा, मुंबी भ्रासा दशी राणी।**
**जो भ्राए लऊणै, दाची भ्रारणै पाणी।**

भाव :—खेतों में फसल पक गई है। फसल की कटाई आरम्भ होने वाली है। दशी कन्या गांव के किसी लुहार के पास जाती है। उस लुहार का नाम सेबी है। वह लुहार को अपना परिचय देती है। वह कहती है, 'बसन्त ऋतु का आगमन हो गया है। फसल काटने के लिए तैयार है। अत: तू मेरी दराती को तेज कर ताकि कल से फसल काटने का कार्य आरम्भ कर सकूं।"

पार पनखले दशीए, काथी फूली गलोली।
मने करे समझा, कि हेरे जीभा का बोली।

भाव :—इस पद्यांश में दशी कन्या चिन्तन पर गहरा प्रभाव डालती है। व बकवासी मनुष्य को बेकार मनुष्य समझती है। गहन चिन्तक मनुष्य उसे आदर्श मनुष्य लग है। वह इस सिद्धान्त की प्रशंसक है कि बोलना कम चाहिए और सोचना अधिक चाहिए अतः दशी कन्या काथी और गलोली के खिले फूल के समान गहन चिन्तक मनुष्य को सुन्द मानती है।

हाथा दी कांगणा, काना दी केऊटी रूणा।
मेरे ने पछैणुई, पीऊणे घाटुए कुणा।

भाव :—दशी कन्या का बाह्य पहरावा अति आकर्षक है। वसन्त के आने पर दश ने आज अपना पहनावा बदल डाला। हाथ में सोने का कंगन पहना। कान में सोने के गोलाक जेवर (केऊटी) लगाए। पीले वस्त्र पहने। गांव के लोग उसे खेतों में घूमती हुई देखक कहते हैं कि यह लड़की कौन है। हम इसे पहचान नहीं पाए।

तू करा दशीए, पीऊणे घाटुए बड़ेई।
सबी के ढबूए, सब आणा हाटी का लैई।

भाव :—जब दशी कन्या सहेलियों के मध्य गई तो वह अपने बसन्ती वस्त्रों क प्रशंसा करने लगी। इस प्रशंसा से अन्य लड़कियां जलने लगी। अतः वे दशी कन्या को कहती ह "तू अपने पीले वस्त्रों की बड़ी प्रशंसा करती है। सभी के पास पैसे होते हैं। सभी ऐसा कपड़ दुकानों से खरीद कर ला सकते हैं।"

एकी हाथे कलमा दूजे हाथे गलासा।
मेरे ने पछैणु अं, केऊ आऊंओं आसा।

भाव :—इसी परिवेश के मध्य में एक युवक बसन्ती वस्त्र पहने दशी कन्या को मिला सम्भवतः वह कोई लेखक ही था, क्योंकि वह युवक एक हाथ में कलम लेकर और दूसरे हाथ गिलास लेकर पानी पी रहा था परन्तु दशी कन्या उसे नहीं पहचान सकी। अतः वह कहने लगी "हे युवक मैं आपको नहीं पहचान सकी। कृपया अपना परिचय दो। आप किस गांव के हैं।"

**धारटी पोरशा का, चेली वाशी लूंगी।**
**म्हारश्र श्राए पाहुणा, घरा गए पोरशी खूंगी।**

**भाव** :—जब लेखक का परिचय दशी कन्या से हुआ तो उसने उससे अतिथि बनने का आग्रह किया। नवयुवक ने भी उसका निमन्त्रण स्वीकार किया। अतः दशी ने युवक से कहा, "हे युवक जैसे वन में लुंगी नाम की चिड़िया शब्द करती है। उसी प्रकार आप जब हमारे मेहमान आएंगे तो शब्द अवश्य करना।" यह पद्यांश सद्भावना का प्रतीक है।

**दशीए मना दी, उगलै नऊए बचारा।**
**एबी हंदी माठली, धीशा सरली संसारा।**

**भाव** :—आज दशी कन्या कुछ गहरे विचारों में डूबी थी। सम्भव है उसे आज भावी-जीवन स्मरण हो आया। दशी कन्या के मन में नए-२ विचार उमड़ आए। वह कहती है, "अभी तो मैं नन्हीं गुड़िया के समान छोटी सी लड़की हूं, परन्तु भविष्य में क्या होगा, यह विदित नही है। अभी तो माता पिता के आंचल में सारा संसार एक जैसा अनुभव कर रही हूं। क्या भविष्य में भी सारा संसार मुझे ऐसा ही उपलब्ध होगा?"

**दशीए मेरिए, तैं घूण्डी बणाणी लाई।**
**ने नाही शाहूरै, हामा ने कदी रूश्राई।**

**भाव** :—इन्हीं विचारों में दशी कन्या चक्र काट रही थी। उसकी माता ने उसे झझकोर दिया। माता ने कहा, "हे दशी कन्या अभी तू नन्ही सी गुड़िया है और गुड़िया बना कर उसे संवारती रहती है। तेरी यही गुड़िया भविष्य प्रेरक है। अतः तू ससुराल के घर जाने की तैयारी न कर और तू हमें कभी भी न छोड़ना।' ऐसा लगता है कि दशी कन्या गुड़िया बनाकर उसका विवाह कर रही थी।

**घूण्डी जेही भोली दशी, शोभलै ऐसा रै कामा।**
**जेबी नाणी शाहूरे, कैणे की रहण हामा।**

**भाव** :—दशी कन्या गुड़िया के खेल में मग्न है वह कभी वर बनाती है और कभी वधू बनाती है। कभी वर-वधू का बच्चा बनाती है। दशी कन्या की माता इस सारी क्रीड़ा का सिंहावलोकन कर रही है क्योंकि मनोवैज्ञानिक आधार पर इससे दशी कन्या के भविष्य के स्थाई भावों तथा प्रवृत्तियों का ज्ञान हो रहा है। अतः माता दशी कन्या को कहती है, "हे बिटिया तेरी क्रीड़ा अति प्रिय है परन्तु जब तू इस गुड़िया की भान्ति ससुराल जाएगी तो हम तेरे बिना कैसे रह पाएंगे।"

**दशीए मेरिए तू, शिखे ब्याहे रे रागा।**
**ब्याह हणू तेरग्र, राजी डाए ग्रापणो सुहागा।**

**भाव :**—क्रीड़ा में निमग्न दशी कन्या को उसकी मां कहती है, "हे दशी क. गुड़िया का विवाह करते हुए तू अवश्य ही विवाह गीत सीखना। इसके साथ वर के प्र वधु का क्या कर्त्तव्य होता है, उसे भी अवश्य सीखना। इस प्रकार तू जीवन पथ पर क. धोखा न खा सकेगी।" इस पद्यांश में इस प्रकार की शिक्षा माता बेटी को दे रही है।

**शोभली दशीए, तू आसा होछी चेई।**
**बुरग्र न भाऊई, ऐबं लेई शाहूरे देई।**

**भाव :**—जैसे ही दशी कन्या ने विवाह करने के पश्चात गुड़िया का खेल समा. किया तो उसकी मां ने उसे कहा, "हे दशी कन्या तू एक छोटी सी लड़की है। तू मुझे अपना जान से भी प्यारी है परन्तु एक प्रस्ताव तेरे सम्मुख है। वह प्रस्ताव यह है कि जैसे तू. गुड़िया का विवाह किया वैसे ही हम भी तेरा विवाह कर रहे हैं। तेरे लिए हमने एक सुन्दर वर ढूंढ़ लिया है।"

**कुफू बाशा केन्दले, घूघती बाशी नुमाणी।**
**जिऊ दुआसि ग्रा, पाचा परेंदो पाणी।**

**भाव :**—दशी कन्या जब भी बसन्त पक्षी कुफू और घूघती को देखती है तो उसे हर बार एक नई प्रेरणा मिलती है। इस वर्ष भी बसन्त अपने पूरे यौवन पर है। बसन्त की बहार ने अच्छा वातावरण उत्पन्न किया। बाग में वृक्ष की टहनियों पर कुफू और घर के साथ विस्तृत खेतों में चिड़िया अपने शब्द द्वारा परिवेश को यह प्रेरणा दे रहे हैं कि हर प्राणी का जीवन नवीनता को धारण कर रहा है परन्तु दशी कन्या असमंजस में पड़ी है। उसका हृदय इस प्रकार उदास है जैसे कि प्रातः की ओस पत्तों से विलग होती है।

**चान्दिग्रो चरख, हाथे पवना पूणी।**
**बागे निकले दशीए, नोखी खबरा शुणी।**

**भाव :**—जब बसन्त ऋतु सौंदर्य सौरभ को लेकर आती है तो वातावरण अति आकर्षक हो जाता है और बातावरण की प्रत्येक वस्तु में नव जीवन आ जाता है। मनुष्य का शरीर चान्दी के चरखे के समान है और मनुष्य की आत्मा चरखे की पूनी के समान है जो क्षण भर में सूत के रूप में परिवर्तित हो जाती है। अतः दशी कन्या कहती है कि मनुष्य क्षणभंगुर है, परन्तु आत्मा परिवर्तनशील है। जैसे कि कपास की पूनी स्वयं को सूत में परिवर्तित करती है उसी प्रकार ही मनुष्य की आत्मा परिवर्तनशील है।

काफरा बूटिए, गोषा दी पाणू डेरअ।
सेर खाणू खटिया, आसर करणू तेरअ।

भाव :—मनुष्य शरीर के प्रति मृत्यु की क्रीड़ा पर दशी कन्या अति चिन्तित है। वह अपनी सहेली को कहने लगी कि मनुष्य अपना जीवन इस नाशवान संसार में इस प्रकार व्यतीत कर रहा है जैसे कि वह किसी काफिर और कातिल पेड़ के नीचे बैठा हो। मनुष्य परिश्रम द्वारा अपनी रोटी कमा कर खाता है, परन्तु फिर भी वही परिश्रमी मनुष्य उसी पेड़ का आश्रय मानता है जो कि उसी मनुष्य को काफिर बना बैठा है। न जाने वह पेड़ कब गिरकर उसी व्यक्ति को समाप्त कर देता है। यही सम्बन्ध मनुष्य और भगवान के मध्य में है।

कालेआ काऊआ, किलै लागअ कलान्दअ।
राज बैशअ डांउदअ, जों बैशअ माणू खान्दअ।

भाव :—दशी कन्या इस पद्यांश में बड़े मार्मिक ढंग से जीवन के तत्व को निकालती है। वह एक काले कौए की काएं-२ को सुनती है। वह कहती है, "ऐ काले कव्वे तू काएं-२ क्यों कर रहा है। क्या तू इस भयानक और डरावनी मृत्यु पर शोक प्रकट कर रहा है। यह मृत्यु एक ऐसी छलनी है जो कभी आने का सन्देश नहीं देती। जैसे कि यदि एक राजा के पास मुकद्दमा हो उसका कोई पता नहीं चलता कि वह किस तरफ को ढलता है। उसी प्रकार यमदूत आ कर मनुष्य को कब अपना मित्र बनाए इसका भी कोई ज्ञान नहीं होता। यह मनुष्य के नियन्त्रण से बाहर है।"

पारिए धारा दी, कुण घणेरी हूला।
पिऊणे भगूए, कुण नार झूला।

भाव :—दशी कन्या बसन्ती कपड़े पहने खेतों में घूम रही थी। वह अपने कार्य में व्यस्त थी। वह बसन्त गीत गा रही थी। सभी गांव के लोग उसे देख रहे थे। अतः गांव के लोग उसे पहचान न सके। सत्य ही, विधि की विडम्बना कैसी है। मनुष्य जीते जी कितना प्रसन्न होता है। वह अपने आपको स्थाई मानता है।

संगणी मेरिए, संगणी जेह नहींस्णेह।
संग लागी चुटदी, जैणअ भाटो जणेअ।

भाव :—दशी कन्या अपनी सहेलियों को कहती है, 'सहेलियों जैसा प्यार कहीं नहीं मिलता, सहेलियों का प्यार दुनियां की अमूल्य वस्तु है परन्तु खेद है कि यह प्यार पण्डित के यज्ञोपवीत के समान टूटता हुआ लग रहा है क्योंकि हमारे अलग-२ रास्ते हैं।"

पारे पनखल् पाणिश्रो डीबरू नीलश्र ।
दशी रै बोला रा, श्रा ने कदी भी थीजअ ।

भाव :—दशी कन्या की यह सभी बातें सहेलियों को एक मात्र आडम्बर लग... हैं। जैसे पानी का वह नीला सरोवर बहुत गहरा है उसी प्रकार दशी कन्या की गहरा... कोई ज्ञान नहीं होता। दशी कन्या अपने विचारों में अति गम्भीर है। अतः दशी कन्या कुछ भी कहती है उसके मूल का कोई भी ज्ञान नहीं होता है।

भाईया मेरेश्र, घर त जेह किलअ ।
फूल चुंग मुलै तैं, पर हार गुंदश्र ढीलश्र ।

भाव :—बसन्त का महीना है। दशी कन्या अपने भाई के संग कई प्र... की रंग-रलियां मनाती हुई दृष्टि गोचर होती है। वह इस पद्यांश में अपने भाई... कहती है, "हे भाई हमारा घर कितना मजबूत है। यह सभी हमारे पिता के परि... का परिणाम है। हे भाई! आप मुझे बहुत सुन्दर फूल चुन कर लाए हैं, परन्तु आपने... हार बनाया है वह बहुत ढीला है।"

श्रागू लाश्र हांडकू, पीछू जांघा लै पाणी ।
हामैं श्राए पाहुणै, भात डाए वेगमी चाणी ।

भाव :—सत्य ही गांव का जीवन कितना भोला-भाला और सौन्दर्यमयी है। द... कन्या का एक गांव के नवयुवक से प्यार हो जाता है। भविष्य में वही नवयुवक उसक... पति बन जाता है। दशी कन्या ने पांव धोने के लिए गर्म पानी चूल्हे पर रखा था। उस... क्षण नव-युवक उसके घर आता है और कहता है कि मैं आपका मेहमान आ गया हूं।

फूल गुंदिया, डाअ जानी परंदै ।
हामैं डाश्र तमाले, तमैं लोगू ने लांदै ।

भाव :—दशी कन्या ने नव युवक को अतिथि के रूप में माना। इस पद्यांश मे... दशी कन्या युवक के प्रति सच्चा प्रेम प्रदर्शित करती है। जैसे ही युवक आया और बैठा तो दिल की बातों को छेड़ा। उसने युवक को कहा, "मैंने फूलों का प्रेम हार आप के लिए गूंथा था, परन्तु आपने वह नहीं पहना। क्या वह प्रेम पूर्ण हार नहीं था। मैं आपसे इसका कारण पूछना चाहती हूं।"

**सामनी धारां दी, शोभला ग्राऊंटू श्रोटा।**
**हामैं भूरी तमा लै, तमैं करा धारको टोटा।**

**भाव :**—वही अतिथि युवक जो दशी कन्या के घर आया था। इस पद्यांश में वह दशी के प्रति अपने अगाध प्रेम को प्रकट करता है। सम्भवतः इसी पद्यांश के साथ उनका दिल मिल जाता है और विवाह तय हो जाता है। नवयुवक कहता है धार पार के गांव में मेरा घर है। मैंने आपको दिल से प्यार किया है, परन्तु आप स्वीकार करेंगी या नहीं यह आप पर ही आधारित है।

**घरा रै पूंजा का, बाशग्र कनाऊरी काअ।**
**राची नहीं निदरा, धैली ने ग्रान्ना रै भाग्र।**

**भाव :**—अपने होने वाले पति के साथ दशी कन्या केवल हां में हां नही मिलाती बल्कि वह इस पद्यांश में इसे अन्तिम सीमा तक पहुंचाती है। अन्तिम छोर पर पहुंचाती हुई वह कहती है, "घर के कोने पर प्रतिदिन एक कव्बा काएं-२ करता है। मैं उसे किन्नरी कव्वा कह कर पुकारती हूं। मुझे उस समय आपकी स्मृति आती है। अतः मुझे रात्रि को नींद नहीं और दिन को भूख नहीं है।"

**ऊना रै रेटू, रूलग्र धाना री सेरी।**
**किले दशी बिगड़ी, मेरे डूंढरू हेरी।**

**भाव :**—युवक अब आश्चर्य में डूबा है। दशी के साथ जो आलौकिक प्रेम है इसे वास्तविक रूप कैसे दिया जाए। वह दोनों इस बालप्रेम को जीवन के अमर प्रेम में परिवर्तित करना चाहते हैं। जैसे कोई ऊन की तकली हाथ से गिर कर बहुत दूर चली जाती है और उसके धागे उलझ जाते हैं, तकली वाले को तकली के धागे समेटना कठिन हो जाता है। उसी प्रकार युवक प्रेम-पथ पर परेशान है।

**डूंढरू दे डिगणें, डूंढ़रू गए ढराई।**
**फूला हुंवै फूलणू, बालै नीसी भंऊरै लाई।**

**भाव :**—प्रेम चाहे मातृ प्रेम हो चाहे भ्रातृ प्रेम, चाहे पति प्रेम हो या देश प्रेम हो, यह सभी जब हृदय में पक्की जगह प्राप्त कर लेते हैं तो स्थाई भाव उत्पन्न होते हैं। दशी कन्या इस पद्यांश में कहती है, "कली खिल कर फूल बन चुकी है। इस खिले फूल के चाहक अनेक भ्रमर होते हैं, परन्तु जब यह फूल मुरझा जाएगा तो भौरे भी इस पर नहीं आएंगे। इसलिए हे प्रेमी हमारा प्यार इस प्रकार का नहीं होना चाहिए। यह सच्चा तथा स्थाई होना चाहिए।"

**ठाण्डेआ पाणिआ, घूटू घूटूए पीणू ।**
**इंवी छुटश्र सभी का, चकी कोई ने नीणू ।**

**भाव :**—दशी कन्या का वह प्रेमी जो भविष्य में पति का रूप धारण करेगा क... "यह ठीक है कि प्रेम स्थाई भाव के आधार पर होना चाहिए। ठण्डा पानी यदि ग... दिनों में पिया जाए तो घूंट-२ करके पिया जाता है। इसी प्रकार यदि गर्मी में पि... तो गिलास एक घूंट में पिया जाता है। यही आधार प्यार का है। जीवन चार दिन क... प्यार से रहना चाहिए। यह संसार यहीं रहेगा। इसे कोई भी व्यक्ति उठा... ले जाएगा।

**लाठेयो कुरतअ, बिला दी टेकश्र धूलश्र ।**
**देशे नहीं शरमा, स माणू हंदश्र बुरश्र ।**

**भाव :**—दशी कन्या उस आदमी को बेशर्म बताती है। जो व्यक्ति लोक-... को ध्यान में न रख कर प्रेम से गद्दारी करता है। वह कहती है, "प्रेम एक श्वेत कमीज़... समान साफ और स्पष्ट है, परन्तु यदि सफेद लट्ठे की कमीज पर धूल पड़ जाए तो अच्छा न... लगती। उसी प्रकार यदि प्रेम रुपी लट्ठे में मैल लग जाए तो वह बुरा लगता है। अतः... प्रकार के स्वभाव का मनुष्य घटिया मनुष्य कहा जाता है।"

**धारा गाहे धारटू, तेता गाहे ग्राऊंटू नांजा ।**
**दशी हेरिआ, आख ने मेरी राजा ।**

**भाव :**—जिस ढंग से दशी कन्या अपने आदर्श प्रेमी को प्रेम का सिद्धांत सिखाती है। उसका प्रेमी भी प्रेम सिद्धांत को समझ जाता है। वह भी यह विश्वास दिलाना चाहता है कि मैं एक आदर्श प्रेमी हूं। वह कहता है, "मेरा प्रेम सच्चा प्रेम है। य... भविष्य में भी निर्मल रहेगा। वह देखो नांज गांव उस धार पर कितना सुन्दर है। य... हरी भरी धार (पहाड़ी) उस पर वह गांव कितना आकर्षक है। इसी प्रकार हमार... जीवन भविष्य में हरा-भरा रहेगा। मैं उस समय के इन्तजार में हूं। भगवान करे कि वह समय शीघ्र ही आए।"

**घाटिए गहीए, मैलश्र धाधलू सापा ।**
**हिजा मैलू सुपनै, आज बणा री बाता ।**

**भाव :**— इस पद्यांश से लगता है कि दशी कन्या और उसके प्रेमी को अलग हुए बहुत समय व्यतीत हो चुका है। अतः वे आज अचानक ही रास्ते में मिले। उनकी पारस्परिक वार्ता छिड़ गई। अतः दशी कन्या कहती है, "आप मुझे आज अचानक ही मिले। जैसे किसी रास्ते में पड़ा सांप हो, जिसको देख कर आदमी डर जाता है। उसी स्थिति में आज आप मुझे मिले। कल आप मुझे स्वप्न में मिले थे आज बीच रास्ते में ही मिले हैं।"

**धैलै ता उड़िया, पूर्वे रिगी मांखी ।**
**जिऊ जलाऊंदं जियल़ू, मना पतेऊंदी ग्राखी ।**

**भाव :**—दशी कन्या के प्रेमी ने मुलाकात होने पर उसकी भावुक बातें सुनी। दशी कन्या के प्राकृतिक प्रेम ने उसे भी कुछ कहने के लिए बाधित किया। अतः प्रेमी इस पद्यांश में दशी कन्या के समस्त सौन्दर्य को प्रकाश में लाता है। वह कहता है, "जैसे ही सूर्य ढलने को आता है तो पूर्व में लालिमा इस प्रकार छा जाती है। मानो कोई मक्खी रेंग रही हो। उसी प्रकार आपकी आंखें हैं जो मेरे हृदय को शांत करती हैं। आपके बोलने का ढंग मेरे हृदय को चुरा लेता है।

**हाटी का लैईआ, हाथा दी सावणे चाकी।**
**कि ने दिल जलाऊई, कि बाने ऊमरे पाकी।**

**भाव :**—इस पद्यांश में सत्य ही दशी कन्या की आन्तरिक भावना शुद्धता की भी अन्तिम सीमा पर पहुंच जाती है। वह कहती है, "दुकान से साबुन की टिकिया केवल बाह्य शुद्धता के लिए क्रय की जाती है। उसी प्रकार वह अपने प्रेमी को कहती है कि यदि आपका शुद्ध प्रेम है तो इस प्रकार न सताओ बल्कि शुद्धता हेतु ऐसी साबुन की चक्की क्रय करें जो आयु पर्यन्त शुद्ध बना दे।" अतः इस पद्यांश से लगता है कि दो देह एक प्राण में परिवर्तित होने जा रहे हैं।

**तए बोलू दशीए, दाह् ती जबरा तेरी।**
**मने हेरे सोठी तू, ज़ोर नहीं जबरा मेरी।**

**भाव :**—सत्य ही जहां दो दिल मिल जाते हैं वहां पर जबरदस्ती का काम नहीं रहता। जहां प्राकृतिक प्रेम की अमर ज्योति जल जाती है वहां पर सभी संसारिक चीजें नष्ट हो जाती हैं। अतः इस पद्यांश में दशी कन्या का प्रेमी कहता है, "हे दशी मुझे तो आपका दर्द आदर्श तथा आलौकिक क्षेत्र के आधार पर है। दूसरे पक्षानुसार आपने अपने भाग्य का निर्णय स्वयं करना है। इसमें जबरदस्ती की कोई बात नहीं होनी चाहिए।

**दिलड़ू मिलै, ब्याहरी काढ़णी धैली।**
**ग्राज आए सांझकी, माई-बापू गए मैली।**

**भाव :**—जब दशी कन्या अपने प्रेमी का वास्तविक प्रेम प्राप्त करती है तो वह गहन विचारों में डूब जाती है। यह भी ठीक है कि दिल को दिल से राह होती है। इस प्रकार अब बातों-बातों की मुलाकात परिवर्तित हो रही है। यह बड़ी आश्चर्य की बात है कि छोटी सी मुलाकात जीवन पर्यन्त संगति में बदल रही है। अतः दशी कन्या अपने प्रेमी को परामर्श देती है, "यदि ऐसी अवस्था है तो आप आज मेरे माता-पिता से मिलें और शादी की बात-चीत कर दें।"

# द्वितीय खण्ड

खोई का होंतदा, देई भरा बचारा ।
आज बाबूआ इवली, काला शूनअ बज़ारा ।

भाव :—वही दशी कन्या अब देई नाम से दुल्हन के रूप में है। दशी कन्या का जीवन परिवर्तन होने जा रहा है। परिवर्तित पथ पर जाते हुए उसे माता पिता का वियोग ग्रसित कर रहा है। जैसे ही देई घर से आंगन में विदा होने के लिए उतरी तो देई ने यह पक्का निश्चय कर लिया कि अब यह घर मेरा नहीं है। अतः वह इस पद्यांश में अपने पिता को कहती है, "आज मैं आपके घर में हूं। कल मैं यहां पर नही हूंगी और आपका यह बाजार सूना हो जाएगा।"

आगा काढ़ी पालकी, पीछा का देईओ डोलअ।
मांझैं मेरी गै इजीए, तेरअ तिलक डोलअ।

भाव :—इस पद्यांश में देई विवाह के समय का दर्दनाक दृश्य वर्णित करती है। वह माता को कहती है, "हे माता अब मैं आपके आंचल से विलग होने जा रही हूं। आगे आगे दहेज का सामान जा रहा है। पीछे-२ दुल्हे की पालकी जा रही है। बीच में तेरी लाडली पुत्री का डोला जा रहा है। मेरे भाग्य में भगवान ने कैसा वियोग का समय लिखा है। यह वियोग मुझे बिल्कुल असह्य है।

**बाबू रोआ सुहाणें दी, इंजी विलगू आगा।**
**रोई ने ईजीए तू, मेरै अरलैं भागा।**

भाव :—सत्य ही जब पिता अपनी पुत्री को अपनी छत्र-छाया से विलग करता और माता अपनी गोद को सूनी करती है तो वह दृश्य दाह्य होता है। यह कैसी दाव की चिन्गारी होती है जो सारे शरीर को जला देती है। इस प्रकार इस पद्यांश में वह वर्णित किया गया है। बारात के जाते समय पिता घर की सीढ़ियों पर विलख-२ कर रहा है। माता बराण्डे में वियोग का गाना गा कर रो रही है परन्तु देई डोली से सन्तोष दे रही है कि पश्चाताप मत करो मेरे बुरे तथा अधूरे भाग्य हैं।

**देई रोआ डोलू का, इजी रोआ चाऊली आगा।**
**रोई ने ईजीए तू, मेरै अरलैं भागा।**

भाव :—पिता के घर को देख कर देई अति दुःखित हो जाती है। देई को वि[illegible] करते हुए माता घर के आंगन में रो रही है। उसी प्रकार देई डोली से बिलख-२ कर रो रही है परन्तु दोनों की मिश्रित ध्वनि यह भी कि अब शोक मनाने से लाभ नहीं। संयोग और वियोग के दो पक्षों से ही जीवन बना है। अतः वियोग ने ही मनुष्य के भाग्य को अधूरा बना डाला है।

**बाबूओ नागरू, दूरा का धीशा भरेरन।**
**लोभ लागा बाबूआ, जेभी नगरू तेरअ हेरअ।**

भाव :—वही दशी कन्या अब विवाहित जीवन में प्रवेश कर गई है। अपने माता-पिता के त्याग से वह उदासीनता अनुभव कर रही है। ससुराल के घर कदम-२ पर उसे वह पिता की नगरी जहां उसने बचपन की अठखेलियां खेली थी अब याद आ रही है। अतः वह इस पद्यांश में उस दुःख को अति असह्य प्रकट कर रही है। वह कहती है, "हे पिता अब वह तेरी छोटी सी बचपन की प्यारी नगरी दूर से ही देखनी पड़ रही है। अब तेरी नगरी सचमुच ही निराली लग रही है। इसे देख कर मन में अति लालच और चाव पैदा होता है।

**हेरी बोला हेरिया, आखी फिरा झिलरी राती।**
**भाई नेहड़ू आपणे, सेऊआ लूहरी बाती।**

भाव :—वही गांव की लड़की दशी कन्या अब ससुराल के घर देई के नाम से रह रही है। वह अपने मायके के घर के रास्ते को नित्य प्रति निहारती रहती है उसे अपने भाई की इन्तजार है। सतलुज नदी के उस पार कोटगढ़ में उसका ससुराल है। सतलुज की दूसरी ओर कुल्लू में उसके मायके का गांव है। लूहरी कस्बे का पुल इन दोनों को परस्पर मिलता है। अतः देई की आंखें लूहरी पुल के ऊपर लगी हुई हैं। वह अपने भाई का इन्तजार कर रही है।

**जोथा बोलू दाईए, बड़ा करू आसरा तेरा ।**
**लोगे एऊ देशा दी, जिऊ दुश्रासिया मेरश्र ।**

**भाव :**—देई का दिल अपने पति के घर में नहीं लग रहा है। उसको वह गांव एक प्रकार का परदेस ही लग रहा है। उसे माता-पिता और भाई-भाभी की याद आती रहती है। इस प्रकार उसका हृदय अति दुःखित है। अतः वहां पर वह चान्दनी को अपनी सहेली बनाती है। इस पद्यांश में वह चान्दनी को कहती है, "हे बहिन चान्दनी मुझे इस परगने में तेरा बहुत आसरा है। इस प्रिय के देश में मन नहीं लग रहा है। यहां पर मैं उदास ही रहती हूं। मुझे यहां पर दिन व्यतीत करना कठिन हो गया है।

**कुआ नहीं क्रष्टा, कश्रा नहीं अरले भागा।**
**चन्दरा सूरजा बी, गैणी ग्रहण लागा।**

**भाव :**—देई नव दुल्हिन के रूप में अपने दिल को इस पद्यांश द्वारा सन्तावना देती है। अतः वह कहती है, "इस संसार में कौन सुखी है। यहां किसी भी व्यक्ति के भाग्य पूर्णता को धारण नहीं किए हैं। भाव यह है कि इस नाशवान संसार में प्रत्येक व्यक्ति दुःखी है। प्रत्येक व्यक्ति के भाग्य अधूरे हैं। गगन में चन्द्र और सूरज अति प्रकाशमान हैं। वे जग को अन्धेरे से उठा कर प्रकाश में लाते हैं परन्तु वे भी पूर्ण नहीं हैं। उन्हें भी ग्रहण आकर ग्रसित करता है। उस समय उनकी सभी शोभा धूमिल हो जाती है।

**भोलेआ बाबूश्रा, भोली ती तेरी बताई।**
**देश हांउश्र ते मुल्का, बुरें डाई शाहूरे पाई।**

**भाव :**—ससुराल में सत्य ही देई का जीवन अति नीरस हो गया है। वह उस घर को शून्य ही अनुभव कर रही है। उसे आरम्भ में वहां कोई आकर्षण और आनन्द नहीं आता। अतः वह पिता को भोले-भाले की संज्ञा से विभूषित करती है। हे, पिता आप कितने भोले-भाले और निष्कपट हैं। आपने देश-विदेश देखा परन्तु आपने मुझे ससुराल अच्छा नहीं ढूंढा। क्या अच्छा होता यदि आप मेरी शादी ही न करते।

**बाबूए देशा का, काल ने आन्दश्र काश्र।**
**होर बाबूआ रांवलश्र, भाई ने धर्मो पाऊ।**

**भाव :**—देई ससुराल के उस अनचाहे और अनजाने देश में अपने आपको अकेले महसूस कर रही है। वह सदैव मायके से किसी न किसी का इन्तजार करती रहती है। परन्तु जब उसे निराशा उत्पन्न होती है तो कहती है, "मायके के घर से कोई काला कौआ भी नहीं आता है। हे पिता वैसे आपने सभी कार्य ठीक किए, परन्तु इस देश में आपने विवाह के समय मेरा कोई धर्म भाई भी नहीं बनाया। जो यहाँ पर मुझे धीरज दिया करता और मेरा दिल बहलाया करता। मुझे यहां कोई भी अपना नहीं लग रहा है।

**भाभी शोभा विन्दली, भाई शोभा रातली पागा।**
**बाल़ै लोड़ी मरूअ, शुणै मेरै देऊआ नागा।**

**भाव** :—देई ससुराल के घर में रह कर भी भाई और भाभी के आलौकिक प्रेम नहीं भुला सकती। भाभी और उसका वह दिव्य प्रेम उसे कभी-२ झझकोर देता। अतः इस पद्यांश में वह व्याख्या करती है, "मेरी भाभी माथे की बिन्दिया के समान सुन्दर है। उसका स्वभाव भी सुशील है। मेरा लाल पगड़ी वाला भाई भी सौम्य सुन्दर है। हे देव इस वियोग से मृत्यु ही भली है। ताकि इस प्रकार के दुःख से छुटकारा सके।

**दाघ दे भाईया, रातअ हेरे मसरू पाई।**
**बेशी गए तू श्रेणै, बागरी हेरे लाई।**

**भाव** :—भाई-बहिन का या बहिन-भाई का अगाध प्राकृतिक प्रेम कैसे सकती है। वह मृत्यु पर्यन्त जीवित रहता है। इसलिए देई कहती है, हे भाई यदि मैं जाऊं तो मेरे मृत शरीर को भी तूने ही जलाना। मृत शरीर पर लाल कपड़ा भी तूने डालना। मरते समय तू मेरे सिरहाने अवश्य ही बैठना और सांस छोड़ते समय मेरे शरीर ठण्डी हवा देना।" देखें बहिन को भाई से कितनी आशाएं हैं।

**पलागिए धारा का, जोड़ी घूमै नगारै।**
**भाई आम्र घोल़ै गातैं, झागा ता शोभले म्हारै।**

**भाव** :— देई आज प्रसन्नता के गहन सागर में गोते लगा रही है। उसे आज प्रसन्नता प्राप्त हुई उसका कोई पारावार नहीं है। क्योंकि उसका भाई अतिथि बन आने वाला है। पलाणी गांव की उस धार पर जो उसके ससुराल के घर से सामने दृष्टि गोचर होती है उसका भाई घोड़े पर चढ़ कर आ रहा है। उसके साथ नगाड़े आदि पहाड़ी बाजा भी है। देई आज अपने भाग्य की सराहना कर रही। वह अति सुख अनुभव कर रही है।

**भाई ता मेरल़, कांढेओ जेह बनाल़ा।**
**गाची का नांदल़, मुहां दी सूरजे झाल़ा।**

**भाव** :—देई अपने भाई की बहुत प्रशंसा करती है। अतः वह उसकी प्रशंसा में कहती है, "मेरा भाई इतना सुन्दर है जैसे कि ऊंचे पर्वत पर पाया जाने वाला मनाल पक्षी सुन्दर होता है। इस मनाल पक्षी की सुन्दर सिर की चोटी सौंदर्य हेतु टोपी पर लगाई जाती है। इसे कलगी कहते हैं। मेरा भाई कमर से कुछ पतला है परन्तु मुख पर सत्य ही सूर्य की किरण जैसी चमक है।

**जोथे हांडू झमके, बिजली हांडू झमाकै।**
**तेरे हाड़ू आसर, सिरी रामा रै तपै।**

**भाव :**—अब दशी कन्या समझ गई कि मैं देई के नाम से अपने जीवन को परिवर्तित कर चुकी हूं। अब वह अपने पति से यह प्रतिज्ञा करती, हे पति मैं आपकी छत्र-छाया में बैठ कर चान्द की रोशनी में कार्य करूंगी। बिजली के प्रकाश में भी निज कार्य में व्यस्त रहूंगी। आज से मैं आपका आश्रय जीवन के कदम-कदम पर स्वीकार करूंगी। आपका आश्रय मेरे लिए राम की भान्ति है।

**नाला नालिए कुंगशी, सदा हरिए हरी।**
**बाबू स्याणूअ, मूं लागी बाबूए झूरी।**

**भाव :**—देई को अपनें माता-पिता की स्मृति निरन्तर आती रहती हैं। उसके माता-पिता बूढ़े होने जा रहे हैं। यह बात उसके लिए एक दुःख का कारण बन गई है। अतः वह इस पद्यांश में कहती है, "नाले की कुंगशी सदा ही हरी-भरी रहती है। परन्तु मेरे माता-पिता अब उस हरी-भरी कुँगशी के समान नहीं हैं। ये बूढ़े होते जा रहे हैं। यह चिन्ता भी मुझे असह्य है। कितना अच्छा होता यदि मेरे माता-पिता भी उस नाले की कुँगशी के समान सदा हरे-भरे रहते।

**एक भाई शिमलै, दूजअ हरिदुआरै।**
**भाभी रूझी पेऊकै, कुणना मेरे सम्भाले।**

**भाव :**—देई स्त्री के दो भाई हैं। दोनों घर से बाहिर रहते हैं। देई चाहती है कि मेरे भाई मेरे ससुराल के घर आते और मेरे अकेलेपन की उदासी को दूर करते। परन्तु भाई कैसे आएं। वह घर से बहुत दूर शिमला में और दूसरा उससे भी दूर हरिद्वार में रहता है। देई की भाभी अपने मायके अतिथि बन कर गई हुई है। अतः मायके के घर में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो देई की पूछ-ताछ करने आ सके। अब मुझे इसी प्रकार दिन व्यतीत करने होंगे।

**देउआ दुआशिया, तेरअ ता मैहरअ कालअ।**
**तेरी आई जातरा, भाई र आअ पाल़।**

**भाव :**—यह अंग्रेजों के समय के विषय में भावपूर्ण पद्यांश है। भादों का महीना है। दलाश गांव में एक प्रसिद्ध मेला इसी मास में आता है। देई स्त्री को यह पूर्ण विश्वास था कि इस मेले के लिए मेरा भाई अवश्य ही मेरी देखभाल करने आएगा। मैं जी भर कर उसे मिलूंगी। परन्तु मायके से पता आया है कि तेरा भाई अंग्रेजों की डियूटी कांगड़ा जा रहा है। अतः वह मेले में आने से असमर्थ है। देई इस संदेश को सुन कर हताश हो गई। वह मन ही मन सोचने लगी कि कैसा अच्छा होता यदि हम गुलाम न होते। यदि स्वतन्त्र होते तो भाई अवश्य ही मेले देखने आता।

**भाता बोला चाणिश्रा, पिछ हेरणी खाई।**
**देऊश्रा बोलू दुश्राशिश्रा, वरा मांगदी श्राई।**

**भाव :**—देई का विवाह बहुत पहले हो चुका था। परन्तु अभी कोई सन्तान नहीं है। अब सूनी गोद उसे अच्छी नहीं लग रही है। वह अपनी गोद में आशा-दीप चाहती है। अतः उसने घर में चावल बनाए। उसका मीठा भोग ले कर वह देव मन्दिर गई। देई वहां जा कर भोग चढ़ा कर वर मांगने लगी। उसने देव से पुत्र की याचना की।

**श्रागी ने हांडणू, ढंक लागा ढीवरे डरा।**
**पिछी हांडणू सड़की, धीशा बाबूओ घरा।**

**भाव :**—देई कार्यवश वन को गई हुई थी। उसकी सहेली भी उसके साथ थी। वन से घर आने के दो रास्ते थे। एक रास्ते से देई के मायका का गांव दृष्टिगोचर होता था। परन्तु दूसरे से उसका बचपन का घर नहीं दिखाई देता था। देई अपनी सहेली को कहती है, "हे सहेली हमने नीचे के रास्ते से होकर नहीं जाना है। क्योंकि इस रास्ते में ढंकार और तालाब आते हैं। अतः हमें पार करते हुए डर लगेगा। हमें ऊपर के रास्ते से जाना चाहिए। क्योंकि ऊपर के रास्ते से मेरे पिता का घर भी दिखाई देगा।" अब जरा सोचें कि उस नव-वधू का मायके के घर से कितना लगाव है, एक मात्र देखने से भी उसका दिल शान्त हो जाता है।

**बासा ले भाबरी, शोभा लै श्रापणो भाई।**
**थोड़ी जेही भीणका, जौंए डाई पापीए लाई।**

**भाव :**—यकायक देई पर एक मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। उसे सूचना मिली कि उसका भाई स्वर्गवास हो गया है। अतः वह सूचना सुन कर शोक सागर में डूब गई। इस पद्यांश में कहती है कि, "जैसे सुगन्धी के लिए भावरी का सुन्दर फूल होता है। उसी प्रकार शोभा के लिए अपना भाई होता है परन्तु इस शोभा के साथ मृत्यु ने कैसा विचित्र खेल खेला है। वह इस शोभा को क्षण भर में मृत्यु में मिला देती है।

**नदीए खाटलै, भाई भरा नरेला।**
**छेकअ करे भाईश्रा, घरे लाई बालकै लेरा।**

**भाव :**—देई को अपने भाई की मृत्यु की याद दिन-रात सताती रहती है। क्योंकि यह उसे दुःख-पूर्ण और असह्य बन गई है। इस प्रकार एक रात्रि को उसे एक अजीब सा स्वप्न दिखाई दिया। वह स्वप्न में देखती है कि उसका भाई नदी के किनारे हुक्का पी रहा है। अतः वह अपने भाई को स्वप्न में ही बुला रही है कि शीघ्र ही घर आ जा। तेरी याद में तेरे बच्चे तथा पत्नी जोर-२ से चिल्ला रहे हैं।

**तेरै तिना बालके, मूं ने रही रहणी चीन्दा।**
**पोरू नाए घरा लै, मूं ग्रास जोंओ वृन्दा।**

**भाव :**—उसी स्वप्न में मृतक भाई की देह देई के उस प्रेमपूर्ण निमन्त्रण का उत्तर दे रही है, "हे बहन ! मैं अब घर आने वाला नहीं हूं। तेरे उन बालकों की अब मुझे कोई चिन्ता नहीं रही। अतः तू अब घर चली जा। भविष्य में मेरी स्मृति कभी न करना। मैं अब सदा के लिए विलग हो गया हूं। अब धर्मराज के यमदूत मेरे संगी और साथी बन गए हैं। मैं अब किसी भी मूल्य पर वापिस आने वाला नहीं हूं।

**दाई लै बोलणू, सानै ने निकली खलै।**
**मुएं ने आदमी, हामै ने ग्रांदै घरै।**

**भाव :**—स्वप्न में ही देई को ऐसा अनुमान हुआ कि उसका भाई उसे निराशा भरे शब्दों में कह रहा है कि हे बहन अब भविष्य में मेरी चिन्ता से कभी न जलना। मेरे वियोग का भूल कर भी शोक न मनाना। तुम्हें यह बहुत ही लाभदायक होगा यदि तुम मुझे दिल से भुला दो। रात को बाहर न निकलना। हम मरे हुए मनुष्य अब घर नहीं आते। अतः व्यर्थ में रोना धोना और विलाप करना केवल एक मात्र स्वास्थ्य को नष्ट करना है।

**दुःखा लै लामणू, सुखा लै गा तै गीता।**
**सुख ने भाऊआ, माइए उदरा बीता।**

**भाव :**—देई का स्वप्न अब टूट चुका था। वह चारों ओर वही सूनापन देखती है। वह अपने भाई को केवल स्वप्न में ही देख सकी थी। अतः वह इस दृश्य से अधिक चिन्तित हुई। अतः वह कहती है कि दुःख के समय में केवल दुःख गीत ही एक मात्र आश्रय होता है। सुख के समय सौख्य गीत मन को अति प्रफुल्लित करते हैं। हमें सुख सौरभ कहां मिल सकता। सुख सौरभ तो केवल मां के ही पेट में प्राप्त किया था।

**बिजीए गैणिए, जुगलू मुगलू तारै।**
**हामै करी आसर, तुमै हेरा गैणिए तारै।**

**भाव :**—आज देई को मौसम सुहावना और आकर्षक लग रहा है। गगन बिल्कुल साफ है। इस अन्धेरी रात में अम्बर के तारे चमकते हुए मन-मोहक लग रहे हैं। इसी प्रकार मेरा जीवन भी अन्धकारमय जीवन है परन्तु यह जीवन पति के कारण अति शोभायमान है। जैसे अम्बर के तारे गगन को प्रकाशमान करते हैं उसी प्रकार मेरा जीवन मेरे पति के कारण उज्जवल है। इस समय यही एक मात्र आश्रय है।

**लंघी हेरी धारटी, लघी हेरी मगरू गही।**
**जैबे लंघी धारटी, दाह ने दर्दा रही।**

**भाव :—**एक दिन देई को एक अन्य मुसीबत ने आ कर घेरा। उसका पति घर बाहर चला गया। वह बहुत समय तक घर नहीं आया। अतः वह इस पद्यांश में व्याख्या करती है, "मेरे पति ने इन चारों ओर के पहाड़ों को लांघ लिया है। जब वह इन पहाड़ों लांघ लेते हैं तो उन्हें घर की कोई परवाह नहीं रहती। पति देव की बड़ी अजीव भावना जो देई को असह्य है।

**धारा गाहै देहूरू, देऊरू गाईए धजा।**
**मन लागा मारणू, आपी देश्रा नारण सजा।**

**भाव :—**उस ऊंचे पहाड़ के टीले पर देव मन्दिर अति सुसज्जित है। देव मन्दिर पर जो ध्वजा है वह इसे और अधिक शोभायमान कर रही है। इसी प्रकार यदि पति देव घर की चिन्ता कर लिया करें तो अवश्य ही घर प्रगति को ओर जाकर समृद्ध बनेगा। इस प्रकार वही समृद्धि घर पर देव मन्दिर की ध्वजा का काम करेगी। अर्थात घर की इज्जत बनी रहेगी। यदि वे लापरवाह बने रहे तो स्वयं ही भगवान लापरवाही का दण्ड देंगे।

**धारा गाहै देऊरू, देऊरू गाइश्रो आण्डश्र।**
**माणू ने ठगणू, माणू पाणिश्रो भाण्डश्र।**

**भाव :—**पद्यांश से लगता है कि देई के पति ने उससे कोई ठगी की है। ठगी ऐसी थी कि पति कहीं कार्यवश जा रहा था। उसने शीघ्र ही लौटने का वायदा किया था, परन्तु खेद की बात है कि वह अभी तक नहीं लौटा। पति के आने पर देई पति को कहती है, "उस देव मन्दिर की छत पर वह सोने का अण्डा कितना अच्छा सज रहा है। इसी प्रकार नारी जीवन भोलेपन से सुसज्जित है परन्तु तुम जैसे छली मनुष्य इस भोलेपन को छल लेते हैं। अतः नारी को नही ठगना चाहिए। नारी हृदय पानी के बर्तन के समान साफ होता है।"

**सोचिया–सोठिया, मने लागी हिकड़ी फूटी।**
**दिलें लागी कोरशी, बूट लागश्र गोधा का चूटी।**

**भाव :—**देई अपने पति की लापरवाही के प्रति नित्य प्रति उदासीन रहती है। अतः देई इस पद्यांश में कहती है, "मैं तो सोच सोच कर थक चुकी हूं। हृदय के अन्दर का भाग सोचते हुए फट रहा है। शरीर दिन प्रतिदिन क्षीण हो कर दुर्बल हो रहा है। जैसे पौधे को कीड़ा लगता है। कीड़े पौधे की जड़ों को काट डालते हैं। इस प्रकार वह पौधा समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार मेरी मृत्यु चिन्ता रुपी कीड़े द्वारा होगी।

**छोटी बजी कैली, लामी बजुई रंई।**
**थारश्र धीजश्र ने करणू, तुमैं शोटा बहुंदी नेई।**

**भाव :**—देई के मन में पति के लिए आदर्श स्थान नहीं रहा। सम्भव है इसका कारण पति का छल है। यह अब भविष्य में अपने पति का विश्वास नहीं करेगी। वह अपने पति को कह रही है, "जैसे कायल का वृक्ष छोटा होता है उसी प्रकार आपकी बातें भी तुच्छ हैं। जिस प्रकार रई का पेड़ लम्बा होता है उसी प्रकार मेरी चिन्ता भी लम्बी होती जा रही है।" अतः मैं भविष्य में अब आपका विश्वास नहीं करूंगी। क्योंकि मुझे सन्देह हो चुका है कि आपके वायदे मुझे कभी बहती नदी में फैंक देंगे।

**बाला री पीपड़ी, खाणा लैंहश्रा चरेरी।**
**सान लागी पड़दी, आद श्रा इजीए तेरी।**

**भाव :**—देई का पति उसे दिन प्रति दिन झूठे आश्वासन दे कर उसे यकीन दिलाना चाहता है कि मैं एक सद्विचारों वाला व्यक्ति हूं। परन्तु देई को विश्वास नहीं आता। अतः वह इस पद्यांश मैं कहती है, "माता-पिता की बचपन की नसीयतें उस समय उपजाऊ खेत की मिर्च जैसी तीखी लगती थीं, परन्तु आज रात के आगमन होते ही माता-पिता की वे सभी नसीयतें याद आती हैं।" माता-पिता की बचपन की डांट फटकार सत्य ही अगामी जीवन में बहुमूल्य होती है।

**तेरी मेरी देईए, ढेका गाही री कुला।**
**तेरी शुकी जिन्दड़ी, मेरे शूकें बागा रे फूला।**

**भाव :**—देई अपने पति की सभी लापरवाहियों पर गहन चिन्तन प्रकट करती है। वह चिन्ता के कारण कांटा बनती जा रही है। अतः वह अपनी चिन्ता की तुलना एक बाग के माली से करती है। वह कहती है, "हे माली तेरी वह ढंकार पर चलने वाली कूल्ह टूट चूकी है, जिसके कारण फूल सूखते जा रहे हैं। उसी प्रकार मेरे जीवन को सिंचित करने वाली कूल्ह विकृत होती जा रही है। इस प्रकार मेरा जीवन रूपी फूल भी मुरझा रहा है।"

**हामैं ऊभूए, तमैं बांडो द्रुवा।**
**खाणी करो पीणी, काटो खूड़ा र रूबा।**

**भाव :**—अन्ततः देई पति के सभी कारनामों से तंग हो जाती है। देई को पति के चारित्रिक कारनामे भी पसन्द न थे। एक दिन ऐसा आया कि देई ससुराल के घर को छोड़ने पर ही तुली रही। अतः वह पति को कह रही है, "मैं अब आपके घर को छोड़ रही हूं। मैं मायके में ही अपना शेष जीवन व्यतीत करूंगी। आपने अब खूब खुशियां मनाना। यदि चाहो तो मेरा पाला हुआ बकरा काट कर खाना और खूब आनन्द उड़ाना।

**ऊझीए गेहरें, दुई ब्राघटू जोधें।**
**नैंण भरें ग्राशुए, हीकड़ू भरें झोधें।**

भाव :—देई जब घर को छोड़ने ही वाली थी तो उसके हृदय में माता-पिता व कई प्रकार की स्मृतियां याद आ गई। वह दुःख को भुलाने जंगल को चली जाती है वहां वह देखती है कि दो शेर अपनी दहाड़ से भयभीत करवा रहे हैं, परन्तु देई भयभी नहीं हुई। बल्कि इन दो शेरों की बहादुरी की तुलना अपने पति से करती है। तुलना करते हु उसके नयन में आंसू आ जाते हैं। इस प्रकार देई के हृदय का दुःख और अधिक तरंगित हुआ

**राची बाशा कुफू, धेली बाशुग्र काग्र।**
**एऊ देशा देआ डिगणें, देता का भागिग्रा दाअ।**

भाव :—जब देई अत्यधिक दुःखी होती है तो रात्रि के समय उसे बचपन का प्या पक्षी जो बसन्त ऋतु में बोलता है शब्द करता हुआ सुनाई देता है। रात इस प्रकार सोच सोचते कट जाती है। प्रातः हुई तो उसने कव्वे को काएं-काएं करते हुए सुना। अतः उ इस ससुराल के परगने को छोड़ने की ही ठानी। क्योंकि पति की अठखेलियों से उसे सा वातावरण कलुषित प्रतीत हो रहा था।

**लामणा गांदीए, लामणे लाए टलूणा।**
**तीदा गाए लामणा, जिदा का बाबू शूणा।**

भाव :—देई असमंजस में पड़ी हुई थी। वह सोच रही थी क्या प्रिय का घ छोड़ा जाए या नहीं। उसके कानों में माता-पिता की शैशव काल की नसीयतें भी याद आ रह थीं। इस समय में उसे एक ग्रन्य दुःखी नारी भी दुःख के गीत गाती हुई सुनाई दी। अत देई उस दुःखी स्त्री से कहती है, "ऐ दुःख के गीत गाने वाली दुखिया, कृपया इन गीतों क वहां से गा जहां से मेरे माता-पिता भी सुन सकें।

**पारा बोलू ग्रोरू, भाई कै मेरल़ ग्राग्र।**
**पेट तेरग्र ढीलल़, खाण कीदल़ी खाग्र।**

भाव :—जैसे ही वह उस दुःखिया से निवेदन कर रही थी तो उसने अपने मायके के रास्ते को देखा। उस रास्ते पर चलता हुआ उसे एक मनुष्य लगा। वह उस मनुष्य को एक टक निहारती रही। बहुत देर देखने के पश्चात् उसने उस पुरुष को पहचाना और कहा, "ऐ राह पर चलने वाले राही क्या तू मेरा ही भाई है। तेरा पेट ढीला क्यों है। क्या तूने कहीं पर खाना भी खाया या नहीं।"

**खाण खाश्र बेंहणी, पाणीए नाल्. री छोश्रा ।**
**कीजें पल्श्र खरअ तलें, कीलै तू एतरी रोश्रा ।**

**भाव :**—जैसे ही देई का भाई वहां पहुंचा तो उसने अपनी वहन देई को कहा, "मैंने रोटियां साथ लाई थी। मैंने रोटियां पानी के नलके के पास खाई। परन्तु मुझे तेरा स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ सा लग रहा है। तुझे क्या दुःख है जो तू इस प्रकार की रोनी सूरत बना कर बैठी है। देई ने अपने हृदय की चिन्ता का विस्फोट नहीं किया।

**रोपैं गाइए रोपड़्., तेता परंदैं कुला।**
**सुलै हांडे भाईश्रा, छेकै करे सभाला।**

**भाव :**—देई अपने भाई के आगमन से फूल की भांति खिली हुई थी। प्रसन्नता में इतनी डूबी थी मानों फूल जैसी हल्की हो। अतः वह इस पद्यांश में कहती है, "जैसे कूल्ह क्यार (सिंचित भूमि) की एक जान होती है। उसी प्रकार हे भाई तुम ही एक मात्र आश्रय है। अतः अब तुम घर जाओ। घर जा कर मुझे भूलना नहीं। मेरी कुशलता का पता शीघ्र ही लेते रहना।

**तमै जाणा लोगूश्रो, लीण्डा टुण्डा री जाई।**
**घुण्डी जेहो भराऊजा, सिंहा जेहै गिरजा भाई।**

**भाव :**—भाई के विदा हो जाने पर देई अपने पति को ठहाका मारती है। वह कहती है, "हे पति अब तुम समझ गए होंगे कि मैं किसी नीच घराने की लड़की नहीं हूं। जैसा आप मेरे विषय में सोचते थे आपका विचार गलत है। मैं किसी गए गुजरे की लड़की नहीं हूं। मेरे मायके का घराना बहुत ऊंचा है। हमारे घर के कुलाचार अति शुद्ध तथा मान्य हैं। मेरी भाभी गुड़िया जैसी सुन्दर और भोली भाली है। मेरा भाई शेर जैसा हृष्ट पुष्ट और बलवान है।"

**ढल़ी गेअ ढेकल्., ढूली गई नऊई परेशा।**
**दूर छूटी संगणी, दूर छूटश्र बाबूश्रो देशा।**

**भाव :**—भाई की विदाई के पश्चात देई अति उदासीन रहती है। वह इस पद्यांश में अपने अकेलेपन पर शोक प्रकट करती है। बरसात प्रारम्भ हो गई है। वर्षा जोर से होने लगी। अतः देई कहती है, "छोटे पहाड़ भी वर्षा के कारण गिर रहे हैं। चट्टानें भी गिर रही हैं। मैं भी एक पतित नारी हूं। मेरे गिरने का कारण मेरा आन्तरिक दुःख है। मेरे पिता का देश भी दूर है। मेरी सहेलियां भी दूर हैं। अतः मैं अपने दुःख को किसे सुनाऊं। सुनने वाला यहां कोई भी नहीं है।

**हासिआ – खेलिआ, दिलड़ू डाणें राजी।**
**मरी नाणू जंपरी, ताम्बें री ढोलकी बाजी।**

**भाव :**—जब देई को पति के घर उदासीनता ही प्राप्त हुई तो वह केवल भीरू ना ही नहीं बनी वल्कि उसने अपने आपको एक वीरांगना के शब्द से विभूषित किया। पद्यांश में वह कहती है, "मनुष्य को सदैव हंस खेल कर प्रसन्नता के साथ दिन व्यतीत क चाहिए। इस संसार में मनुष्य ने केवल चार दिन ही रहना हैं। इस क्षणभंगुर संसार मृत्यु अवश्यमेव ही निश्चित है। इसलिए यदि यमपुरी की यात्रा अवश्यमेव ही करनी होग तो फिर दुःख क्यों मनाया जाए।

**झरी ने मानणी, झरी दी लाणू झरेह।**
**झरी शोटणी झाखड़े, शाह डाणू पात्थरा जेह।**

**भाव :**—अब देई सदैव प्रसन्न रहने का प्रयत्न करती है। अतः वह इस पद्यांश व्याख्या करती है, "मनुष्य को दुःख या चिन्ता नहीं करनी चाहिए, बल्कि चिन्ता को मु में परिवर्तन करने हेतु साधन जुटाने चाहिए। ऐ मानव चिन्ता को जंगल में कंटीली झाड़ियों के बीच में फैंक दो। चिन्ता का मुकाबला करने के लिए सदैव मनुष्य को पत्थर दिल बनना चाहिए। तभी स्वास्थ्य रूपी धन शरीर रूपी मंजुषा में रह सकेगा।

**भाई ने आंदम्र, भाईए बहुटी आणी।**
**ओरु लागे आंदी, साजए बाई खांणी।**

**भाव :**—मास का जो प्रारम्भ का दिन होता है उसको पहाड़ी भाषा में साजा (संक्रान्ति) कहा जाता है। उस दिन भाई बहन को अपने घर रोटी खिलाता है। इसी प्रकार देई को छोटे भाई का सन्देश आया, "हे बहन मैं आपके घर नहीं आ सकता हूं। क्योंकि मैंने शादी की है, जिससे अनेक समस्याएं पैदा हुई हैं। अतः तू दूर से ही सन्देश द्वारा मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर ले और साजे (संक्रान्ति) का खाना खा कर चली जाना।"

**साजम्र दे लोगू ले, बाही देम्रा बैसम्र भाई।**
**तू ने बेई भाभीए, म्राण्डम्र डाए छापरे लाई।**

**भाव :**— खेद की बात है कि देई ने भाई के इस सन्देश को बहुत बुरा माना। क्योंकि वह स्वयं न आ सका। देई अपनी भाभी पर भी अत्यन्त क्रोधित हुई। अतः उसने भाई के सन्देश में कहा, "हे भाई तू संक्रान्ति का भोजन न देना। मेरा धर्म भाई मुझे साजे का भोजन दे देगा। भाभी को भी कहना कि तू उस एक दिन के भोजन से अमीरी तथा साहूकारी भोगना।

**काली काऊणी, ठीकरै केरणी ताती।**
**बागैं ने बखाणदी, भीतरा जलदी छाती।**

**भाव :**– देई अपने परिवेश से बहुत अधिक तंग आ चुकी है। अतः इस पद्यांश में वह व्याख्या करती है, "जिस प्रकार मिट्टी के बर्तन में काऊणी (अनाज का नाम) गर्म हो जाती है। वह भुन जाती है। उसी प्रकार मैं भी अपने परिवेश से जल भुन गई हूं। मैं अपने दिल के दुःख को बाहर लोगों के पास नहीं सुना सकती हूं। मेरे आंतरिक हृदय की वेदना को मैं ही जानती हूं कि कितने भारी दुःख से जल रही हूं।"

**आग जली शिमलै, फागूए निकल धूँआं।**
**गम्म मेरी छातीए, गम्मीआ कोए ने मुंअ।**

**भाव :**—अपने घरेलू दुःख में डूबी हुई देई वधू कहती है, "जिस प्रकार यदि शिमला में आग लगे तो उसका धुंआं फागू से दिखाई देता है। वही मेरी हृदय वेदना की अवस्था है। अतः वह अपने हृदय से कहती है कि तू प्रत्येक दुःख को सहन करके आज तक संसार में कोई व्यक्ति नहीं मरा।"

**जोथ लागी चानणी, लागी घणै कलैलैं।**
**चार धैलै घालणैं, हासी खेलिया लाणै।**

**भाव :**—देई परिवेश की चान्दनी रात का वर्णन करती हुई कहती हैं, "एक जंगल रात्रि के समय अन्धकारमय होता है। परन्तु जब प्यारा चन्दा चांदनी लेकर आता है तो वही जंगल शोभायमान और आकर्षक बन जाता है। इसी प्रकार यह जीवन भी हंसी और खेल रूपी चांदनी से शोभायमान और आकर्षक बन जाता है। अतः हमें हंसी और खेल में जीवन व्यतीत करना चाहिए।"

**धंलग्र दे उड़णैं, गैणी दे लागणे तारैं।**
**लोंगू दे बोलणै, संग ने चौलणी म्हारैं।**

**भाव :**—देई के परिवेश में कुछ इस प्रकार की समस्या है जो पति और उसके मध्य मध्य में रोड़ा बनी हुई है। सम्भवतः यह सभी बातें देई के पति की व्यक्तिगत ही होंगी। अतः वह अपने पति से कहती है, "जैसे गगन के टिमटिमाते तारे सुन्दर लगते हैं। उसी प्रकार हमने अपने जीवन को चमत्कृत करना है। हमें लोगों के बहकावे में पारस्परिक संबन्धों में मतभेद नहीं डालना है।

धैलै उडिआ, लाल लागै लुहाऊ।
ईजी चाणा पराऊला, भाई डेऊआ दाई स्वाहू।

**भाव :**—देई वधू अपने भाई के घर मेहमान बन कर गई थी। दिन ढल रहा था। सूर्य देव प्रिय लालिमा को छोड़कर डूब रहा था। माता अपनी दुलारी पुत्री को विदाई दे रही थी। अतः रिवाज के अनुसार उसने अपनी पुत्री को विदाई देने के लिए पकवान और देई के साथ उसके भाई को भेजा।

निंडिआ गुडिआ, चिखड़ू डाणू भढारै।
रोटी चाणे पातली, घिऊ दे पाणीए ढालै।

**भाव :**—देई कार्य में व्यस्त रहने की बचपन से ही अभ्यासी है। अतः उसने निंडाई गुडाई का कार्य उसी दक्षता से समाप्त किया। वह कार्य समाप्ति के पश्चात अपनी मां से कहती है, "मैं गोडाई के कार्य को समाप्त कर चुकी हूं। अतः अब अच्छे पकवान पका कर मुझे घी पानी की धार के समान देना।" ऐसी देई की आशंका है।

उभीए गैहरे, दुई कैथै दोगै।
हामै ने चुटदै, हामै चलाऊए लोगै :

**भाव :**—देई अपने पति को आन्तरिक हृदय से ही प्रेम करती है। परन्तु फिर भी कभी कभी घर में बोल चाल द्वारा मन मलिन हो ही जाता है। अतः देई कहती है, "हमारा जोड़ा जंगल के दो कैथे (कायल के पेड़ में फल) के समान है। परन्तु लोग हमारे प्रेम तथा एकता को देख कर प्रसन्न नहीं हैं। वे हमें दो देह एक प्राण में नहीं देखना चाहते। अतः वे हमारी एकता को समाप्त करने में प्रयत्नशील हैं।"

चाम्बश्र ने रोहणू, चाम्बे काआ चबीना।
पीपलै रोहे बूटी तू, करे मेरी गला रा यकीना।

**भाव :**—देई का यह पद्यांश संकेतात्मक और भावपूर्ण है। अतः इसे समझना बुद्धि-लब्धि को पूर्ण रूपेण झकझोरना है। देई अपने पति को कहती है, "हे पति आंगन में गहरा सुगन्ध देने वाला चम्बे का फूल न लगाना बल्कि धर्मानुसार पीपल का पेड़ लगाना जो मन की बुद्धि का प्रतीक है।" इस पद्यांश में बाजारु नटखटपन का कड़ा विरोध है। देई को गन्ध देने वाला बनावटीपन बिलकुल पसन्द नहीं है।

**घरा पोरू का, लागी खली कुआली।**
**इदी थारी मथरा नगरी, हामें चांकी जुबेए डाली।**

**भाव :**—यह देई का एक विरह पूर्ण पद्यांश है। वह इस पद्यांश में वर्णित करती है कि घर के साथ जो चढ़ाई है जैसे उसको चढ़ना कठिन है। उसी प्रकार मेरा इस घर में रहना कठिन हो गया है। यदि उस चढ़ाई को चढ़ना भी प्रारम्भ कर लो तो सांस फूलना आरम्भ हो जाता है। उसी प्रकार यदि मैं इस घर में रह भी जाती हूं तो मेरा सांस घुटता रहेगा। अत: अब मुझे यह अपनी प्रिय की मथरा नगरी अवश्यमेव ही त्यागनी होगी।

**हामें ता डेऊए, तमें बांडो द्रुबा।**
**सोलह बाजो बधाऊणै, काटी खाओ बाल् ओ रूवा।**

**भाव :**—आज देई दूसरी बार प्रिय के घर से त्यागपत्र देने जा रही है। अत: वह अपने पति से कहती है, "हे पति देव मुझे आपका व्यवहार अब असह्य ही लग रहा है। अत: मैं अब मायके जा रही हूं। आप अवश्यमेव ही द्रुव लगाना और ढोल बजा कर प्रसन्नता मनाना। घर में बकरा काट कर उसे खा कर मेरा यह शोक जनक वियोग मेले के रूप में मनाना।

**मुकै लाए इजीए, एक लिहरू टिकअ।**
**दूरा र शाहूरा, मेरी कमाईए लिखअ।**

**भाव :**—जब देई मायके के घर पहुंचती है तो माता उसकी कुशलता के विषय में पूछती है। 'तू इस प्रकार अचानक क्यों आई' इसका भी कारण पूछती है। परन्तु देई बड़ी बुद्धिमान नारी है। वह माता को कहती है, "हे माता तू मेरे माथे को गोलाकार तिलक से सजायमान करती है परन्तु इसी माथे पर दूर का ससुराल भी विधाता द्वारा ही निश्चित है। अत: अचानक आने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।"

**रोटीए कील्टी, हामा लैं इजीए लाई।**
**जाई सबाऊंदा, वितअ धीशा आपणो भाई।**

**भाव :**—थोड़े ही दिनों में देई अपने मायके में ठहरी। किंचित कालान्तर उसका पति उसे घर ले जाने को आया। वार्तालाप के पश्चात देई पति के साथ घर जाने को तैयार हुई। माता ने देई को ससुराल भेजने की तैयारियां कीं। माता ने अच्छे पकवान किल्टी में डाल दिए और देई को विदा किया जा रहा था। परन्तु देई को एक अटूट मांग थी कि भाई को मेरे साथ ससुराल भेजा जाए क्योंकि बहन को विदा करता हुआ भाई ही अच्छा लगता है।

एक बात बिखली, दूजी बात न्यारी।
भाई बराबर बस्ता, किछ नहीं प्यारी।

**भाव :**—देई इस पद्यांश में भाई को एक पवित्र वस्तु बताकर कहती है, जीवन में सुख-दुःख और अच्छा बुरा दो रास्ते हैं। जब एक बहन इन रास्तों पर चल तो भाई का बहन के प्रति क्या कर्त्तव्य है। यह एक पवित्र और सोचने योग्य चीज है। इस संसार में भाई के समान कोई अन्य वस्तु नहीं है।" इस पद्यांश में देई मनुष्य को आलौकिक मार्ग दिखाती है। भाई पद की तुलना बहन के लिए एक अवर्णनीय वस्तु है।

भाईआ मेरआ, तेरं लोड़ी हुई बधाई।
मेरं आए नगरू, जूब देऊ टोपुए लाई।

**भाव :**—जब देई के ससुराल में वे दोनों पहुंचते हैं तो दूसरे दिन देई का भाई घर जाने को तैयार हो जाता है। अत: देई अपने भाई को विदा करती हुई कहती है, हे भाई तेरी गोद में एक सूर्य के तेजस्व को धारण करने वाला बालक खेले। उस समय मेरे घर अवश्य आना। मैं तेरी टोपी पर द्रुबा लगा कर तुझे बधाई दूंगी।"

तमं जाणा लोगूओ, सिथ जलखड़े चूटी।
मेरअ भाई शखशा, बहण बेला री बूटी।

**भाव :**—भाई के विदा होने पर बहन उदासीन हो जाती है। सम्भवत: इसका कारण भाई का वियोग ही था। परन्तु जब वह अपनी गांव की सहेलियों के साथ कार्य करने जाती है तो वह उन्हें कहती है, "आप क्या समझती थी। क्या मैं एक निःसहाय स्त्री हूं। नहीं, ऐसा न समझना। मेरा भाई एक बहादुर व्यक्ति है। मैं उसकी एक बेल की तरह बढ़ती हुई बहन हूं।"

तमं जाणा लोगुओ, सुखा लें लामणा गाए।
खरी आई शाह दी, शाह रबालूणं लाए।

**भाव :**—देई गांव के खेत में कार्य व्यस्त है। परन्तु यकायक माता-पिता और भाई-भाभी के वियोग का काला बादल उसे आकर घेरता है। वह विरह के गीत गाना प्रारम्भ करती है। लोग उसे कहते हैं कि आज तुझे क्या प्रसन्नता है जो इस प्रकार गाने में निमग्न है। अत: वह उन्हें कहती है कि तुम्हारी भावना के प्रतिकूल मैं उदास हूं। अत: दिल बहलाने के लिए विरह गीत गा रही हूं।

**उझीए गैहरैं, दुई सिहा रैं वाचैं।**
**दुए नाए नीमा लैं, दुए किए नारणै सचैं।**

**भाव :**—सत्य ही यदि इस पद्यांश को गहन दृष्टि से देखा जाए तो हृदय को छूने वाला है। यह संकेतात्मक तथा अति गहन भावपूर्ण है। घने जंगल में अहिंसक शेर के दो बच्चे थे। दोनों बच्चों में ईमानदारी के विषय में वैमनस्य हो गया। एक दूसरे से अपने आपको इमानदार बताने में लगा हुआ था। परन्तु जब वे भगवान के पास शपथ लेने गए तो दोनों सच्चे ही घोषित किए गए। भाव यह है कि यदि कहीं वैमनस्य पैदा हो जाए तो उसमें दोनों का दोष हो जाता है। कोई भी व्यक्ति यदि अपने को दोषहीन बतलाए तो वह ठीक नहीं।

**बिजीए गैणीए, जुगलू मुगलू तारैं।**
**घर हुंदैं जंपरी, चौऊ धैलू पाहुणैं थारैं।**

**भाव :**—देई इस पद्यांश में स्थायित्व पर प्रकाश डालती है। वह आकाश में तारों को चमकते हुए देखकर उनके स्थायित्व पर आश्चर्य प्रकट करती है। वह कहती है, "हम जगत प्राणी स्थाई नहीं है। इस संसार में हमारा घर केवल चार दिन का ही है। संसार में चार दिन का मेहमान बन कर हमें अपना नाम तारों की भांति चमत्कृत करना चाहिए।

**ढेका री मुंजीए, ढेका–ढेका दी श्रोलै।**
**म्हारैं एछें देशा लै, म्हारैं हुंदैं कुत्तैं बी भलैं।**

**भाव :**—इस पद्यांश में देई अपने देश की प्रशंसा करती है। वह अपने देश को एक अच्छा तथा सौंदर्यमय वर्णित करती है, "मेरा देश बर्फीले पहाड़ों वाला देश है। ढंकार पर ओले कितने आकर्षक हैं। ऐ मानव मेरे इस हरे भरे देश में आ और यहां का निरीक्षण कर। मेरे देश के कुत्ते भी भले और बफादार हैं। मनुष्यों का तो कहना ही क्या।

**चाकरू तितरू, जैं ने डाणैं बान्दी।**
**जुब माटी ने करणी, जैं श्रा पीछा खान्दी।**

**भाव :**—देई और उसके पति के बीच की समस्या का समाधान देई ने इस पद्यांश में बड़े आकर्षक ढंग से किया है। वह कहती है, "भोले भाले पक्षी को लोग बन्दी बनाते हैं। क्यों केवल आकर्षण के कारण। परन्तु यह अच्छा नहीं होता। यह आकर्षण से लगाव एक बहुत बड़ा अघात है। इसी प्रकार हे पति आप भी बात-२ में शपथ का आश्रय लेते हैं। इस प्रकार छोटी बातों में शपथ लेना अच्छा नहीं होता। मनुष्य को इसका पश्चाताप किंचित कालान्तर करना होता है।

**ढीकी आई हल्की, आई मुंगलै वारै।**
**कि सोठी इजीए, कि बावूए प्यारै।**

**भाव :**—पहाड़ में यह एक विश्वास है कि यदि हल्का डकार आए तो कोई निजी व्यक्ति उसके विषय में सोचता है। अर्थात् उस मनुष्य की याद की जाती है। मंगलवार है। देई को हल्का सा डकार आया। अतः वह कहती है, "आज मुझे अवश्य ने याद किया है।" तत्काल उसे माता-पिता की याद आती है। अतः वह कहने लगी मुझे माता ने याद किया है या पिता के प्यार ने स्मरण किया है।

**ने सोठी इजीए, ने बावूए सोठा दी पाई।**
**कनें सोठी भाईए, कनी ने बहणा आई।**

**भाव :**—देई की स्मृति ने दूसरे ही क्षण तेवर बदला। वह कहने लगी, "न ही माता ने और न ही पिता ने स्मरण किया है। सम्भव है कि मुझे मेरे छोटे भाई ने ही किया होगा। क्योंकि वह कुछ समय पूर्व ही मुझ से मिल कर गया है। उसने कहा था कि शीघ्र ही मायके आना परन्तु मैं नहीं गई। अतः वह सोचता होगा कि मेरी छोटी बहन अभी तक नहीं आई।

**ढेका गाहै ढेकलू, ढेका गाईए कुला।**
**घरा डाए यादी दी, बाहरी देखी ने भुला।**

**भाव :**—यह पद्यांश देई ने अपने पति को समझाने के लिए कहा है, "धार पर बहते हुए पानी की कूल्ह चल रही है। वह बहता पानी स्त्रोत को स्मरण करवाता है। इसी प्रकार हे पति तुम नर हो। तुम नौकरी करने घर से बाहर जा रहे हो। परन्तु आप सदैव ही मेरी एक बात स्मरण रखें। घर से बाहर कई प्रकार का आकर्षण मिलता है। परन्तु उनको देख कर कभी भी नहीं भूलना। घर को सदैव ही स्मरण रखना।"

**थालू घोंदी देइए, थालू घोआ चणूणी।**
**तैं बाजी कांढे का, मैं शुणी घरा री कुणी।**

**भाव :**—आज देई ने अपने पति की बांसुरी का नाद सुना। उसका पति नौकरी से घर आ रहा था। वह घर के एक छोर में खड़ी थी। उसके पति ने किसी ऊंचे पहाड़ से बांसुरी वादन किया। वह घर के कोने पर थालियां साफ कर रही थी। जब पति देव घर आए तो देई ने कहा, "आपने उस पहाड़ के रास्ते से बांसुरी बजाई। मुझे वह बहुत ही आकर्षक लगी। मैंने घर के कोने से ही आपकी बांसुरी वादन का रसास्वादन किया।

देवा ने उरी देवतैं, राजै ने उरी बजीरा।
जमां उरी पापी का, जैं लां छातीए तीरा।

**भाव :**—वही पति का बांसुरी वादन देई के लिए दुःख का विषय बन गया। बांसुरी का शब्द सत्य ही विरह का द्योतक है, क्योंकि कृष्ण-बांसुरी गोपियों के लिए जीवन-दाता थी। परन्तु वही बांसुरी विरह का रूप धारण कर गई। इसके साथ पति ने बांसुरी में लय भी दुःख-पूर्ण गीत की ही भरी थी। अतः देई पति को कहती है, "राजाओं के राज्य समाप्त हो जाते हैं। मन्त्रियों की तानाशाही भी नहीं रहती। परन्तु यमराज के यमदूतों का भय संसार में स्थाई है। उनसे ही डर लगता है। यह यमराज के दूत ही छाती में तीर लगाते हैं जो गहरे घाव का कार्य करते हैं।

आई गेम्र बाबूम्रा, हांडकू जेह बुआला।
एकी मना सोंठ ती, देऊ मांझी समुंद्रै छाला।

**भाव :**—देई ने पति को हृदय की आन्तरिक भावना को बताया। यही वेदना उसे उदासीनता की सीमा पर पहुंचा गई। अतः उसे भाई की मृत्यु स्मरण हो आई। वह कहती है, 'हे पिता जैसे अग्नि के ऊपर बर्तन में पानी का उबाल आता है। उसी प्रकार मेरे हृदय में दुःख का उबाल उमड़ पड़ा है। मेरा मन कहता है कि किसी गहरे समुद्र में डूब जाऊं ताकि इस दुःख-पूर्ण जीवन से छुटकारा मिल सके।

छाल ने देऊंदी, ईज़ा बाबूए उरा।
खरी काटू अऊकी, ज बचार खरा।

**भाव :**—जैसे ही देई के हृदय में यह विचार आता है तो शीघ्र ही इज्ज़त का पर्दा आच्छादित हो जाता है। वह कहती है, "मैं गहन समुद्र में भी छलांग नहीं दे सकती। क्योंकि माता-पिता, भाई-बहिन और आन-शान का ख्याल अवश्य रखना होगा। अतः इसी प्रकार दुःख-सुख और भय आदि विकारों को हृदय में ही सहन करना पड़ेगा।"

जीऊ झगाऊए, महीना सूतरो रेटू।
डालै शाची कुईए, केऊ हुन्दरै मेटू।

**भाव :**—देई को जिन विचारों ने घेर रखा है, वह घेरा एक समस्या का रूप धारण कर गया है। देई की समस्याएं जीवन में इस प्रकार उलझी हैं मानो एक सूत का लच्छा उलझन में पड़ गया हो। अब देई उलझाव में पड़ी है कि इस बारीक सूत के समस्या रुपी लच्छे को किस विधि द्वारा सुलझाया जाए।

धारा गाहै देहूरू, देहरू गाइए बेला।
जिऊ लागे जलदे, ताती कलाईए तेला।

भाव :—देई की व्यक्तिगत समस्याएं सुलझ नहीं रहीं। देई का वाह्य जीवन इतना सुन्दर और आकर्षक लग रहा है जैसे कि किसी पहाड़ पर देव मन्दिर हो और सौंदर्य जीवन रूपी देव मन्दिर के ऊपर वेल लिपटी हो। परन्तु यह आकर्षण वाह्य परन्तु उसका आंतरिक हृदय इस प्रकार जल रहा है जैसे कि किसी कुण्डी में गर्म तेल रहा हो।

धारटी ने वेशणू, धारटी पलदी चुटी।
एको मुंए मौती, एको हिकड़ू फूटी।

भाव :—देई का जीवन के विषय में चिन्तन अन्तिम पराकाष्ठा पर है। वह अपने जीवन की तुलना एक पहाड़ी से करती है. "पहाड़ी पर नहीं बैठना चाहिए। क्योंकि उसे गिरने का भय रहता है। इसी प्रकार इस संसार में कई तो मौत से मरे हैं और कई व्यक्ति हृदय की चिन्ता की चोट से मरे हैं। इस प्रकार इस संसार का भगवत विधान है।"

भीतरी बाभतै, बाहरी लाए नुआलै।
किदी रूझैं सें, मनकी बुझणे आलै।

भाव :—जैसे एक व्यक्ति शरीर में अच्छे-२ कपड़े लगा कर अपने आपको सजायमान करता है। परन्तु हिम आंचल की सर्दी उसे वाधित करती है कि बाहर गर्म कपड़े पहने। अत: देई कहती है, "हे भगवन उसी प्रकार उस व्यक्ति (पति) को आज विवश कर दे कि वे हमारे जीवन के सम्पर्क में आए और हमारी अन्तरात्मा की आवाज को पहचान सकें।"

खोला री बूटिए, शाणी गई पराणी।
भलै उड़ै सरगें, खोटै शाहटू खाणी।

भाव :—जब भगवान भी देई की आवाज को नहीं पहचान पाता तो देई स्व-जीवन को नीरस पथ पर ले जाती है, "हे अखरोट के वृक्ष तेरी टहनियां पुरानी हो गई हैं। अब इनके टूटने का भय है। ए वृक्ष तेरी इन टूटती टहनियों की भान्ति भले आदमी इस संसार से उड़ कर चले गए हैं। परन्तु हम जीवन को धारण किए हुए पापी लोग अपने हृदय की जलन से जल रहे हैं।

तू बी त जुल्फू, नाला धारा दा बांठी।
मूं आगे श्लाघिआ, बीती पा गाचीए गांठी।

**भाव :**—देई का पति सदैव ही देई के पास आत्म श्लाघा करता है। परन्तु आत्म श्लाघा करना मनुष्य का उचित चरित्र नहीं समझा जाता वह कहती है, "हे पति जिस ढंग से आप आत्म-श्लाघा करते हैं। लगता है आपको कपड़े में गांठ डालने का आर्ट अच्छा आता है। आप नारी जीवन को कितना तुच्छ और भोला-भाला मानते हैं।"

फूले भरी करंडी, लंगे भरी पटारी।
तेरी देखू शिकला, कैणी कै काटणी बारी।

**भाव :**—देई पति की आत्मा श्लाघा से निराश्रित है। इसका कारण यही है कि वास्तविकता पर अटूट विश्वास रखती है। अतः वह इस पद्यांश में कहती है, "लौंग पटारी में और फूल टोकरी में सज कर आकर्षित लग रहे हैं परन्तु हमारा जीवन ऐसा अधूरा क्यों है जो जीवन काटना ही दूभर हो गया है।

घीऊ सरूरश्र, दीनश्र ईजीए थोड़श्र।
लामी बजे धैलिए, काला हणू म्हार बछोड़श्र।

**भाव :**—देई अपने जीवन को आशापूर्ण तथा सरस बनाने के लिए अपने मायके चली जाती है। वहां वह सभी दुःखों को भूल जाती है। क्योंकि अपने माता-पिता की नसीयतें उसे कुछ आश्वासन देती हैं। परन्तु शोक की बात है कि वहां से वापिस आते समय उसे वियोग अपने बाहु-पाश में लेता है। अतः वह अपनी माता को कहती है, "हे माता आपने घी अधिक दिया है, परन्तु कल हमें वियोग रूपी सांप डसेगा। मैं उसे कैसे सहूं।"

शूनें किए श्रोवरू, शूनें किए माणुए घरा।
जश्रां बोलू पापी ले, जें म्हारी कुणीए चोरा।

**भाव :**—प्रकृति ने मानव के साथ भयभीत और आश्चर्य-जनक खेल खेला है। प्राणी को अस्थाई तथा क्षण भंगुर बना कर देई कभी-२ इस परमात्मा के खेल पर शोक प्रकट करती है। "यह मृत्यु कभी-२ मानव के घरों को खाली कर देती है। मृत्यु एक अन्धेरे घर के चोर के समान है। न जाने कब यह चोर आकर किस पर आक्रमण करता है। मनुष्य में क्षमता नहीं कि वह इस चोर के साथ युद्ध कर सके।

**धारटी पोरशा का, चेली वाशी टीशी।**
**भाई नीणू पालगी, भाभी रड़ा घीशी।**

**भाव :**—देई अपने भाई और भाभी को अपने घर आने का निमन्त्रण देती है। ... ने इस पद्यांश में अपनी भाभी के साथ एक आकर्षक परिहास किया है। पहाड़ी पर ... चिड़िया शब्द कर रही है। अतः देई कहती है, "ए चिड़िया तू मेरा सन्देश मेरी भाभी को ... जा, कि मेरे घर अतिथि बन कर आना। यदि तुम इस सन्देश पर नहीं आए। तो ... को पालकी पर उठा कर लाऊंगी और भाभी को पांव से घसीट कर लाऊंगी।"

**काथिए पोथिए, सिथ जलखड़ै पटणी।**
**ऐशकी बासती, करे आसरै खटणी।**

**भाव :**—देई को अब मुसीबत की एक अन्य समस्या आ खड़ी हुई। उसका पति (जुल्फू) घर से कहीं दूर नौकरी पर लग गया। अब यह वियोग भी उसे ग्रसित कर रहा है। वह खेत में कार्य कर रही है। काथी और पोथी जैसे घास की झाड़ियों को खेत से निकाल रही है। उसे गत वर्ष की याद आई। क्योंकि गत वर्ष उसका पति भी उसके साथ खेत में होता था। इस साल उसके साथ कोई भी दूसरा व्यक्ति कार्य में हाथ बंटाने वाला नहीं है। अतः वह अफसोस मना रही।

**नारकाण्डे सड़की, पार धीशा शलारूए सेरी।**
**गंई-गंई हांडणू, आद लागी आंदी तेरी।**

**भाव :**—सम्भव है कि देई का पति नारकण्डा से आगे शिमला में नौकरी कर रहा है। अतः वह कहती है, "उस नारकण्डा की पहाड़ी से सामने ही शिलारू के लम्बे-२ खेत दिखाई देते हैं। वहीं कहीं मेरा पति नौकरी कर रहा है। हे पति कदम-२ पर मुझे तेरी याद आकर सता रही है।" कैसी अजीब घड़ियां होतीं हैं वियोग के क्षण की !

**शेतअ त कुरतअ, शेतै साबणै धोअ।**
**पिऊणअ मुँहटू, काली हेरिए खोअ।**

**भाव :**—देई का पति जैसे ही नौकरी पर गया तो उसकी कुशलता का कोई भी संदेश नहीं मिला। अतः वह पति की कुशलता के विषय में अति चिन्तित है। वह इस पद्यांश में कहती है, "मैं प्रतिदिन साबुन के साथ अपने मुँह को साफ करती हूं। परन्तु मुँह में काला दाग दिन प्रति दिन प्रगाढ़ होता जा रहा है।" सम्भव है मुँह पर काला दाग पति की चिन्ता के कारण ही पड़ा होगा।

**तुलै–मुलै देईए, देशा दुनियो रेअ।**
**चाल पारा देशा लै, शीलै पाणू जंगलै डेरअ।**

**भाव :**—देई के पति को भी उस दूसरे परगने में देई की याद कदम-२ पर आ रही है। अतः उसे भूतकाल की स्मृतियां स्मरण हुई। वह इस पद्यांश में कहता है, "हे देई हमें देखकर दुनियां जल रही है। क्योंकि गांव के कुछ लोग हम में वैमनस्य पैदा करते रहते थे। अतः हमें यह गांव छोड़ देना चाहिए। दूर कहीं एकान्त स्थान में घर बनाकर रहना चाहिए। ताकि हमें शांति उपलब्ध हो सके। हमारा जीवन भी प्रेम युक्त बन्धन तथा सुचारु रूप से व्यतीत हो सके।

**गली गई पतिआ, गूड़ा री मीठी भेली।**
**मना रै करष्टा, कैणै की पतिआ झेली।**

**भाव :**—देई को समय की अधिकता के कारण पति-वियोग असह्य हो गया है। वह पति की याद करती हुई कहती है, "हे पति मैं हृदय से इस प्रकार गल रही हूं जैसे कि गुड़ की भेली गलती है। मैं इस पति वियोग के दुःख को कैसे सहन करूं। हे पति तुम ही इस असह्य दुःख का उपचार बताओ। ताकि मैं इस दुःख को सहन कर सकूं।"

**कोढ़ीए कैमटी, विला दी पलीऊटी।**
**पति का नगरी, धैली, धैलिए छूटी।**

**भाव :**—देई अब हृदय में समझ चुकी है कि हालात के अनुसार मेरे पति जूल्फू को नौकरी कराना परमावश्यक हो गया है। जिस प्रकार फलों से लदा हुआ नारंगी का पेड़ झुक जाता है। उसी प्रकार देई का विचार पक्का हो चुका है। अतः वह इस पद्यांश में कहती है कि पति से अब यह नगरी छूटती ही जा रही है। वह अब कभी–२ इस नगरी को आया करेंगे।

**लंघी हेरी घारटी, लंघी हेर उछट खाबअ।**
**इंदा पोरु पतिआ, देश बगैन लागअ।**

**भाव :**–देई चाहे घर में हो चाहे खेत में हो। वह प्रायः अपने पति के रास्ते को निहारती ही रहती है। जहां तक उसकी दृष्टि जाती है वहां तक वह देखती ही रहती है। परन्तु उसे वह पति का शहर दिखाई नहीं देता। जब वह देखते-२ थक जाती है तो वह अपने पति को स्मरण करती हुई कहती है कि यहां से आगे मेरी दृष्टि नहीं जा सकती वहां से आगे परदेश शुरू होता है। न जाने आप कहां पर रहते होंगे।

ऊंदी पलअ ग्राऊंटू, उभी पलअ गैहरो टापू।
आद आई प्रतिश्रा, दिलै श्राअ रोणैओ घापू।

**भाव :**—देई को पति की याद प्राय: आया ही करती है। वह अपने गांव के वातावरण को देखती है और जंगल के दालान को भी देखती है परन्तु उसके हृदय को कोई भी आकर्षण और सौंदर्य को नहीं भुला सकता। क्योंकि वह विरह की अग्नि में जल रही है अत: वह अपने पति की याद करती हुई कहती है कि हे पति जब मुझे तेरी याद आती है तो दिल रो पड़ता है।

आखी रैं ऐनका, छंटी काजला बीरा।
आंदा धीशा सोहणै, नांदा ला छातिए तीरा।

**भाव :**—इस पद्यांश में देई अपने पति के सौंदर्य का वर्णन करती है। मेरे पति जुल्फू की आंखें और उन पर चढ़ी ऐनक कितनी सुन्दर और लुभायमान है। मुंह की ठोडी अति सुन्दर है। जब मेरे पति नौकरी से घर आते हैं तो दिल प्रफुल्लित होता है। जब पति देव मुझे छोड़कर नौकरी के लिए जाते हैं तो उनका वियोग सत्य ही हृदय में तीर के समान चुभता है।

बीजोए गैंणिए, बादली मारा जालड़ू।
थारै नाए बैरी सै, म्हारै नाए छातीए जूड़ू।

**भाव :**—जब देई के पति सरकारी नौकरी पर लगे तो गांव में चर्चा आरम्भ हो गई। कोई कहता है कि प्राय: सभी मनुष्य नौकरी करते हैं। देई का पति कोई अनोखा नहीं है जो नौकरी पर गया है। अत: देई उन्हें कहती है, "आप चाहे कुछ भी कहें। सम्भव है आप उन्हें दुश्मनी की दृष्टि से देखते होंगे। आप वियोग को किंचित दृष्टि से देखते होंगे। परन्तु मेरे तो वे हृदय के पुष्पहार हैं।"

बसा दी देईए, आगू लाणै शीशै।
शैंई रहे शिमलै, म्हारी लोड़ी नदरी धींशै।

**भाव :**—देई के पति थोड़े दिनों का अवकाश ले कर आए थे। अवकाश समाप्त होने के पश्चात नौकरी के लिए बस पर चल दिए। "बस के चमकते शीशे पर मेरे पति नौकरी के लिए चले गए हैं। हम किसी प्रकार अकेलेपन के दिनों को व्यतीत करेंगे। हे पति आप शिमला में अवश्य ही रहो। परन्तु हमें वहां रह कर न भूलना। हमारी नजर में भी कभी आते रहना।" देई का भाव है कि मुझे सदैव हृदय में रखना।

**बुरश्र ने सोठणू, बुरश्र हश्रा द्रोही।**
**काला धैली मरिआ, बागे डाणी कैमटी रोही।**

**भाव :**—देई वधू मुमताज की भांति प्रेम को अमर करने की भावना रखती है। वह कहती है कि मेरा और पति का प्रेम अमर हो। इस प्रेम में किसी प्रकार का विश्वास-घात न होने पाए। अतः हृदय में प्रेम के प्रति बुरी भावना नही होनी चाहिए। अतः देई नारंगी का पौधा लगाती है और उसको ही प्रेम का अमर चिन्ह मानती है। अतः वह कहती है, "मैं इस नारंगी के पौधे को लगाती हूं। यही मेरे और पति के प्रेम का अमर चिन्ह है।"

**बागा दी कैमटी, कुणी द्रोहीए रोही।**
**काला धैली मरिश्रा, कैमटी पहरा ने कोई।**

**भाव :**—देई की भावना बड़ी आश्चर्य में डालने वाली है। इस पद्यांश में वह अमर-प्रेम के चिन्ह का रक्षक प्राप्त करना चाहती है। वह कहती है, "मैंने पति और अपने प्रेम को नारंगी के पौधे लगाकर अमर तो कर दिया है। परन्तु मैं मर जाऊंगी। अतः इसका पहरेदार और पोषक कौन होगा। यदि इसका पोषक न हो तो कोई भी व्यक्ति आ कर इसे बेकार जानकर नष्ट कर सकता है।" इस पद्यांश से जान पड़ता है कि देई सन्तान प्राप्त करना चाहती है। इस पद्यांश में मनुष्य प्रेम और मृत्यु का भी आलौकिक वर्णन है।

**ग्राऊंटू उभी, हरल्-भरल् बणा।**
**पोरकी मौजा, ऐशू नहीं वैशणे छणा।**

**भाव :**—गत वर्ष देई का पति घर में ही था। वह नौकरी पर नहीं था। गांव की लहलहाती हुई शोभा में वह इस वर्ष अकेले ही कार्य करती हुई झूम रही है। अतः वह कह रही है, "गत वर्ष मेरे साथ मेरे पति भी कार्य में हाथ बंटाते थे। उनके सम्पर्क में कार्य की अधिकता नहीं थी। हमने बसन्त ऋतु के आनन्द का रसास्वादन भी मिल कर किया। परन्तु इस वर्ष मैं वसन्त की बहार का रसास्वन अकेली ही कर रही हूं। अतः कार्य की अधिकता है। मुझे विश्राम करने का भी समय उपलब्ध नहीं होता।"

**उछटै टीबू दी, नशटै पाणी र सरा।**
**ढल माता टीबूश्रा, सीध धीशा देईश्रो घरा।**

**भाव :**—देई का पति भी उसके दर्शन के लिए लालायित है। वह शिमला के प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन करता हुआ कहता है, "जाखू का टिबा कितना सुन्दर है। नीचे रिज़ पर पानी का तालाब है। इसी टीबे के दूसरी ओर मेरी पत्नी देई रहती है। अतः ए पहाड़ी टूट जा ताकि में अपनी पत्नी देई के दर्शन कर सकूं।"

**अनाज पराणुअ, फुणा पांखली खाअ।**
**माणू पराणुअ, उगै चारदअ लाअ।**

**भाव :**—देई और जुल्फू का भावी जीवन किस सीढ़ी से गुजेरेगा। वह जीवन दर्शन इस पद्यांश से स्पष्ट होता है। देई कहती है, "यदि अनाज पुराना हो जाए तो उसे अनेक प्रकार के कीड़े खा जाते हैं। उसी प्रकार जब मनुष्य शरीर पुराना अर्थात बूढ़ा हो जाता है तो वह किसी काम का नहीं रहता। बूढ़े होने पर उसे डंगरों का ग्वाला बना देते हैं।"

**सदा नै शाऊणा, सदा नहीं नऊअ देशा।**
**सदा नहीं सदा लै, सदा नहीं बाली बरेसा।**

**भाव :**—देई ने जीवन को प्रकृति के साथ गठित किया। वह इस पद्यांश में कहती है, "सावन का महीना सदा के लिए नहीं रहता। वह उछलते हुए और गर्भित नदी नाले सदा के लिए नहीं रहते। इस संसार में देश भी परिवर्तनशील है। अत: संसार की कोई भी वस्तु स्थाई नहीं है। इसी प्रकार यह शरीर भी स्थाई नहीं है। अत: प्राकृतिक विधान के सम्मुख सभी को ही नतमस्तक होना पड़ता है।"

# तृतीय खण्ड

देई : घाटिए गइए, किलै लागअ सजना रोंदा ।
लिख ने टल्द, सूंच ने मना र होंदा ।

भाव :—इस पद्यांश में देई कहती है, "हे पति मैंने सुना कि उन पहाड़ों की गोद में तू मेरी याद में रोया करता है । आप शोक सागर में डुबकी क्यों लगाया करते हैं । क्या आपको पता नहीं कि यह प्राकृतिक विधान अचल और अमर है । मन में चाहे आप कितने ही हवाई महल बनाते रहो । परन्तु उन्हें पूर्णत्व देना परम-पिता परमेश्वर के हाथ में है ।"

जुल्फू : रैंड पाके रोयला, पाके पीपने दाणे ।
देईए पाके बागा दी, हामा नै मिलदे खाणे ।

भाव :—जुल्फू देई के उल्लिखित पद्यांश को प्रेम पूर्ण करने का प्रयत्न करता है । परन्तु यहां भी प्राकृतिक नियम अपने स्थान पर अचल है । वह कहता है, "हे देई आपके बाग बगीचों में बहार है । रैंड, रोयल और पीपन आदि सेब के दाने बगिया को सजायमान कर रहे हैं । हे देई इसी प्रकार तेरा जीवन रूपी चमन भी यौवन की अन्तिम पराकाष्ठा पर है । परन्तु तेरी बगिया के सेब मैं नहीं खा सकता । इसका मुझे अत्यन्त अफसोस है ।"

**देई : तेरश्र ग्रांऊंटू, बूटा जांदरी धीशा।**
**याद लागी ग्रांदी, ठाण्डे पाणिए चीशा।**

भाव :—देई ने भी अपने पति के पद्यांश का उत्तर देने में कोई त्रुटि नहीं। मेरा विचार तो यह है कि उसने बहुत चढ़ा बढ़ा कर ही अपनी आकांक्षा को व्यक्त किया। वह कहती है, "हे पति तेरा गांव चारों ओर से वृक्षों ने घेर रखा है, दूर से देखो तो यह वृक्षों के बीच से ही दृष्टिगोचर होता है। जैसे प्यास के कारण बेहोशी और निरुत्साह अनुभव करता है, उसी प्रकार मुझे तेरी स्मृति पागल बना रही है। जैसे गर्मी में ठण्डे पानी की प्यास लगती है। वही प्यास मैं तेरे दर्शन हेतु अनुभव कर रही हूं।"

**जुल्फू : ऊंदी पलंग्र शिमला, ऊभी बोलणू फागू।**
**अकेली मेरी जींदली, हुंदी दुनियां लागू।**

भाव :—देई का पति (जुल्फू) इस पद्यांश में अपने अकेलेपन को प्रकट करता है। वह शिमला में नौकरी करता है। अतः वह कहता है, "नीचे शिमला है, ऊपर फागू और बीच में मैं नौकरी कर रहा हूं। मेरा अकेला जीवन है। इस एकाकी जीवन के साथ दुनिया के कई लोग भी ईर्ष्या करते हैं। अतः हमें उनकी भी कोई परवाह नहीं करनी चाहिए बल्कि समय के अनुसार उन्हें उत्तर देते रहना चाहिए।"

**देई : नदी ने टपदी, बाल्अ दैन्ता सापा।**
**आरशा—पारशा, करा दिलड़ू मलापा।**

भाव :—देई और जुल्फू का प्यार विवाह के पूर्व भी अन्तिम सीमा तक पहुंच चुका था। दोनों परस्पर अगाध प्रेम करते थे। आज वही प्रेम व्यवहारिक रूप में परिवर्तित हुआ। देई अपने आप को एक नदी के एक ओर मानती है और जुल्फू नदी के दूसरी ओर है। उन दोनों के मध्य में जो दूरी है वह एक नदी है जिसे लांघना असम्भव है। अतः देई कहती है "ऐ पति इस नदी रूपी दूरी को पार करना मुश्किल है। सम्भव है कि इस नदी में मजबूरी रूपी मस्ताना सांप है जो हमें मिलने नहीं देता।"

**जुल्फू : दैन्ता सांप, मुंडकी शोटणी काटी।**
**नदी टपणी, हाथा दी लैणी लाठी।**

भाव :—देई का पति जुल्फू भी दर्शनाभिलाषी है। वह पत्नी से जी भर कर बातें करना चाहता है। परन्तु नदी और उसमें पाया जाने वाला फणियर सांप ही उनके प्रेम-मिलन में एक बड़ा रोड़ा बन कर हायल था। परन्तु देई के प्रेमी का गुस्सा अत्यधिक भयकर रूप धारण करता है। वह कहता है, "इस सांप का मैं सिर काट कर रख दूंगा। मैं हाथ में एक मजबूत लाठी लेकर इस अगाध नदी को अवश्य ही पार करूंगा।"

**देई : दंन्ता सांपा री, पूंजली शोटणी काटी।**
**तेरीतेंहीं पतिआ, श्राधो लागी जल़दी छाती।**

**भाव :**—विवाह के पश्चात नौकरी की वजह से पति घर को कभी-२ ही आता है। इसीलिए नौकरी को 'दंन्त साप' की संज्ञा दी जाती है। देई कहती है, "हमने यह नौकरी का बन्धन तोड़ देना है। अर्थात इस डसते सांप की पूंछ को काट देना है। हे पति मुझे जब-जब भी आपकी याद आती है तो छाती जलने लगती है।" यह बहुत दर्दनाक विरह गीत है।

**जुल्फू : सोची सौंठिया, हियें ने फल़टी लागा।**
**जैबै हामै जमें, तैबै लिखै अरलै भागा।**

**भाव :**—जुल्फू कहता है, "यदि हम गहराई से सोचने लगें तो हमें कोई नई राह नहीं मिल सकेगी। मैं इस नौकरी को छोड़ नहीं सकता। क्योंकि हालात के मुताबिक मुझे नौकरी अवश्यमेव ही करनी होगी। हे पत्नी जब हमने जन्म लिया था, उस समय विधाता ने इस प्रकार भाग्य में निश्चित किया था। वह भाग्य का लिखा अब अटल है।"

**देई : ठाण्डै गो पाणिआ, तूबी ता भरणू बाम्बें।**
**घीऊ दूधे पाहुणें, तुमैं किए हल़कै छान्दे।**

**भाव :**—देई अपने पति से अत्यन्त निराशित है। गर्मी में ठण्डा पानी इसलिए घड़े में रखा जाता है ताकि पानी ठण्डा ही रहे। मेहमान इसलिए अतिथि बनता है ताकि घी दूध उपलब्ध हो। अत: देई कहती है, "हे पति मैं आपकी मेहमान क्यों बनी। मेरे दिल की आशा को क्या वियोग सदैव ही जलाता रहेगा।"

**जुल्फू : धारा गाहें बूटिए, लामै दिनें झलारें।**
**श्रागू दे हाथड़ू, मेरे श्राणू पारें।**

**भाव :**—जुल्फू अपनी पत्नी को उत्तर में कहता है, "विरह अग्नि में केवल तुम ही नहीं जल रही हो। परन्तु मेरे हृदय की आन्तरिक अवस्था भी इसी प्रकार की है। आपका जीवन एक झूले सा है। ऐ झूले कृपया मेरा हाथ पकड़ो और मुझे अपने साथ ले जाओ। ताकि मैं भी झूल कर आनन्द ले सकूं। मुझे जीवन का वास्तविक पथ मिले।" इस प्रकार जुल्फू भी विरह वेदना में जल रहा है।

**देई : दाख पाकी शांघटी, केले पाकुई रसैं।**
**जैबै हुई खाणा लै, तैवै पड़ी लोगूए बशै।**

**भाव :**—देई अपने शरीर के सौन्दर्य का मूल्य नहीं जानती। वह इस चीज से अनभिज्ञ है कि उसके पति को यह एक अमूल्य निधि लग रही है। वह कहती है, "बचपन माता-पिता की गोद में बीता। उन्होंने लाड प्यार के साथ पालन-पोषण किया। परन्तु जब बड़ी हो कर कुछ कर सकने योग्य हुई तो प्रेमाकर्षण के कारण ही माता-पिता को छोड़ कर लोगों के घर आना पड़ा। जैसे प्रकृति केले और दाख का पालन-पोषण अपनी बहार से करती है परन्तु उसका रसास्वादन करने वाला कोई अन्य ही होता है। उसी प्रकार नारी हृदय के साथ समाज रूपी व्यापारी अन्यायपूर्ण व्यवहार करता है।"

**जुल्फू : देईए आखलू, जैणैं ते मरचे दाणैं।**
**मोलै तै महंगैं, सींधी केतरै खाणैं।**

**भाव :**—इस पद्यांश में जुल्फू को अपनी पत्नी देई एक सौन्दर्य की अनुपम निधि लग रही है। परन्तु वियोग असुर उसे ग्रसित कर रहा है। "देई की आंखें कितनी सुन्दर हैं, जो क्षण भर में मेरे पत्थर हृदय को आकर्षित करती हैं। काली मिर्च के दाने की भान्ति देई की आंखें हैं। परन्तु वियोग इस सौन्दर्य के मूल्य को अधिकाधिक मूल्यवान बना रहा है।"

**देई : खड़ी कुआलिए, लागी दोहरी धापी।**
**पीठी शाचअ किल्टू, पेटै शाचअ गर्भा पापी।**

**भाव :**—इस पद्यांश से दो बातों का ज्ञान होता है। एक बात तो यह है कि देई को कार्य की अधिकता है। दूसरी बात यह कि देई का आशा-दीप जन्म लेने वाला है। अतः वह व्याख्या करता है, "यदि पति होते तो वह कार्य में हाथ बटाते। परन्तु वह भी घर से दूर हैं। मुझे इस खड़ी चढ़ाई में चढ़ते हुए अति कठिनता अनुभव हो रही है। पीठ पर किल्टा है और पेट में गर्भ है।" इस प्रकार देई को पेट का गर्भ भी असह्य प्रतीत हो रहा है।

**जुल्फू : केलु ओ तगतअ, घूशिआ लाणू रन्दअ।**
**तेवा तैंहीं ने डरणू, जेवा तैंहीं जिऊंद बन्दअ।**

**भाव :**—जुल्फू (पति) देई (पत्नी) को एक आश्रय स्तम्भ है। वह देई को कहता है, "मैं मजबूत तख्ते की भान्ति तेरा अटूट आश्रय हूं। इस तख्ते पर केवल तीखे रन्दे को ही प्रभाव हो सकता है। उसी प्रकार जुल्फू जो एक मजबूत तख्ता है उस पर केवल मृत्यु रूपी रन्दे का ही प्रभाव हो सकता है। अन्य कोई भी संसारिक वस्तु उसे भयभीत नहीं कर सकती।" अतः वह देई को विश्वास दिलाता है कि जब तक मैं जीवित हूं देई को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

**देई : खड़ी कुआड़िए, फेटी लै भरणू ठेकअ ।**
**किजै करणू वेशिआ, घरा ले लागअ छेकअ ।**

**भाव :**—देई जब-२ थकावट अनुभव करती है तो आराम कर लेती है। क्योंकि गर्भवती स्त्री को चढ़ाई का रास्ता तय करना कठिन हो जाता है। ज्यों ही चढ़ाई समाप्त होती है तो वह विश्राम के लिए बैठ जाती है। विश्राम करते हुए उसे घर के अन्य कार्य स्मरण हो जाते हैं। इसलिए वह शीघ्रता से उठती है और समझती है कि बैठना बेकार है। क्योंकि मुझे घर में भी बहुत कार्य है। अतः देई का जीवन अति व्यस्त है।

**जुल्फू : तूबी हंदी देईए, माची खारकी डाली ।**
**धनी गए बैशी, शाहटू लैए रबाली ।**

**भाव :**—इस पद्यांश में जुल्फू देई का धैर्य बन्धा रहा है। जुल्फू कह रहा है, "हे देई तू अभी नव-युवती है। यौवन तुझ से स्पष्टतः झलक रहा है। इसलिए तुझे कार्य की अधिकता से अधीर नहीं होना चाहिए। युवावस्था में थकावट हैरानी नहीं कर सकती। अतः जब थक जाती है, तो विश्राम करना चाहिए। विश्राम करके हृदय को सान्त्वना देनी चाहिए।"

**देई : लोगा री जोइओ, चाअ ने करणू भाअ ।**
**सिर निआं काटिआ, घंपरू रिंगदे काअ ।**

**भाव :**—इस पद्यांश से लगता है कि देई अपने पति जुल्फू से कहीं अधिक प्यार करती होगी। वह प्रेम पथ पर चलती हुई कहती है, "दूसरों के सौंदर्य को देखकर कभी भी आपे से बाहर नहीं होना चाहिए। यह सदैव खतरे में डालता है। जो इस प्रकार से आकर्षण के वशीभूत हो जाता है उसका सिर धड़ से अलग ही समझना चाहिए। इस प्रकार के मनुष्य के मृत्यु का सन्देश केवल गरूड़ ही देते हैं। जबकि कहीं एकान्त में मृत्यु स्थल पर वे उसका मांस नोचना प्रारम्भ करते हैं।

**जुल्फू : लाठेए सुत्थणा, बाता बाहरी गंईं ।**
**देईए वरदा, हाड़ा-हाड़ा दी चंईं ।**

**भाव :**—जुल्फू देई को बहुत प्यार करता है। वह उसे संसार की प्रत्येक वस्तु से प्यारी है। वह संसार को धोखा समझता है परन्तु देई उसे निष्कपट और छलहीन अमूल्य निधि है। अतः वह कहता है, "लट्ठे का खुला पाजामा लगाकर गिरने का भय है। उसी प्रकार यह संसार छल कपट से भरा है। परन्तु देई का प्यार सच्चा और भावुक है।

**देई : तेरी तैंहीं जुल्फू, भागसू काढ़ू पीला।**
**घरै बेचू घरची, छापरैं बेचू शिला।**

**भाव :**—देई अपने पति पर किसी प्रकार की मुसीबत सहन नहीं कर सकती। वह कहती है, "हे पति यदि कोई दुश्मन आप पर आंख उठाए तो मैं उससे डट कर मुकाबला करुंगी। मैं उस दुश्मन के साथ भागसू (धर्मशाला) तक मुकद्दमा लड़ सकती हूं। चाहे मुझे घर को ही बरबाद क्यों न करना पड़े। परन्तु उसका पीछा नहीं छोड़ूंगी।"

**जुल्फू : तेरी तैंहीं देइए, नालै करू पुग्रालै।**
**धेली घालू जंगलै, राची फेड़ूए डालै।**

**भाव :**—जुल्फू का प्राकृतिक प्रेम भी देई के प्रति कम करिश्मा दिखाने को तैयार नहीं है। वह भी उसके जीवन के पीछे असह्य दुःख को सहन करने के लिए तत्पर है। वह कहता है, "हे देई अगर तुझे कभी पड़े तो मुझे अवश्य बता देना। मैं अपने जीवन को खतरे में डालकर उसे दूर करुंगा।" इस प्रकार जुल्फू के हृदय में देई के प्रति प्रेम भावना कूट-२ कर भरी पड़ी है।

**देई : धोगी लागी जातरा, आख लागी पार कराणै।**
**बिणा बुद्धिए आदमी, बिणा कूंजींए शाणै।**

**भाव :**—पुनः देई अकेलेपन (एकाकी जीवन) को प्रकाश में लाती है। धोगी गांव जो देई के गांव के निकट है, वहां पर ग्रामीण मेला पूरे यौवन पर लगा हुआ है। देई भी इस मेले के दर्शनार्थ गई हुई है। परन्तु उसकी आंखें कराणे गांव के उस बहुत ऊंचे पहाड़ पर लगी हुई है। क्योंकि इस पहाड़ की दूसरी ओर उसका पति रहता है। जैसे बिना चाबी का ताला बेकार होता है और बिना बुद्धि का आदमी उसी प्रकार बिना साजन के देई का जीवन इस समय अपूर्ण है।

**जुल्फू : धारटी बेशिआ, फिलै लागआ रोंदआ।**
**लिख ने टलदआ, सूंचआ ने मना र हुंदआ।**

**भाव :**—जुल्फू भी अपने एकाकी जीवन को डसता सांप जान कर कहता है, "मेरा जीवन अपूर्ण है।" आज रविवार का दिन है। जुल्फू एक पहाड़ी पर बैठ कर सोच रहा है। परन्तु सोचने से कुछ नहीं बना करता। मनुष्य जो कुछ भी सोचता है वह कभी भी पूर्ण नहीं होता, पूर्ण वही होता है जो भाग्य में निश्चित हो।

देई : पीतल़े भड़ूए, तेथ बुआल़णू भाता ।
जिदी लागम दिलड़ू, तिदी के पूच्छणी जातो ।

भाव :—इस पद्यांश में देई प्रेम की सीमा में बन्धित करती है। सत्य ही प्रेम
मस्ताना होना है। अतः वह कहती है कि यदि चावल पकाने हों तो उसके लिए केवल पीतल
का बर्तन ही उचित होता है। उसमें ही वह और स्वादिष्ट बनता हैं। इसी प्रकार प्रेम हेतु
भी उचित पात्र होना चाहिए तभी वह अच्छा लगता है। जहां प्रेम हो जाता है, वह स्थाई
रहना चाहिए। मनुष्य को उसकी सीमा से बाहर नहीं जाना चाहिए। उसी में मानव की
बुद्धिमता है।

जुल्फू : चीणा ती चिफली, नाई पन्दरा बाता ।
थोड़ी खोई नारणं, थोड़ी खोई आपणे हाथा ।

भाव :—जुल्फू के विचारानुसार प्रेम चीणा (अनाज) की भांति फिसलने वाला
नहीं होना चाहिए। वह भी इसे अन्तरात्मा की ध्वनि स्वीकार करता है। चीणा एक अनाज
का नाम है। वह छिन्न भिन्न हो कर इधर उधर हो जाता है। परन्तु प्यार उसकी तरह
नहीं होना चाहिए जो क्षण भर में ही फिसल जाए। वह मनुष्य जो प्रेम को रसानुभूति
मानता है नीच और मूर्ख होता है।

देई : नैं बुल़ी खदल़ी, निम्बल बुल़अ पाणी ।
तेरअ शूणअ चिजणू, मेरअ हआ लोहूओ पाणी ।

भाव :—जब सावन का महीना आता है तो प्रत्येक नदी अपने पूरे यौवन पर होती
है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि नालों का पानी गन्दा होता है परन्तु जब वह साग
के पानी से मिश्रित हो जाता है तो वह साफ दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार देई कहती
"हे पति जब आपकी शक्ल सामने आती है तो मन के सभी मलीन भाव दूर हो जाते हैं। जब
जब भी आपकी याद आती है तो खून का पानी बन जाता है।"

जुल्फू : घोड़े गाहे सिपाहिआ, ढीलअ छाड़े लगामा ।
चौऊ घंलि़ओ रस्तअ, एकी घलि़ओ कामा ।

भाव :—जुल्फू देई को कहता है, "ऐ देई तू जितना छोटा जीवन को समझती है
यह वास्तव में उतना छोटा नहीं है। एक सिपाही जिसका रास्ता घोड़े पर चढ़ कर चार
दिन का है। परन्तु अन्य लोग समझते हैं कि यह सिपाही घोड़े की लगाम को ढीली क्यों नहीं
छोड़ता। इसका रास्ता तो एक घड़ी का है। यह घोड़े को आराम क्यों नहीं देता। परन्तु
सिपाही क्षण भर को भी लगाम नहीं छोड़ता। क्योंकि ऐसा करने से घोड़े की चाल धीमी
हो जाएगी।" इसी प्रकार यह जीवन कार्य में व्यस्त है। परन्तु बहुत लम्बा है।

देई : ठाण्डेग्रा पाणिग्रा, निकल् बेसुए भोटे।
हाथा रे बचना, कुणी किए पापीए खोटे।

**भाव :**—पानी के सर के साथ सदैव ही बेमु का पेड़ होता है। न जाने पानी और बेमु के वृक्ष का यह सम्बन्ध किस जन्म जन्मान्तर से चला आ रहा है। इसी प्रकार देई कहती है कि जैसा सम्बन्ध पानी और बेमु का है वही सम्बन्ध मानव जीवन और हाथ से दिए वचनों का परस्पर होता है। जो हाथ से दिए वचनों से टल जाता है वह एक दुराचारी व्यक्ति होता है।

जुल्फू : ठाण्डेग्रा पाणीग्रा, आन्दा नान्दा पीणू।
इदी हुटग्र सभी का, चाकी ने कोई नीणू।

**भाव :**—जुल्फू देई को उत्तर देता है कि आदर्श की बातें प्रत्येक व्यक्ति को स्वीकार्य होती हैं। जैसे गर्मी में ठण्डा पानी अच्छा लगता है। मनुष्य उसके पास उतावला बन कर जाता है और उसे अमृत की संज्ञा से विभूषित करता है। क्योंकि वह उसे गर्मी से आराम देता है। इसी प्रकार आदर्श की बातें भी मनुष्य देह को शान्ति प्रदान करती हैं। संसार की कोई भी मूल्यवान वस्तु मनुष्य के साथ नहीं जाती बल्कि यहीं पर छूटती है। इसी प्रकार मनुष्य अपने साथ अपने किए हुए कर्मों का फल ही साथ ले जाएगा। कर्मों के आदर्श से वह इस संसार में भी अमर हो जाता है।

देई : शेती ती कुरती, ठानी चुग्रानिए बीड़ै।
झूठै दिनै बचना, पलै लोड़ कालजू कीड़ै।

**भाव :**—देई अपने पति के सैद्धान्तिक पक्ष को स्वीकार करती हुई कहती है कि कपड़े को वास्तविक रूप देने वाला दर्जी होता है। परन्तु जब कपड़ा कमीज़ की शक्ल में परिवर्तित हो जाता है तो अठन्नी चवन्नी के बटन उसे सजायमान तथा कार्य योग्य बनाते हैं। यदि कमीज़ में बटन न लगाया जाए वह कमीज़ किसी भी काम का नहीं होता। अतः इसी प्रकार झूठे वचन देने वाला और आदर्शहीन व्यक्ति बिना बटन की कमीज़ के समान बेकार होता है। वह सदैव समाज में निन्दित किया जाता है।

जुल्फू : दोतको सूरजा, लागग्र देईए माथै।
जैग्रा डालिग्रो ग्रासर, स ग्राई पठुईआ हाथै।

**भाव :**—प्रातः काल सूर्य निकल कर नित्यप्रति चमकता है। सूर्य की किरण किसको शोभा प्रदान नहीं करती। इसी सूर्य की किरण में मेरी देई का मुंह भी सौंदर्यमयी होता है। ऐ देई जिस डाली का हम आश्रय मानते हैं कि यह बड़ी हो कर फलित होगी। वह दाना जो इस डाली में लगेगा हमारा पालन पोषण करेगा। परन्तु यदि वह डाली फलहीन हुई तो पोषक मनुष्य को कितनी निराशा मिलेगी। यह वाक्य जुल्फू ने देई को संकेतात्मक रूप में कहे हैं।

देई जुल्फू

**देई : खड़ै दपहरैं, किदा लै जुल्फू नाग्र।**
**पाग घोई पाणिए, फूल कुईओ लाग्र।**

**भाव :**—एक दिन देई का पति जुल्फू अपने नए पहरावे में देई के सम्मुख आया। दोपहर का समय था। सम्भवतः जुल्फू की कहीं विशेष स्थान पर जाने की तैयारियां थी। अतः देई कहती है, "हे पति इस खड़ी दोपहर में आप कहां जा रहे हैं। आज आपका पहरावा भी अति सुन्दर है। इस नए पहरावे में आपका चेहरा चमक रहा है। धोई हुई पगड़ी पर यह कुई का फूल अति सुन्दर लग रहा है।"

**जुल्फू : देईए मेरिए, ज ग्रासा जाचा र बाणग्र।**
**मु ने जाणी नान्दल, मु ग्रासा नोख राणग्र।**

**भाव :**—जुल्फू देई को कहता है, "हे देई क्या तू इस पहरावे को देखकर हैरान हो गई। मैं तो इस पहराव को कई बार पहना करता हूं। क्या तुझे पता नहीं बसन्त आ गई है। हम पहाड़ियों में नया जीवन आ गया है। हमें सर्दी से छुटकारा मिलता है। यह पगड़ी पर फूल बसन्त के आगमन का प्रतीक है। मेरी पगड़ी भी बसन्ती है। अतः मैंने यह पहरावा मेले के लिए पहना है। क्या तू मुझे छोटा समझती है। मैं भी राणा खानदान से सम्बन्धित हूं।

**जुल्फू : तेरी तैणी देइए, जोगी बणू बरागी।**
**धूनी जाड़ू ग्रांगणै, देश ग्राणू भूगता मांगी।**

**भाव :**—जुल्फू कहता है, "हे देई मेरा प्रेम आपके प्रति शुद्ध है। मैं आपके प्रेम हेतु हर प्रकार के कष्ट सहन करने के लिए तैयार हूं। यदि तुझे किसी प्रकार का कठिन समय आए तो मैं उसे योगी बन कर दूर करुंगा। यदि आपका प्रेम किसी वस्तु का भूखा हो तो मैं उसे साधु के रूप में भी उपलब्ध करुंगा।"

**देई : शेतेश्रा टोपूआ, लाए सिहाइए टांकै।**
**जेहै फिरा बांठिए, तेहै ने हेरणै बांकै।**

**भाव :**—देई को अपने पति की बातों पर विश्वास नहीं होता। वह इन बातों को केवल दिखावा मानती है। वह कहती है, "जैसे एक श्वेत टोपी पर स्याही का धब्बा बड़ा अजीब सा लगता है। उसी प्रकार हे पति मुझे आपकी सभी बातें केवल दिखावे की लग रही हैं। क्या आपकी यह सभी बातें सत्यता से भरी हुई है। परन्तु मुझे लगता है कि जितने अच्छे आप बाहर से हैं, उतने अच्छे सम्भव है अन्दर से हों या नहीं।"

**जुल्फू : हाथ रें कागदा, मेरे देणी ठानी।**
**खड़ी करे छतरी, मेरें हेरणी जुआनी।**

**भाव :**—जुल्फू सम्भवत: नौकरी से अवकाश प्राप्त करके घर आ रहा था। रास्ते में उसे देई मिल गई। वह हाथ में कागज उठाए चल रही थी। यह कागज भी जुल्फू प्रियतम की प्रियपाति थी जिसमें आज घर आने के विषय में लिखा था। अत: जुल्फू देई को कहता है, "हे हाथ में कागज उठाने वाली स्त्री मैं आपके दर्शन करना चाहता हूं। जरा इस मुंह पर रखे छाते को ऊपर कीजिए, मैंने आपका यौवन देखना है। इन पंक्तियों में देई से जुल्फू ने उपहास किया है।

**देई : शाऊंअ मुंहटू, आखी रैं काजला कालें।**
**तमा जेहे जुल्फूए, आजा तैंहीं ने भालें।**

**भाव :**—देई भी इस जानी पहचानी ध्वनि को सुन कर सतर्क हो गई। वह इस प्रकार जागी मानो उसे सदियों से नींद ने घेर रखा हो। अत: वह कहती है, "आपका वही सांवला मुंह है। वही काजल जैसी काली आंखें हैं। परन्तु खेद इस बात का है कि आपके दर्शन किए बहुत समय हो गया है। आज आपको देख कर यह आंखें विश्राम कर रही हैं।"

**जुल्फू : भेडिए मिमिए, पेटा हेटिए काली।**
**ढीलअ तेरअ हांडणू, आधी लौई काकड़ी जाली।**

**भाव :**—देई को राह में मिल कर जुल्फू अति प्रसन्न हुआ। वह देई की प्रशंसा बड़े विचित्र शब्दों द्वारा करता है। "जैसे एक लाल ऊन से घिरी हुई भेड़ शोभायमान होती है, इसी प्रकार देई को सौन्दर्य ने लपेट रखा है।" देई की ढीली और मस्तानी चाल सत्य ही जुल्फू के हृदय को मोह लेती है। जब-२ भी वह उसे देखता है तो उसे हर बार अचम्भे में डालने वाला सौन्दर्य दिखाई देता है।

**देई : साधू कै चिमट, बाबा जीआ कै झोली।**
**खुली मारी मौजा, एवे ने आसर चोली।**

**भाव :**—देई भी अपने पति जुल्फू के सौन्दर्य को देख कर अचम्भे में पड़ जाती है। क्योंकि जुल्फू का स्वास्थ्य बहुत हृष्ट पुष्ट हो गया है। अत: वह कहती है, "जैसे साधू के साथ चिमटा शोभायमान होता है। उसके चेले के हाथ में झोली सजती है। उन दोनों की संगति सात्विक होती है। इसी प्रकार हमारा सौन्दर्य युक्त यौवन भी सात्विक होना चाहिए। हमें एक दूसरे का परस्पर आश्रय है। इस प्रकार हम सात्विक यौवन का रसास्वादन ठीक प्रकार से कर सकेंगे।" देई जुल्फू से प्रश्न करती है कि क्या आप आजीवन भर मेरा आश्रय बने रहेंगे।

देई : फूल गुलाबा रा, फूलम्र खेचा रे सरे ।
कि छाड़े लालचू, कि निए आपणे घरे ।

भाव :—देई अपने पति जुल्फू की पत्रिकाओं को देख कर अत्यन्त परेशान है । क्योंकि पत की सभी बातें दिल को विचलित करने वाली हैं । अत: वह इस पद्यांश में व्याख्या करती है, "खेत में तालाब के किनारे फूल खिले हैं । यह सत्य ही खेत की शोभा का वर्णन कर रहे हैं । इसी प्रकार हे पति यदि आप अपना जीवन अपूर्ण समझते हैं तो मुझे आप अपने साथ ले जाकर अपने साथ ही रखें ताकि आपका जीवन पूर्णत्व को धारण कर सके ।

जुल्फू : सुनम्र बणाअ सुनिए, रुपअ बणाम्र सुनारे ।
कुणी बणाई मुहता, कुणी गणे गणिए तारे ।

भाव :—सोना केवल सोनी ही बना सकता है । चान्दी को बनाना भी सुनार का ही कार्य है । इसी प्रकार देई को जुल्फू कहता है, "हे देई आपकी यह शक्ल-सूरत किसने बनाई । इस प्रकार की मूरत बनाना तो भगवान के लिए भी इतना कठिन है जैसे कि आकाश के तारे गिनना असम्भव है ।" इस प्रकार इस पद्यांश से लगता है कि जुल्फू को देई की मूर्त अत्यन्त आकर्षक लग रही है ।

देई : सांझा रे चन्दरा, सूरजा निकलम्र दोती ।
कणी पली म्रऊकी, कागे लाई खाणी मोती ।

भाव :—देई को प्राय: पति की याद सताती ही रहती है । वह कहती है, "सुबह होती है और शाम होती है । इन दोनों के आने का निश्चित समय है । सुबह सूर्य निकलता है । शाम को सूर्य ढलने के पश्चात चन्द्रमा अपना कर्तव्य पूरा करता है । सभी अपने-२ कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हैं । मुझे एक मुसीबत ने आ घेरा है । यह मुसीबत पति वियोग की है जो कर्तव्य पथ से कहीं दूर है । मुझे लग रहा है कि कौआ उस मोती के हार को खा रहा है जो मुझे बहुत प्रिय था।" इस पद्यांश में देई ने प्रिय के दु:ख की ओर संकेत किया है ।

जुल्फू : एकी हाथा री लोटकी, दूजो हाथे गलासा ।
किले बाम्र तें मिहणअ, एकी घरा रे म्रासा ।

भाव :—पति देई के ऊपरलिखित संकेत को भली प्रकार समझ गया है । जिसमें उस ने कहा कि कौआ उसके प्यारे मोती के हार का भक्षण कर रहा है । अत: वह कहता है, "मनुष्य उदर पूर्ति हेतु सदैव व्यस्त है । वह कभी लोटे को उठाता है और कभी गिलास को उठाता है । अत: आवश्यकतानुसार वह हर वस्तु को उपलब्ध करता है । अत: हे देई तूने इस प्रकार का ठहाका क्यों दिया है । अन्तत: हम दो देह एक प्राण हैं ।"

**देई : साना बोलू सानिए, लाम्प मांगदश्र तेला।**
**पशु मांगा निन्दरा, माणू मांगा जिऊआ रैं खेला।**

**भाव :**—देई के विचार सचमुच ही ज्वलन्त हैं। वह इस पद्यांश में कहती है, "यह ठीक है कि हम दो देह और एक प्राण हैं। परन्तु हे पति क्या आपको ज्ञान है कि सायंकाल होने पर लैंप तेल की याचना करता है। तभी वह प्रकाशमान होने की सामर्थ्य उपलब्ध कर सकता है। इसी प्रकार दिन को पेट भर कर पशु सायंकाल होने पर निद्रा देवी की गोद में जाकर सुप्तावस्था को प्राप्त करता है। अतः मनुष्य भी प्रेमी और प्रेमिका के रूप में जीवन क्रीड़ा आरम्भ करने की याचना करता है।

**जुल्फू : साना बोलू देईए, साना सनुकड़ू वाशो।**
**छुट्टी दे साहिबा, रिझा रैं संगणू नाशो।**

**भाव :**– जुल्फू उल्लिखित पद्यांश का उत्तर देते हुए कहता है, "दिन ढल चुका है। अन्धकार सांझ ले कर आ गया। इस शान्त सांझ में पक्षी चहु-चहाते हुए अपने घोंसलों को जा रहे हैं। हे देई इसी प्रकार मेरे जीवन में भी सांझ का आगमन हो चुका है। अतः मैं नौकरी छोड़ कर घर आना चाहता हूं। हे साहब कृपया मुझे अवकाश प्रदान कर दो। मैं भी इन पक्षियों के समान उड़ कर प्रेमिका के पास जाऊंगा।"

**देई : कुई काण्ढे री कालका, नहनू काण्ढे रैं मोरा।**
**म्हारी पाई विसरा, तमैं लोड़े संगणू होरा।**

**भाव :**—इस पद्यांश से लगता है कि देई को पति पर संशय हो गया है। क्योंकि समय बहुत हो गया है परन्तु पति अभी तक घर नहीं आया। अतः वह कहती है, "कुई काण्डे में कालका अपना घर बना कर उस पहाड़ी की शोभा का वर्धन कर रही है। परन्तु हमारी शोभा कौन बढ़ाए। क्योंकि हमारा घर प्रकाश होते हुए भी अन्धकार द्वारा ही आच्छादित है। हे पति मुझे लगता है कि आपने मुझे भुला दिया है। हमें भुला कर अवश्य ही आपने कोई अन्य साथी बनाया होगा।

**जुल्फू : नैं पाई बिसरा, ने लोड़े संगणू होरा।**
**साहब ने देश्रा छुट्टी, मन आसा कागद कोरा।**

**भाव :**—जुल्फू उल्लिखित पद्यांश का उत्तर देता हुआ कहता है, "हे देई आप कैसी कलंक वाली बातें करती हो। मैं आपको कभी भी नहीं भुला सकता। मैंने किसी अन्य को भी अपना हमजोली नहीं बनाया। अतः आप व्यर्थ का संशय दिल से निकाल दें। हमारा यह साथ अब आयु पर्यन्त रहेगा। यह परिवर्तित नहीं हो सकता। मैंने कई बार अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र लिखा। परन्तु साहब उसे हर बार अस्वीकृत करता है। मेरा मन कोरे कागज की भांति स्पष्ट तथा साफ है। अतः आपको संशय नहीं करना चाहिए।

देई : चिठ्ठी आई पतिए, हिजा किलै नै आअ।
भाता मासो थालटू, सिश आशुए खाअ।

भाव :—सम्भव है कि पति ने देई को पत्र द्वारा घर आने का निश्चित दिन लिखा था। परन्तु वह घर न आ सका। नौकरी की कठिनाईयों के कारण वह दूसरे दिन आया अत: देई अपने पति को कहती है, "मैं कल आपका इन्तजार कर रही थी। क्योंकि पत्र में आपने कल आने को लिखा था। कल आपके लिए मीट आदि पका कर रखा था। आपकी इन्तजार करती-२ मैं थक गई। जब आप नहीं आए तो मैंने खाना आरम्भ किया। खाते समय आंखों से अश्रुधारा भी बहती रही।"

जुल्फू : नौकरी रहीआ, नौकरी बणी कुआ।
मुलै दे खिचड़ी, खाए बराबरी हुआ।

भाव :—जुल्फू के लिए नौकरी एक प्रकार का बन्धन ही है। अत: इसी कारण वह पत्र पर लिखे समय पर न आ सका। अत: वह कहता है, "हे देई मुझे नौकरी एक कुएं के समान बन गई है। मैं दिन प्रति दिन इस कुएं में ही डूबता जा रहा हूं। इस कुएं से बाहर मुझे निकलना मुश्किल हो गया है। साहब ने समय पर अवकाश स्वीकृत नहीं किया। अत: कल नही आ सका। आपने कल जो कुछ भी मुझे बनाया था। वह खाए बराबर ही है। मुझे आज खिचड़ी बना कर खिला दे।"

देई : राच बिहाऊईआ, सूरजै दिनअ दखाअ।
याद आती पतीआ, रोटी नै पाणी रै भाअ।

भाव :— देई का पति अवकाश ले कर घर आया है। अत: वह उसके सम्मुख अपने वियोग के दुःख को वर्णित करती है। वह कहती है, "रात्रि शोक में व्यतीत होती थी। रात्रि ढलने के बाद सूर्य देव अपने दर्शन देते थे। तब मैं भी अपने कार्य में व्यस्त हो जाती थी। हे पति आपके बिना सारा परिवेश नीरस ही अनुभव होता है। जब-२ भी मुझे आपको याद आती थी तो न भूख रहती थी और न ही प्यास लगती थी।"

जुल्फू : नौकरी मैडीआ, नहीं केणै की करू।
काला धैली सोठू त, नौकरी छाडीआ डरू।

भाव :—इस पद्यांश से लगता है कि सम्भवत: जुल्फू किसी कारण वश ही नौकरी कर रहा है। अत: वह नौकरी की उपलब्धि को अपना अहो भाग्य समझता है। अत: वह कहता है, "हे देई मुझे नौकरी अच्छे भाग्य के कारण मिली है। इसे छोड़ कर मैं भविष्य में क्या करूंगा। मैं घर में बैठ कर कृषि के कठिन कार्य को नहीं कर सकूंगा। क्योंकि मुझे अभ्यास नहीं है। अत: मैं भविष्य में अपना जीवन निर्वाह कैसे करूंगा। भविष्य कैसा विकराल तथा भयंकर रूप दिखाएगा। अत: इन सभी बातों को सम्मुख रख कर मैं नौकरी छोड़ने से डरता हूं।

**देई : विजीए गैणिए, जुगड़ू मुगड़ू तारे।**
**काला धेली मौज़ा, घरे जमीन हमारे।**

भाव :—जुल्फू ने नौकरी छोड़ने का प्रस्ताव देई के सम्मुख रखा। परन्तु भविष्य का भयंकर रूप भी दिखाया। अत: देई परामर्श देती है, "हे पति आपने जो कुछ कहा यह ठीक है। घर में रह कर हमारा जीवन आकाश की तारावली के समान चमत्कृत होगा। आपने भविष्य के विषय में संकेत किया भविष्य में हम आनन्द का रसास्वादन करेंगे। हम घर में अनाथ नहीं हैं। हमारे पास घर में जमीन है। जमीन पर ही हम प्रत्येक वस्तु उपलब्ध कर सकते हैं। अत: हमें किसी प्रकार का दु:ख त्रसित नहीं कर सकता।

**जुल्फू : सभी का शोभल, चीला हेटे रा पाणी।**
**देई फिरी दुबली, किजुए पाश्र चलाणी।**

भाव :—हे देई आपका जीवन ग्राम्य जीवन के कारण हृष्ट पुष्ट और आकर्षक होना चाहिए था। चीलों का यह जंगल और उसके नीचे का पानी स्वास्थ्य हेतु अमृत होता है। परन्तु आप अस्वस्थ और निराशित हो। अत: आपको किस बात ने संशय में डाल कर असमंजस्य में डाल रखा है।"

**देई : जुल्फू मेरेआ, ढूलणू आपणै तंगै।**
**शाह कलंजुग्र, तमा प्रेमी संगै।**

भाव :—इस पद्यांश में देई जुल्फू को स्वास्थ्य के बिगड़ने का कारण बताती हुई कहती है, "हे पति अपना घर अपना ही होता है। यदि आप प्रतिदिन इसी प्रकार अपने घर के बरामदे में टहलते हुए दृष्टिगोचर होते तो कितना अच्छा होता। यह चील के जंगल और यह बहता हुआ पानी तभी लाभदायक सिद्ध होता। हे पति आप इस बात को एक मात्र परिहास मानेंगे। मैं आपके बिना क्षण भर भी नहीं रह सकती। आप ही हृदय के केन्द्र बिन्दु हैं।"

**जुल्फू : शेतअ त कुरतग्र, बाता दी शाचदी कुरी।**
**मौजा मेरै घरा के, जिऊआ ढूकदी झूरी।**

भाव :—सत्य ही घर सभी को प्यारा होता है जैसे कमीज सफेद होती है। परन्तु रास्ते में फंसने वाला धूल उसे विकृत कर देता है। इसी प्रकार मेरे जीवन की अवस्था भी इस सफेद कमीज जैसी ही है। जिसे नौकरी रूपी धूल ने विकृत और नीरस बना दिया है। घर में सत्य ही आनन्द का रसास्वादन होता है। घर में जमीन है, मन भावन स्त्री है। घर में किसी प्रकार की भी कमी नहीं है। सत्य ही घर में स्वर्ग-सौख्य उपलब्ध है।

**देई : नदीए खाटलै, हांडदै फिरदै साकै।**
**खोटै म्हारै कर्मा, लाई लैणी दिना दी धाके।**

**भाव :**—देई ने जुल्फू की मजबूरी को अनुभव किया। क्योंकि जुल्फू विवश हो कर नौकरी कर रहा है। अतः वह कह रही है, "हे पति हमारा जीवन इस प्रकार चलता फिरता है मानो नदी के किनारे चलने फिरने वाले साके आदि जीव हों। हमारे भाग्य इस प्रकार के ही विधाता ने बनाए हैं। अतः हमें भोगने ही पड़ेंगे। हमें इसी प्रकार ही दिन व्यतीत करने पड़ेंगें।

**जुल्फू : ढीलग्र ग्रासा जीऊणू, ग्राग ने जलदी गेठैं।**
**चार दिन घालणै, दुःखा रै टापरू हेठैं।**

**भाव :**—जुल्फू अपने जीवन को आधार हीन और निस्सार मानता है। उसका जीवन इस पद्यांश के अनुसार निराशावादी ही लगता है। वह कहता है, "हमारा जीवन बहुत ढीला है। मेरा चुल्हा ऐसा है जिसमें आग नहीं जलती। इस संसार में जीवन स्थाई नहीं है। इस संसार रुपी बाजार में केवल चार दिन व्यतीत करने हैं। यह जीवन के दिन दुःख की छत के नीचे भी व्यतीत करने पड़ेंगें। क्योंकि मनुष्य को भाग्य पर भी विश्वास करना पड़ता है।"

**देई : बितअ निकअ पतिग्रा, ऐऊ ने ग्रापू खाए।**
**तीरी शवारिए, चेलू लै चुनणा पाए।**

**भाव :**—इस पद्यांश से लगता है कि जब देई का पति अवकाश व्यतीत करके नौकरी को जाने वाला था तो वह अति दुःखित थी। वह पति से निवेदन करती हुई कहती है, "हे पति मेरे प्रेम को आप अपने हृदय में अच्छी प्रकार स्थाई स्थान दे दें। आप यदि कभी अच्छा-अच्छा पकवान पकाएं तो स्वयं खाकर मुझे भी अवश्य बचाना। भोजन बचा कर उसको खिड़कियों के रास्ते से पक्षियों आदि को दे देना।

**जुल्फू : चींखा चेलीए, धोऊई पाणीए सरै।**
**सुख हुग्रा घरा कैं, नौकरी मिली ती वरै।**

**भाव :**—जुल्फू कहता है, "जैसे चींखा नाम की चिड़िया तालाब के किनारे खड़ी हो कर अपने आपको नहलाती है और अति सुन्दर बन जाती है। उसी प्रकार घर एक आराम तथा शान्ति के सौन्दर्य का स्त्रोत है। इससे कौन सा व्यक्ति नेह नहीं करता। यहां स्वर्ग सौख्य उपलब्ध होता है। परन्तु नौकरी भी भगवान ने एक वर के रूप में दी है। अतः मैं इसे कैसे छोड़ सकता हूं।"

**देई : नौकरी मांझे मेरेआ, दिल ने झंगटे पाए।**
**बगीचड़ू तेरे सेरी दी, आपणे घरा लै आए।**

**भाव :**—देई के विचारानुसार नौकरी जीवन के लिए एक झंझट ही है। अतः वह अपने पति को कहती है, "नौकरी के चक्र में पड़ कर दिल को दुःखी मत करो। यदि आपने नौकरी छोड़नी ही है तो इसे छोड़ दीजिए। इसमें सोच विचार तथा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। घर के साथ ही खेतों में मेव का बगीचा लगा है। जीवन-यापन के हेतु इस से हमें काफी धन उपलब्ध हो सकता है।

**जुल्फू : नौकरी छाड़ीया देईए, घरा न हुआ कामा।**
**कलमा रे जे हाथड़ू, जे मांगदे आराम।**

**भाव :**—देई का पति जुल्फू नौकरी से त्याग पत्र देने से संकोच करता है। क्योंकि यदि वह नौकरी से त्याग पत्र दे देता है तो उसे घर बैठना पड़ता है। घर में कठिन परिश्रम करना अनिवार्य है। अन्यथा जीवन निर्वाह करना असम्भव ही होता है। अतः वह देई को कहता है, "मेरे कागज़ के हाथ हैं। जो केवल कलम चलाने की सामर्थ्य रखते हैं। यह कुदाल कमान उठा कर मिट्टी से नहीं लड़ सकते। इसलिए मैं नौकरी से त्याग पत्र देने में संकोच करता हूं।

**देई : आरामा लै जुलफू, सेरी बगीचड़ू लाअ।**
**झूले आपणे घरा दी, गैणी र जेहु काअ।**

**भाव :**—देई अपने पति को कहती है, "हे पति आप नौकरी से त्याग पत्र देने से संकोच क्यों करते हो। घर में बगीचा लगा है। जीवन यापन हेतु काफी धन उपलब्ध हो जाएगा आप स्वतन्त्रता के साथ घर में रह सकते हैं। आप घर में किसी भी चिन्ता के शिकार नहीं बनेंगे। बल्कि इस प्रकार स्वतन्त्रता देवी की गोद में जीवन व्यतीत करेंगे जैसे आकाश में कौआ स्वतन्त्रता से विचरण करता है।

**जुल्फू : छाड़ी हेरी नौकरी, घरा लै आअ आजे।**
**खुशी मनाऊए दिलड़ू, ताम्बे री ढोलकी बाजे।**

**भाव :**—देई के उल्लिखित परामर्श के साथ ही जुल्फू ने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। अतः वह इस पद्यांश में कहता है, "हे देई मैंने नौकरी छोड़ दी है। मैं आज ही घर आने वाला हूं। सम्भव है आप खुशी मनाओगी। अब हमारा जीवन निराशाजनक नहीं परन्तु आशा युक्त मिलेगा। इस प्रकार आपको अवश्यमेव ही प्रसन्नता प्राप्त होगी।"

**देई : जुल्फू मेरेआ, शोभली हाथा री घड़ी।**
**छेके आए घरा ले, बेर नै लोड़ी पड़ी।**

**भाव :**—देई को जब जुल्फू ने बताया कि वह शीघ्रातिशीघ्र नौकरी से त्याग पत्र दे कर घर आने वाला है। तब वह सत्य ही अति प्रसन्न हुई। वह आशाओं के ऊंचे ऊंचे महल खड़े करने लगी। क्योंकि जुल्फू अब सदैव ही उसके सामीप्य में ही रहेगा। अत: वह पत्र पर लिखती है कि जैसे आपके हाथ की घड़ी समय का निश्चित ज्ञान करवाती है उसी प्रकार आप घर आने का पक्का पता दें। हे पति जल्दी घर आओ देर मत करो।

**जुल्फू : घरा लै आग्र देईए, देऊआ लै दे भेटा।**
**मिली गणू घरा के बैशी जाणू हीकड़ू सेटा।**

**भाव :**—देई की उस प्रेम पूर्ण आस्था से जुल्फू अछूता नहीं रह सकता। अत: वह घर आ कर देई को कहता है, "मैंने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया है। अब हमारा गृहस्थ जीवन सफल हो। हे देई अपने कुल देवता को भेंट चढ़ा दो ऐसी मेरी आस्था है। अब हम घर में परस्पर मिल कर रहेंगे। एक दूसरे को जी भर कर प्यार करेंगे। हम दो देह एक प्राण बन कर रहेंगे।

**ऊझीए गैहरै, चेली वाशी बगीन्दी।**
**जुलफू वाहंद, देई गोबरा नीन्दी।**

**भाव :**—हिमधाम के जंगलों को पक्षियों की एक अमूल्य निधि माना जाता है। जिस प्रकार दो चिड़ियों का जोड़ा जिन्हें पहाड़ी भाषा में बगींदी कहा जाता जब अपने सुरीले स्वर से जंगल के वातावरण को गुंजारित करते हैं तो जंगल कितना अच्छा लगता है। इसी प्रकार घर में जुल्फू और देई का गृहस्थ जीवन आकर्षक और शान्तिमय बन गया है। जुल्फू हल चलाई का कार्य कर रहा है और देई गोबर का किलटा खेत को ले जा रही है।

**ऊंदें बोला नेऊलै, हरी भेऊड़े डाली।**
**काम पड़ जुल्फू ले, छाती लागी फिरदी काली।**

**भाव :**—अब घर आ कर जुल्फू को कार्य की अधिकता तंग कर रही है। क्योंकि उसे अधिक परिश्रम करने का अभ्यास नहीं है। जैसे खेत में एक भेऊल वृक्ष की डाली हरी भरी होती है परन्तु पतझड़ में वह केवल ठूंठ रह जाती है। उसी प्रकार कार्य की व्यस्ता और कठिन परिश्रम जुल्फू के लिए पतझड़ के समान अनुभव हो रहा है। उसे नौकरी के दिन जो ऐश-आराम से परिपूर्ण थे याद आ रहे हैं। उसकी छाती दिन प्रतिदिन जल रही है।

**नीज पड़ी जुल्फू, ऊझीग्रा बारा बाजै।**
**गाली देग्रा देई, ठीक महीनै रै साजै।**

भाव :—घर में रह कर जुल्फू को आराम न मिल सका वह कठिन कार्य करने का अभ्यासी नहीं था। इसलिए अब देई भी उससे असंतुष्ट रहने लगी। परिश्रम के कारण जुल्फू को निद्रा देवी प्रातः देर तक विश्राम देती थी। अर्थात वह प्रातः जल्दी नहीं उठ सकता था। देई जब जुल्फू से तग आ जाती थी तो उसे भला बुरा कहना प्रारम्भ कर देती थी। पहाड़ में महिने के पहले दिन (साज़े) को भला बुरा नहीं कहा जाता। क्योंकि फिर सारा महीना कलह में ही व्यतीत होता है। लोगों का ऐसा विश्वास है। परन्तु देई अपने पति को साजें (संक्राति) के दिन भी आराम नहीं देती थी।

**पांख फगारिआ, बागा दी बाशुग्र मोरा।**
**जुल्फू मेरेग्रा, जीऊणेओ करे धोरा।**

भाव :—जो परिश्रमी होता है वह सत्य ही समाज में मान को प्राप्त करता है। जैसे बाग में मयूर नृत्य करते हैं। कर्मवीर भी इसी प्रकार प्रसन्न होते हैं। अतः देई भी अपने पति को परिश्रमी बनने का संकेत करती है। वह कहती है कि हे जुल्फू जीवन एक लम्बा सफर है। यह इस प्रकार आराम में रह कर व्यतीत नहीं होगा। अतः जीवन निर्वाह हेतु परिश्रमी बनना अति अनिवार्य है।

**देई : लोगे भाई ग्रोवरू, बाकरू पड़ मींजै।**
**मेर ग्रज जुलफू, खाग्र दरिद्री मींजै।**

भाव :—इस पद्यांश से लगता है कि देई घरेलू प्रगति से प्रसन्न नहीं है। वह कहती है, "दूसरों के घर में देखें तो हर क्षेत्र में उन्नति हो रही है। परन्तु हमारे घर में तरक्की का कोई रास्ता नहीं है। लोगों के वकरे भी हृष्ट पुष्ट हैं। मेरे पति देव तो दरिद्री हैं। उन्हें नींद के अतिरिक्त कोई चीज प्यारी नहीं है। वे तो आराम चाहते हैं। परिश्रम से कोसों दूर रहते हैं। अतः हम अपने बच्चों का पालन पोषण कैसे करेंगें।

**जुल्फू : कोड़ी बुती भावरी, बोलै लागी चलाई।**
**तेरी चुर-पुरी जी भटी, कालै लोड़ी रिगंले खाई।**

भाव :—नौकरी में रहने के कारण जुल्फू आराम परस्त है। वह कठिन परिश्रम नहीं कर सकता। बुद्धिजीवी होने के कारण वह शारीरिक काठिन्य का सामना नहीं कर सकता। परन्तु देई उसे सदैव दुतकारती और फटकारती रहती है। अतः वह इस पद्यांश में कहता है, "हे देई तेरी जिह्वा कतरनी की भांति चलती है। अतः भगवान करे कि इसे कोई जहरीला कीड़ा काट खाए ताकि आराम मिल सकें।"

देई : गाली देईआ जुल्फू, शरीर लोड़ी शल.अ।
धाचे इना शोहरू आपणे, चाके पाणी लै घल.अ।

भाव :—जब देई अपने पति की बुरी भावना का अनुभव करती है तो वह अत्यन्त क्रोधित हो जाती है वह इस पद्यांश में कहती है, "हे पति जैसे आप गालियां देते भगवान तुम्हें शारीरिक शाप देगा। मुझे आपको कहने की कोई आवश्यकता नहीं। आप अपने इन बच्चों को सम्भालें और इन्हें पालें। यदि आप पानी का घड़ा ही नहीं लाना चाहते तो आप बताएं हम कैसे जीवन जी सकते हैं।"

जुल्फू : नौकरी छाडीआ भगवाना, ऐंडी के मुसीबता पाई।
जौणी चडेऊई रांडीए नौकरी, काल्. सार्ग लोड़ी खाई।

भाव :—देई का पति अपने भाग्य को कोसता हुआ कहता है, "हे भगवान तूने मुझे कैसी मुसीबत डाल दी। सत्य ही मैंने नौकरी से त्याग पत्र देकर एक बहुत बड़ी गलती की है। मैंने जीवन के साथ एक बहुत बड़ा छल किया है। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। यह सारा छल देई के प्रेम के कारण ही हुआ। हे देई तूने मुझे किस प्रकार नौकरी छुड़ा कर गर्त में डाल दिया है। हे भगवान इसके बदले में देई को तू अवश्य ही शाप दे।"

देई : नींडीआ गुंडीआ, छाली र भरूअ ताला।
बकवास देआ डिगणै, सेरी कमाऊंदे चाला।

भाव :—इस प्रकार देई और जुल्फू का गृह युद्ध का विवाद चलता रहा। सम्भव है इस गृह युद्ध का वाद विवाद बहुत विस्तृत है। परन्तु देई का ध्यान कृषि की ओर ही रहता है। अतः वह पति को कहती है, "इस व्यर्थ के वार्तालाप को छोड़ दो। इससे कुछ नहीं बनेगा। केवल वैमनस्य का वर्धन होगा। बाहर खेतों में मक्की पक गई है। अतः खेतों में चल कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करो। इसी में यथार्थ कल्याण है।"

जुल्फू : खटिया छपिआ, ओठल्. बैंशी खैई।
मीण मेरी नौकरी, देई बेशा खटिया लैई।

भाव :—जुल्फू अब निराशित हो चुका है। वह इस पद्यांश में कहता है, "कृषि कमाने क्या चलना। कार्य करते-२ थक चुका हूं। ओठ फट गए हैं। तू कैसी अजीब पत्नी है। तूने नौकरी भी छुड़ाई। अब घर में कार्य से खोते सा लाद रखा है। मैं इतना परिश्रम नहीं कर सकता। मैंने तुझे नौकरी से त्याग पत्र देने के पहले ही कह दिया था। कितनी अच्छी नौकरी थी। तू तो कार्य ले कर ही विश्राम करती है।"

**देई : मोटश्र ताजश्र शरीर श्रासा, केबा लै एऊ सांजा।**
**केह संगे धाचणे, शोहरू हंदै पांजा।**

**भाव :**—जुल्फू की उल्लिखित बात पर देई के क्रोध का पारावार नहीं रहा। वह कहती है, "आप कार्य क्यों नहीं कर सकते। इतने हृष्ट पुष्ट हो। यह शरीर कब को रखा है। क्या आपको यह ज्ञान नहीं कि यह शरीर नाशवान है। मृत्यु के आने पर शरीर कितना ही हृष्ट पुष्ट क्यों न हो आग से दहन करके राख बनाया जाता है। घर में पांच बच्चे हो गए हैं। बिना परिश्रम करके आप इनका पालन पोषण कैसे करेंगे।"

**जुल्फू : पांच जैं शोहरू देईए, जरमैं श्रापणे भागै।**
**करम खाणै आपणै इना, दिनै जैं देऊश्रा नागै।**

**भाव :**—उल्लिखित पद्यांश में देई ने कहा कि पांच बच्चों का पालन पोषण कैसे किया जाए। अतः इस पद्यांश में जुल्फू कहता है, "ये पांच बच्चे अपने भाग्य को लेकर आए हैं। यह मुझे देवी देवताओं ने अच्छे कर्मों के पश्चात प्रदान किए हैं। यह उनकी कृपा है। इनका जन्म हमारे कारण हुआ है परन्तु यह कर्म अपने खाएंगे। अतः ये हमारा कुछ नहीं खाएंगे। परमात्मा ने जिसे दांत दिये हैं उसे चबाना भी अवश्य दिया है। अतः इन्हें केवल अपने भाग्य का ही आश्रय है।"

**देई : खाण ता कापड़ा, देऊश्रा ने देश्रा नागा।**
**करम जर्म रटिया, झूठल म्हार रागा।**

**भाव :**—देई भाग्य पर विश्वास तभी करती है यदि इसके साथ परिश्रम का समिश्रण हो। अतः वह परिश्रम से जी चुराकर भाग्य का आश्रय लेना बुद्धिमता नहीं मानती। जो परिश्रम से जी चुराकर भाग्य का आश्रय लेते हैं, देई ऐसे व्यक्तियों को मूढ मति मानती है। अतः वह अपने पति को कहती है, "क्या ये देवी और देवता बिना परिश्रम किए रोटी और कपड़ा दे देंगे ? यह खाना कपड़ा नहीं दे सकते। अतः इस प्रकार का आश्रय लेना झूठी बात है। हमें ऐसा राग नहीं अलापना चाहिए। यह हमारा वृथा भ्रम है। हम केवल ऐसा कह कर अपने आप से छलना करते हैं।"

**जुल्फू : देऊश्रा नागा देईए, पुराणे जमानए ऋषि।**
**इने तपा री ताकता, तका ने माची धीशी।**

**भाव :**—परन्तु जुल्फू जो कार्य करना एक संकट का विषय मानता है कहता है, "हे देई देवी देवताओं के प्रताप को तू क्या जाने। ये तो पुराने युग के ऋषि हैं। इनकी शक्ति का आधार तपस्या है। इसका अनुमान तू नहीं लगा सकती। अतः तुझे इस विषय पर चर्चा नहीं करनी चाहिए। यह तो एक ऐसी असीम शक्ति है कि जो सदैव अदृष्य है।"

देई : शोहरू लोड़ी जादलँ, इनै केबै एह बोलअ।
चादरा बाहरी टांग पखारो, इनै भेत केबै ज खोलअ।

**भाव :**—इस पद्यांश से लगता है कि देई जीवन के वास्तविक रहस्य को जानती है। वह रहस्य के तारतम्य का विस्फोट इस पद्यांश में करती है। वह कहती है, हे पति देवी देवताओं ने कब कहा कि अधिक सन्तान पैदा करके उनका पालन पोषण हम करेंगे। इन्होंने इस रहस्य का विस्फोट कब किया कि चादर के बाहर टांग पसारनी चाहिए। अतः आपकी यह विचारधारा सर्वशा मिथ्या है।

जुल्फू : धारा री देवीए, तेर देहरू ऊंचअ।
हर देणू फरर, करे मना र सूंचअ।

**भाव :**—जुल्फू अपनी पत्नी को कहता है, "तुझे क्या ज्ञान कि मैंने सन्तान को कैसे प्राप्त किया। बहुत देर के पश्चात सन्तान हुई। अब तू सन्तान पाकर भी प्रसन्न नहीं है।" सम्भव है कि जुल्फू ने कभी भेंट द्वारा अपने लिए देवी से सन्तान याचना की होगी। याचना करने के पश्चात जुल्फू को सन्तान उपलब्ध हुई। अतः वह देवताओं के प्रताप को असीम शक्ति स्वीकार करता है।

देई : शोभलै एऊ जोतड़ू दी, दुई वनाला रैं बचैं।
बूढलैं बालुए, खारकै गणदै सचै।

**भाव :**—देई अपने पति की बात को उपहास में परिवर्तित करती है। "मनाल पक्षी के बच्चे वृक्षों की डाली-डाली पर कितने सुन्दर लगते हैं। हे पति आप भी उस मनाल पक्षी की भांति भोली-भाली बातें करते हैं। आपको इस प्रकार की अन्ध विश्वास की बातें नहीं करनी चाहिए। यदि आप ही ऐसी बातें करते हैं तो बच्चे अवश्यमेव ही अन्धविश्वासी बनेंगे। अतः आपको इस प्रकार के रुढ़िवादी अन्ध विश्वास छोड़ देने चाहिए।"

जुल्फू : बागै फूलणू, फूलैं बड़ै संजोगै।
हेर शूणा सभीए, भोग चतुरा लोगै।

**भाव :**—इस पद्यांश से पता चलता है कि जुल्फू देई को मूर्खा की संज्ञा देता हुआ नास्तिक समझता है। वह कहता है, " हे देई बाग में फूल खिलता है। उस फूल को सारी दुनियां के लोग देखते हैं। परन्तु देखने के साथ उस फूल के सौन्दर्य का उचित रसास्वादन सभी मनुष्य नहीं करते। समाज में थोड़े से चतुर लोग ही उसकी मुस्कान की पहचान कर सकते हैं। अन्यथा फूल की शोभा समाप्त करके फूल को तोड़ने वाले ही मिलते हैं।"

देई : उझीए गैहरै, महीना कड़ैलिए काण्डे ।
जे ने खटुग्र खेचा दी, देश्रा शोहरू मासा दी दांदै ।

भाव :—इस पद्यांश में देई बड़े सुचारू ढंग से तथा उचित रीति से जुल्फू को अपने रूढ़िवादी विचारों के प्रति उजागर करवाती है । वह कहती है," हे पति आप जंगलों को देखो । यदि वहां कांटे न होते तो वे कितने प्यारे लगते । उसी प्रकार हमारे समाज में भी कुछ रूढ़िवादी कांटे हैं जो कभी कभी समाज को उन्नत होने से रोकते हैं । अतः यदि हम खेत में काम न करेंगे तो अन्न कहां से खाएंगे । बच्चे हमारे मांस में दान्त मारना प्रारम्भ कर देंगे ।

जुल्फू : गुड़ा जेही गुड्ई, पीपली जेही चरेरी ।
भगवानो ने आसर करदी, गल ला सदा टेरी ।

भाव :—इस पद्यांश से लगता है कि जुल्फू देई के भावों को भली प्रकार समझता हैं । परन्तु अपनी टांग को ऊपर रखना चाहता है । अतः वह कहता है," हे देई तेरी बातें मिर्च की भांति तेज है । परन्तु सिद्धान्त के आधार पर गुड़ की भांति मिट्ठी है । परन्तु कभी कभी तू भगवान पर आस्था प्रकट नहीं करती और सदैव उल्टी बात करती है जो एक नारी के मुंह से अच्छी नहीं लगती । क्योंकि नारी जीवन तो शान्ति का एक प्रतिबिम्ब होता है ।

देई : गैणिश्रो गुड़कू, खाटडूं पड़दी बीजा ।
देशैं लागैं मरदै, किलै करा एतरी जीदा ।

भाव :—इस पद्यांश से प्रतीत होता है कि देई झगड़े के इस वातावरण को परिवर्तित करके समाप्त करना चाहती है । सुख से अपना जीवन यापन करना चाहती है । अतः कहती है, "हे पति मनुष्य शरीर नाशवान है । जैसे गगन मण्डप में विद्युत चमकती है और गड़गड़ाहट की ध्वनि करती है उसी प्रकार इस संसार में मनुष्य क्षण भर में जन्म लेता है और क्षण भर में ही मर जाता है । अतः हमें परस्पर इतनी दुश्मनी पैदा नहीं करनी चाहिए ।"

जुल्फू : तालरू कुईए, तू लोगू हेरदं जाणी ।
देई लोड़ी लोटली, मू लोड़ी नऊणो पाणी ।

भाव :—स्वभाव से जुल्फू भी सद् विचारों का व्यक्ति है । वह कहता है," हे कुई के फूल तुझे कौन नहीं जानता । अर्थात तू प्रत्येक के हृदय को अपनी ओर आकृष्ट करता है । आकर्षण का कारण एक मात्र तेरी सुगन्धित मुस्कान है । इसी प्रकार हे देई तुझ में भी आकर्षण शक्ति है । अतः अगले जन्म में मैं पानी का तालाब हूंगा तू तालाब के पानी से परिपूर्ण लुटिया होगी ।"

देई : तेरी मेरी जुल्फू, आरा पारा का हुई।
तू लोड़ी डूंढरू, मूं लोड़ी फूल कुई।

**भाव** :—देई अपने पति को कहती है," हे पति यह गृहस्थ जीवन है। यहां पर प्रायः घरेलू दुःख सुख तथा भले बुरे वार्तालाप हुआ करते हैं। अतः आपने मन में कुछ न रखना। जैसे मेरे शरीर का कण कण शुद्धता से भरा हुआ है वैसे ही आपने रखना। मेरे प्रति मन में किसी प्रकार का वैमनस्य न रखना। भगवान करे कि अगले जन्म में भी हमारा संयोग हो। मैं कुई का फूल ओर आप कुई फूल की महकती कली होनी चाहिए। इस प्रकार हमारा सम्पर्क स्थाई होगा।

जुल्फू : दशी का बणी देई तू, भाटा वगुन्दुए जाई।
जेवं हुई जर्मी तू, तेबा का दाह् तैं लाई।

**भाव** :—जुल्फू अपने बचपन के दिनों को स्मरण करता हुआ कहता है, "हे देई पहले तेरा नाम दशी कन्या था मुझ से विवाह होने के पश्चात तेरा नाम देई पड़ा। इस नामकरण के साथ तू मेरी जीवन संगनी बनी। तू पण्डित बगुन्दू की पुत्री है। आपके जन्म से ही मेरी आप पर अपार श्रद्धा है। यही कारण है कि इस जन्म में हमारा संयोग हुआ।"

# चतुर्थ खण्ड

## लोक गीत (लामण)

बाहुदे हाड़िश्रा, बेजअ ने पातल् पाई।
चिढ़ू जेह म्हारे शाहटू, घणअ ने लाल्चू लाई।

नारअ बैठ ओबरू, दशी बैठी दुआरे।
आखिश्रो सानकू, कहा लै दशीए मारे।

शीली बाखे चाऊली, पराड़ी बाखा री बागा।
इंदी ने बैठणू, दसा री नदरा लागा।

जोथ लागी चानणी, लागी घणै कलेड़े।
आधी शाची बादल्, आधी कुईए डाल्।

नाला री बागरी, नाला नालिए बहा।
धारी री बागरी, शुकणा पहरी रहा।

लोहेश्रो लूहण्ड़ी, फेर फरेऊणी गेठे।
केह संगें घाल्णी, धूईंए लूम्बरू हेटें।

लाअ उशीए माथै दी, कुंगू केसरो टीकअ।
दूरा र शाहूरअ, भागे कर्मे लिखअ।

नेगिश्रो नेगटू, पढ़द डेऊअ स्कूला।
शाल् एछे शाऊणे, सुती आणे कुई श्रो फूला।

केल् री काकरा, गोधे पिऊणे पाचा।
झूरी री नगरी दी, केहै की घाल्णी राचा।

माण्डी फूली सुमणा, सरे फूली कमान्दी।
किल्है आई जुश्रानिए, बाल् शाहटू खान्दी।

ऊभीए गेहरे, पात्थरू पीशणू लूणा।
धेल् तमे रूशदी, तमा मनेऊंद कुणा।

सभी का शोभली, हूंदी खाणा लौ गरी।
काल के खरे लौ, आज ने रहणू मरी।

माण्डी फूलअ फूलणू, सरे आन्दी बासा।
आपणो मान ने खोणू, जेभा तैंही जिदडू आसा।

बिजीए गैणिए, बादली निकली लेशा।
आइए मरिश्रा, घेइए छूटा देशा।

थारै ग्राऊंटू दी, पाए पाटा रै थलै।
छान्दअ ने करदै, घर लोड़ी आगीए जलै।

सुनीए मुन्दी री, माण्डी दीनी घलाई।
छेकै हटे मुन्दीए, जवानी ढलदी आई।

भेड़ ती थारी, लाल कोहड़ी डोगी।
नहीं ती बुढली, नहीं खारकै जोगी।

रोपी री माहूरी, माहूरी बिला र जाटू।
छः महीनै घालै पेऊकै, तैं कै फायदा बाटू।

जिदी दीनी बाबूए, तिदी खूबदै कांडे।
जिदी दीनी भाइए, तिदी गम्रा रहणू माण्डे।

घर चिणणै ऊछटै, फेरदी चिणणी दोगा।
कुण बुझा इजीए, छाती भीतरो रोगा।
तैं कै लाअ इजीए, धेड़ी धेलिओ रागा।
नै बसदी शाहूरे, नैं मांगू भाई का भागा।

छेंई लै छतरी, चोशा लै पींहपी हरी।
खुली खटे नौकरी, ने मानी घरा री झूरी।

काठा र मुंगरू, लोहेओ करणू हिअ।
गम्म मेरी छातीए, जौण नारणै लिअ।

धाना मांझै काऊणी, काऊणी मांझै बिथू।
खरी काटू अहूकी, इना बालका पीछू।

तमें बसा नौकरी, हामे हंदै सराजी।
सुख सान्त तमा लै, हामैं बहुता राजी।

दूधा रै पारुआ, घणी लागी पलैई।
कोढ़ लोड़ी निकली, किलै डाई हत्या लैई।

शाड़िए खाऐ शलूटकै, गुली शोटणी गहै।
तेरी मेरी बराबरी, देशा ने मुल्का रहै।

धान और क्राऊणी, शुए चेलूए खाई।
भूखे नाए पाहुणे, मनै डाई भोणका लाई।

ऊंदी पड़अ निमला, ऊभी पड़अ वलाशा।
चोली हेरे माणूआ, मेरे ग्राऊंए आशा।

आड़ूए अन्दलै, गोभीओ पाणू रसा।
ईए बाबे तें गरतै, आज पड़े लोगूए बशे।

आधी खाई सरोठली, सार खाअ लूण्डी शागा।
बाबूए वीनी बीतें दी, ऐबें खाणै आपणे भागा।

ईजीए मोटलू दी, आई ती घूलरू नींजा।
खड़ी उभीए बेटिए, बाहरी संगणी चीजा।

साथणी संगणी, ओए ने इजीए रही।
कुई जेही निभली, मांखी जेही डिआई।

दीनी ती बाबूओ, अबरे खबरे डेरे।
धौल तौलड़दे, जिऊ दुआसीआ मेरे।

गरीए गांठड़े, कागदे भरी जलेबी।
हामे हंदे भोले, तमे मना रे रेबी।

चींखा बोलू चेलिए, ऊड़दी-ऊड़दी बाशा।
लोगे बसे झूंपलू, हामे आसा थारी आशा।

धेलों बोला ऊड़िया, सूरजै दीनअ चलाणा।
ऊड मेरी चिड़िए, सजना मिलदे जाणा।

खर और करष्टा, किछ ने डाणू लौई।
झुमी नींआ बागुरा, ऊंदी नींआ बहुंदो नेई।

घर चिणना नऊंअ, फेरदी लाणू छीछअ।
पापी ऐऊ माणूओ, कदी ने छाड़णू पीछअ।

पींगरी शोलीए, तू जाणी गेठे।
रिभा रे संगणू, हामा ने माची मेटे।

आड़ू रे अंदलै, गोभीए छीनणे डलै।
रोई-हासीआ मिलणू, आपणी इजीए गलै।

राज बसारो, होतुअ लामी सेरी।
लांका मोही हणूएं, कुणी मोही जिन्दड़ी तेरी।

कोठी भीतरा का, भाटे मारी खणाशा।
कुंगू ढाले केसरा, साथी ढाले वीणए वासा।

नार त फणेऊटे, दशी शरण बागे।
ठारा हुलै जंड़े बलदा, बासती बाहंदे लागे।

फिरणू बेहने जए लागी जलाई।
बागे निकले दशीए, पेरै पोलड़ू लाई।

कोलै सुती फेन्दला, टुण्डू मुण्डू उलटाई।
नारअ सूतअ भोसलै, हिके हाथडू लाई।

गाड़ा दी घरटा, छेई लौ ढ़ालणू कोशा।
चोली हेरी नैणिएं, तेरे आऊंटू री आशा।

चीखा बोलू चेलिए, चऊंरी फोछुए वाणे।
दूर मैला हेरणौ, नील ने मैलदे खाणे।

खरी का शोभली, ढेढू परंदा री बाड़ी।
माणू ने लागदी, लागी लोड़ी देवा माड़ी।

धारा गाहे देहरू, देहरू गाईए पूजा।
म्हारे मने अऊका, देवा ने देवते बुझा।

पारले घरा का, पाई ती कुंगूए दुकी।
म्हारे घरा रे झगड़े, सारी नीसै ऊमरा मुकी।

नाला रे पात्थरा का, धारा दी चिणणी कोठी।
माणू नहीं अमरा, जगह डाणी सोठी।

घरा पोरुए सेरी दी, भाभीए चुंगे गुलाबा।
छींडे पाए मना दी, एथ के मलभा लागा।

आई ती फौजा, बेशी कोहल वालै।
दुःख दीने नैणिए, एवे के झूरणू तालै।

शाणै लाए दोहरे, शांगलू लाए केती।
तमे फिरा पाखलै, हामे थारे मना रे भेती।

धारा गाईयो देहरू, देहरू गाइए भुजा।
तेआ गणू संगणी, जुण मेरी मन की बुझा।

नाले ने बेशणू, नाला दी पले खावे।
उभो आए धारा ले, ठाण्डे पाणिए लोभे।

माघा री खीचड़ी, वाई ले चाणणी रेड़ी।
राची पड़ हांडणू, जोथ लेई बादले घेरी।

दूधा रे पारू, डाऐ से उछटे तीरे।
म्हारे तै गरतें, आपी निगरे फीरे।

झाला गाहे झालरू, झालरू गाहे सापा।
डाली डालीए हत्या, लागे लोड़ी मेरे आपा।

शीले नाले केलटी, जामू धारा री बूटी।
भली की नैणिए, मीठी जबानिए चुटी।

देऊआ आगे आरती, ठाकुरा आगे रागी।
सुती कुईओ ढोलणू, दसा री नदरा लागी।

सुनेओ सिऊणू, सिऊणू पिछुओ धागअ।
धागे री तौणिए, राजाअ घूमद लागअ।

गांगा री गंगऊटी, हरद्वारा री गरी।
कालके खरे ले, आज ने गणू मरी।

तुबी त माणुआ, हैली हैलीओ कालअ।
बेज बूतअ मूईए, कदी ने जांद पोलअ।

हेरणू शूणणू, दूधा र जेह लोटअ।
चित मना का विचड़, थूका बराबरी शोटअ।

घाटअ त हांडअ, माह किजो ने भीजें।
म्हारे चिडो हिकड़ू, तमे ने तड़ो भी धीजें।

कोहला रे आंगुआ, गाची दी भौंरा चिठअ।
किलोड़ी लड़ाहिओ, कि लोड़ी जबानी र मिठअ।

नेंणी ती बांठणा, घीआ माहूए कुण्डी।
आपू नाई मरिआ, पाछू डाई फिकरा जूण्डी।

धारटी लंघदा, डूबअ पाटू र पालअ।
एह ने पूछूअर, केती दिनाले चालअ।

केली केड़ूए, लामे लागे चूड़े बढेल।
रजी मेल देईए, एवै आए नाणेए घेल।

चीला री शाणीए, दीन त सर्पे घेरअ।
दूर पछेणिआ, ढीलअ हांडणू तेरअ।

डाली ती सनहरु, मुठी भीतरो भोगा।
देऊआ माटीए, हुअ लोड़ी म्हारअ संजोगा।

शाशु ती भगती, शोहरू गांगा र पाणी।
बदी लाणी माणू दी, जुणी बसेंड़ी ने जाणी।

चाणी बोला बणिआ, ईजी निकड़ो तंगे।
मेरअ बाण्ड ईजीए, पाणी दे बागरा संगे।

काकला बूटीए, तेरी शाणी आसा पराणी।
लोगा री बातो जे, कदी ने पाले दी पाणी।

पातली फूलकी, हरी बाली री भाजी।
रौंदे ने लागणू, बेरी हुआ बाहरी राजी।

चिला री शोली, जेंबी जालणी गेठे।
मना रे संगणू, रूझे काड़ी बादली हेठे।

ढेका री बान्दरी, होतुई मसरा खान्दी।
घणअ लागअ लालचू, भुरी नाई देवते लांदी।

खाटअ खाअ केमटू, मिठअ खाअ बोआ।
बुरा ने बोलणू, बूरा तेंही दया रहा।

छोटअ आसा शिमला, ऐता का ऊंदी दिल्ली।
काचें थारे बचना, शाह नीसअ अजी भी मिली।

चितरे चावरू दी, पूजा दी पाणी लोई।
बीज पला कांसे दी, पीतला पूच्छा ने कोई।

हिम्रं लागअ पाणी, छापरे लागी चलोई।
दुई भाइए जोड़ी, कुणी पापीए लोई।
काना रे केऊटू, बाही दी धागलू कुणा।
मेरे ने पछैणूई, पीऊणे धाटुए कुणा।
ऊंदे पलग्र निमला, ऊझे पली पलाणी।
ताते खाणे बटुरू, ठाण्डग्र जाहिरू पाणी।
नाले ने बैठणू, नाले खान्दे न्नाघा।
ऊबी ऐछे धारा लै, जिदी ठाण्डी बागरी लागा।
दलाशे बजारा दी, फेर फिरदी वाई।
शाबाश तमा लोगू लै, जुणी म्हारी इज़्ता डाई।
शीलीए चाउली, कदी न लगा धूपग्र।
पीऊणा तेरा मुँहटू, कैग्रा भरीए शुकग्र।
धारा गाहे बूटिए, दे लामै झलारे।
आगू करे हाथडू, मेरे टपणू पारे।
चाकुए छिऊंटी, शीऊं करा भरीऊं।
पोरू डेऊए घरालै, हारा खेलदी नीऊं।
बाबूग्रो घरा, जैण त पीपलो पाचा।
फेरदी सेरी जैं, मांझे भेड़िओ थाचा।
कुँगशे कोठिए, लाहुरी लाणू शाणग्र।
एक झुरी नीणी साऊगी, दूजी संगे धर्मा लाणग्र।
चितरो चादरू, बुणग्र लाहुली बोटे।
गप ती मारणी, कातके धेलै छोटे।
नाले बराहटू, धारै लूदलू बाना।
तमे हंदी बुढली, हामै भर जुबाना।
धाना माहीं काऊणी, शरे डेऊई बररे।
भर जुग्रानिए, पेऊकै रही घरे।
संऊई माण्डीए, पधरी म्हारी सगेता।
दाणे पाणी र रिज़का, म्हारे किलै एछणु ऐता।
तेरी मेरी झूरीए, ग्रारा पारा की बाजी।
ऐसा भाई धारा री, फूल लोड़ी भाबरी राजी।
साना सानिए, सान पड़ी ती नासा।
कूंगू ढाले केसरा, सात ढाले बीण ए बासा।
दूधा रे पारू दी, घणी लागी पलूई।
थारे ग्राए पाहुणे, बागे डाए मांदरी छेई।
तेरे ग्राऊंटू दी, पांजा पैलिए बाई।
झुरी ती शोभली, मने डाई भीणका लाई।